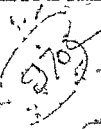


प्रश्नोत्तरः तत्त्वबोध ।



मिलनेदा पा

• जैन श्रौताधरो तरापर्या समा ।

११५ किनिह छोट,

बलुकेत ।

* प्रस्तावना *

॥ श्री जितावाम् । श्रीसद्गुरुभ्योनमः ॥

इस सतार मयी महा अरण्य में अनादि-काल में जीव श्रा-
 जित प्रह्वित मार्ग से विमुक्त होके कुपुत्र हीणा चारियों की
 सगाति से कुपोगे अङ्गीकार कर परिभण कर रहा है, नरक
 निगोदादि के अनन्तान वदु लों का उप भोगी हो अपनी पवित्रा
 त्मा को बाप कर्मरूप अशुद्धि से अपवित्र करता है, ज्ञान दर्शन
 चारिशादि निजगुणों को विस्तार पञ्च इंद्रियों की विषय विकारों
 में लित होके उ दे ही अपना कल्प्य समझ रहा है, जैसे कोई
 मनुष्य मदरा पान के गोशे में पागल होके अपने अन्धे र प्राशा-
 दों की सुख मर्षा को छोड़ पहा पुन ध भूमिको ही सुख स-
 द्या समझ किमी चतुर पुश्य का कडना न मान वहीं सोटनी
 अपना परम काल्य जानता है जैसे ही जीव माह मिच्छाल
 मयी नशकी मगराल में मतप्राला धन जिन कथित सुख मर्षा
 को छोड़ इंद्रियों के बाप भोगादि मर्षा को ही सुख मर्षा
 जान उसही में रहसता रहना असावश्यक काल्य समझता
 है, यदि मया ज्ञान अन्ध नीर माग म चक्षुने सन्ने महाज्जुषी
 शुद्ध निःस्पृही मोक्ष मार्ग बतावे तो उसही उन्ही महात्माओं
 की न मान कर उन निगारम्भी निष्परिग्रहों की निष्ठा करने को
 सत्पर बूने रहत है, कि तु जिन कथित मार्ग क्या है इनको पहचान
 ने की कोमिष्ट नहीं करते, अपनी मार्ग जिन कथित मार्ग से एकदम
 विरट्ट है इमनिष् चतुगति सतार अटरी में भ्रमण करने वालों
 को मुक्ति मार्ग अच्छा नहीं लगता है यदि कभी शीतराज मार्ग
 जानने की कोई हठ, कर्मों जीव इच्छा करे तो- हानाचारी

कुगुरु कुं दृष्टान्त साक भौम भोंकों को बहका देते हैं, परतु
 न्यायी और विद्वान गुरु तो मत्वा सत्यका निर्णय किये बिना
 नहीं रहते, जिन इष्ट कर्मा को समार प सुखों से प्रदोष हो
 गइ है वे समझती तो जात है कि जितने जितने साधन योगों
 का लाग किये तो धर्म और भागार ररता तो अधर्म है, जिन
 कार्य को तापु मुनिराम सावध जनके दागी है उत कार्य
 को करन कराने और अनुमोदने में पाप है, जिन भासा में
 प्रम भासा बाहर अयम अदना ही सम्पक्त है, जिन कार्य
 को जिन तथा मुनी भासा देते गही, और अनुमोदना भी नहीं
 करते तथा अनुमोदना करने से साधुको प्रायश्चित्त शक्ति वा
 वही कार्य गृहस्थ करे करावे और भसा जाने तो एकान्त
 पाप है, बल्क यही जिन भाग की कुर्मी है इसे जा अच्छी तर
 से जान लिया है उमी कनिष्ठन्य मवचन अर्थ ही परम धर्म है ।
 सद्गुरुओं में कृपा पूर्वक मध्य शीघा को समार मुपी समुद्र
 में तैरने के सिन् गिनागवापुमार अनेक ग्रन्थ श्रमिता से बना
 कि उपकार किया है इसके सिन् सन् महागुरुओं की जितना
 प्रवधादि दिया जाय सो, घोडा है निदक साक, मधे ही एने
 जितान्द्रियों की जिन दा करो परतु जो समार मार्ग से विगुल
 और मोक्ष मार्ग से सन्मुख विहजन है सो ता उनका हृदय से
 भादर करते ह् स्वामी श्री भोखनुनी के शतुर्थ पाट श्रीमदुजया
 कार्य (श्री जीतममनी स्वामी नाथ) महा मर्माधिक और
 शक्ति वेता हुए हैं उन्हीं में भगवती बादि कई सूत्रों की जोड
 दास प्रथम शरभ भाषा में बना के जिन मधनों की यथा तटप
 मगट किया है तथा अनेक ग्रन्थ बनाये हैं जि ह पदन पुनः

में न्यायाश्रयियों को तत्परा तत्प का संपृष्ट ज्ञान होता है, यह
दित शिस्तावली "प्रश्नोत्तर तत्वबोध,, स्वामी काही घनाया हुआ है

॥ प्रश्नोत्तर तत्वबोध बनने का कारण ॥

सन् १९३३ की नाम में अनीमगज (मकमुदाबाद) शहर
से यावृ फाल्गुमजी १ प्रश्न पत्रिका ५२ दोहा में बनाके साठ
शो के श्रावकों को स्वामी श्री जीतमलमी महाराज से मालूम
करने को भेजा जिमकी नकल—

॥ प्रश्न पत्रिका ॥

॥ श्री जिनाचनम ॥

॥ दोहा ॥

चरण कमल जिन राज का, जामे मुज मन लीन ।
मधु कर जिहां गुंजत रहे, ज्ञाना मृत रसपीन ॥१॥
नाभेयादिक जिनेश्वरा, तीर्थकर त्रिवीश ।
गणवर पाठक साधु पद, ध्यावत विश्वावीश ॥२॥
जिनवर भाषित शुद्ध नय, आगम उदवि श्रपार ।
भ्रमत इण कलि काल में जिन पनिमा आधार ॥३॥
सार्ग निवाशी देवगण, बलि पाताल कुमार ।
मायत जिन प्रतिमा भणी, नित प्रति करत जुहारा ॥४॥
एहवी प्रतिमा जिन तरणी, प्रणमी तेहना पाय ।
पत्र लिख्य प्रतिप्रेग सुं, सुनियर नां गुण गाय ॥५॥

क्रोध लोभ मद मोह सबे, त्यागी विषय विकार ।
 जीत मल महाराज कूं, नमत सकल नरनार ॥६॥
 दोष बँयालीश टाल ते, लेते श्रुद्ध आधार ।
 भविजन कृ प्रति बोधता, विचरो धर्म मजार ॥७॥

॥ सौरा ॥

तौन करुण गिर धार, जीते वावीश परि सह ।
 जपते दिल नवदार, सुद्ध करि संजम निर बहे ८

॥ दोहा ॥

सतावीश गुण करी, पालो निज आचार ।
 पच महाव्रत पालता, एहवा तुम श्रगुगार ॥९॥
 निर जित मद उनमाद पणो, वर्जित विषय विकार ।
 तर्जित कर्मादिक अशुभ, गर्जित नाग उदार १०।
 सहर लाडगुं आति भलो, विचरो तिहा धर नेह ।
 अप्रति बव विहार करी, बैठा सम्बर गेह ॥ ११ ॥
 तुम गुण गग मकरंद से, भविजन भमर लोभाय ।
 देश विदेशे मानवा, कर जोडी गुण गाय ॥१२॥
 में पिण गुण श्रवणे सुणी, भेटण की मन चाय ।
 ते दिन सफल गीणिसहू, बंदी तुम रा पाय ॥१३॥
 कर्म ईधन कूं जालका, प्रत्यक्ष अमि समान ।
 इन्द्रिय पांचु बश करी, एहवा तप की खान ॥१४॥

गुण सगला तुम अङ्ग में, दीखत है प्रत्यक्ष ।
 आगम अर्थ विचार के, किम तागो डक पक्ष ॥१५॥
 पक्ष पक्ष कोइ मत करो, ज्ञान दृष्टि मनलाय ।
 जिनवर प्रतिमा देखता, दुःख दोहग टलजाय ॥१६॥
 च्यार निक्षेपा जिन कहा, भार थापना नाम ।
 सप्त नये करी देखल्यो, वरणन ठामों ठाम ॥ १७ ॥
 अम्बह श्रेणिक राय तिम, रावण प्रमुख अनेक ।
 विवध पर भक्ति करी, पाभ्या धर्म विवेक ॥१८॥
 पचम् - अगे भापियो, प्रगट पणों अधिकार- ।
 सूर्याभे जिन वेदिया, राय प्रश्रेणी मजार ॥ १९ ॥
 विजय देवता ये करी, जिन पूजा जिन राज ।
 पक्ष पात कृ छोडके, सारा आतम काज ॥ २० ॥
 क्खे ज्ञाता अङ्ग में, दोपदी पांडर नार- ।
 मन बचकाया पश करी, पूज्या जिन इकतार ॥२१॥
 जंघा विद्या धारणा, सुनिवर गुण की खान- ।
 ते पिण प्रतिमां वदिता, पचम् अङ्ग वसान ॥२२॥
 जिन प्रतिमां जिन सारखी, भाग्यो श्री महावीर ।
 कोइ शङ्का मत आण ज्यो, जिम पाप्मो भवतीर ॥२३॥
 जिन पर मत स्यादाद है, मत जाणो करी एक ।
 दया दान मन धारल्यो, जइ आवि विवेक ॥२४॥

जीव दया पाल्या थकां, निश्चै हाय उपगार ।
 दया धर्म को मूल है, एहयो आगम सार ॥२५॥
 घात करता जीव की, छोडावे कोई जाय ।
 अभय दान तेह नै कह्यो, आगम में जिन राय ॥२६॥
 ज्यो न छोडावो जीव कू, तो अनु कपा नाय ।
 अनु कपा बिन जीव कू, समकित पुष्टि न थाय ॥२७॥
 गोशालो जलता थका, जिनजी दियो विचार ।
 शीतल लेस्याये करी, तेजु लेस्या वार ॥ २८-॥
 ज्याने कहता चूकिया, ते तो मिथ्या वात ।
 कल्पातीत स्वभाव है, तीन लोक के नाथ ॥२९॥
 नेम कुँवर तोरण चढयां, देखी जीव विनाश ।
 अनु कपा मन लायके, छोडाई प्रभु पाश ॥३०॥
 आप बडे असगार हो, प्रिय ए मोटी खोट ।
 ज्यो नवि जीव दया करो, बधे पाप शिर पाँट ॥३१॥
 पच अधिक चालीशतो, कहा सूत्र जिन राय ।
 द्वातिश तुम्ह मानता, कृण हेतु के न्याय ॥ ३२-॥
 भाखा नहिं सूत्र में सहु, आगम के नाम ।
 ते वत्तीशां बीच है, देखो चित करी ठाँग ॥ ३३ ॥
 साँचा वत्तीश मानता, और न मागों साँच ।
 के कोइ प्रगटयो ज्ञान तुम्ह, अथवा मन की साँच ॥३४॥

सत्य परुषणा ज्यो करे, तो मानो महाराज । गहन
 अर्थ आगम तथा, भाख्या श्री जिन राज ॥३५॥
 मुखपती मुख वावता, कुण सूत्रे अनुसार ।
 मनकी भ्रमता मिटी नहिं, ऐर विपम प्रकार ॥३६॥
 स्तवसमाके संजोग सुं, उपजत जीव असख्य ।
 जीव समूर्च्छिम इन्द्रियन, यामै नहिं को वक ॥३७॥
 गण धर गौतम स्वाम कं, मिया देवी कह्यो एम ।
 मुख बांधो वस्त्रे करी, गध न आवै जेम ॥ ३८ ॥
 ज्यो पहलां वंधी हुंती, बलि वंधन किम होय ।
 एह व्यतिकार तुम जाण जो, सूत्र विपाके जोथ ॥३९॥
 जम्मा छिंका कारणौ, मुख दाके मुनि राय ।
 दशवै कालिक सूत्र में, देखो मन चितलाय ॥४०॥
 सूत्र सभे तुम देखल्यो, वधण का नहिं पाठ ।
 भगवती ज्ञाता आदिमें, साख सूत्र की आठ ॥४१॥
 इत्यादिक सूत्रा तथा, मानो नहिं वचन ।
 आपं मते नहिं मानता, करत्यों लाख जतन ॥४२॥
 लिख्या अजीमगंज सहर सुं, पत्र अधिक उच्छरंग ।
 खमत खामशा मान ज्यो, करि तीन करण इक सग ४३
 मुनि गुण अति सुंज अंतपथी, कैसै लिखुं चर्णाय ।
 जैसे जल सब उदाधिको, घटं विच नहिं समायै ॥४४॥

कुशल खेम वरतै तिहा, धर्म थकी जय कार ।
 इहा पिण सु गुरु पसाय थी, आणद हसप अपार । ४५।
 भाक्ति पत्र भाँने लिख्यो, धरज्यो नित्त अधिकाय ।
 अधिको श्रोछो ज्यो हुवे, ते खम ज्यो मुनिराय । ४६।
 लिखज्यो उत्तर एह नो, मत धरज्यो मन रीश ।
 मुज मति सारुमें लिख्यो, वरज्यो मन सु जगीश ४७
 एहवि परुपणा ज्यो करो, तो होय लाभ अपार ।
 सुग्ध जीव ससार का, उतरे पैले पार ॥ ४८ ॥
 देखो बुटे रायजी, तिम बलि आतम राम ।
 त्यागी मन भ्रम आपणो, सारथा भविजन काम ४९
 थावो ज्यो तुम एहवा, 'आगम अर्थ विचार ।
 मारवाड दुदाड में, बहु जन पामे पार ॥ ५० ॥
 सकल सङ्ग आवक सहु, वाँची धर ज्यो प्रीत ।
 उत्तर पाछा अपाव ज्यो, ए पडित जन रीत । ५१।
 मुनिवर ना गुण गावता, होता चित्त आराम ।
 मन तन कपट तजी करी, वदत कालूगम ॥ ५२ ॥

॥ कलश ॥

इम करी रचना अतिही सुदर, वाचता मन उल्लसे ।
 देवादि देवतिलोय स्वामी अतर जामी मन वशे ॥
 सबत उगणी सँ साल तृतीस माग आश्विन सुद पखी
 मुनि विनय चंद पगाय करीने, गोपी चंद इम उपदिसे

पूर्वोक्त मन्त्रपात्रका अजीमगज से सादर्यो जाई सो वहाँ के अ
वाकों ने महाराज से आज्ञा करतिय स्वामी ने हित शिक्षावसी
मन्त्रोत्तर तत्वबोध बनाया जिमको श्रावकों ने कण्ठाय धार के
लिखाकर अजीमगज पास वाखुरामजी के पास भेजा था ।

यह मन्त्रोत्तर तत्वबोध सुनो के ममाणो सहित जिन
मन्त्रीत बचनों को यहाँ तब बताने वाला और आतपा-
र्यों भण्यों को लाभ दायक है इसको वाचने से निम्नलिखी हस्त
कर्मों जोष जिन मारग को सहज में अच्छा तरह जान कर
यथा सक्ति प्रत्येकलक्षण बद्रीकार करके अपनी आरपा का
कल्याण कर सकत है; वयो राग द्वेष रहित धीतराग कथित
भाग है जिन आतमार्यों को पुद्गलोक सुखों से भरुचि है
उन्हो के लिए यह ग्रन्थ मानू अमृत समान भिष्ट है; इस से
संकेतनेके दोहा आगे श्री० खतसो जीवराजने मुम्बई में
एक पुस्तक में छपाए थे परतु सम्पूर्ण ग्रन्थ यह आजतक
छपा नहीं; अहमद नगर जयपुर में निम्न लिखित श्रावकों न
आरपा जिहो के नाम ।

मणेशीसासनी सीधद,

गुणावचन्द लूणया,

चन्दनमसजी, दूगद,

जोरावरमलजी दाठिया,

मुजानमसजी साँद,

नायसासजा सराधगी,

उपरोक्त पाँचो श्रावकों के पास से पत्र लेकर मने, अग्रह
करके सिला और सर्व साधारण को लाभ पाहचने के निमित्त
सरी सपु बुद्धि समाज बुद्ध करके छपाया है, पाँच का अन्तर या
सपु दोषादि मात्रा की गलती रहा होय उसका मुझे धारदार
निम्नलिखित दुकदं है, पाण्डित और गुणी जनों से मरा यही प्रार्थना
है कि कोई अष्टुद्धि रही हो उसके लिए क्षमा चाहताह ।

आप का हितच्छ और सुखदाना का दास

श्री० जोहरि० गुणावचन्द लूणया जयपुर

॥ प्रश्नोत्तर-तत्त्वबोध ॥

॥ दोहा ॥

नमू-देव श्रिहन्त नित, जिनाधिपति जिनराय ।
 द्वादश गुणो सहित जे, वन्दू मन वच काय ॥१॥
 नमू सिद्ध गुण अष्ट युत, श्राचार्य मुनिराज ।
 गुन पट तीश सयुक्तजे, प्रणमू भव दवि पात्र ॥२॥
 प्रणमू फुन उज्झाय प्रति, गुण पणवीश उदार ।
 नमू सर्व साधु निमल, सप्तमीश गुन सार ॥३॥
 द्वादश अठ पटतीन फुन, बलि पणवीश प्रगट्ट ।
 सप्तमीश ये सर्वही, गुणर इकशय अट्ट ॥४॥
 नवकरवाली ना जिके, मिशिया-जगति मकार ।
 एरु एक जे गुण तगौ, इरु इक मिशिया सार ॥५॥
 इरुगो अठगुण सहित ए, परमेष्ठी पद पच ।
 तैतो भाय नित्तेप हे, इ प्रणमू तज सच ॥६॥
 ए सहुने-प्रणमी करी, सखर समय रश सार ।
 तत्व बोव अविशो उ तर, आरु अधिक उदार ॥७॥

॥ अथ प्रथम विजयसुर्याभाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे जे विजय सुर, वलि सुर्याभ विचार ।
 प्रतिमानी पूजा करी, द्विध तसु उत्तर सार ॥१॥
 प्रतिमां पूजी विजय सुर, जीव अनन्ती वार ।
 विजय पणै सहु ऊपना, पाम्या नहि भव पार ॥२॥
 शक्र सामानिक सगमो, देवलोक स्थित हेत ।
 पूज जिन प्रतिमादिते, राज बैसतां तेय ॥३॥
 तिम हिज सुर्याभादि सुर, राज बैसता तेह ।
 प्रतिमा पूतलियादि प्रति, बहु वाना पूजह ॥४॥
 सुर्याभे सुर लोकनी, स्थितिनां वशथी जाण ।
 पूजा जिन प्रतिमां तर्णी, कीवी कही पिछाण ॥५॥
 वृत्ति उंच निर्युक्तनी, तेह विपै एख्यात ।
 आचार्य गध हस्त कृत, छे तिहा बहु अवदात ॥६॥
 मित्य्याती ॥ समकती, विमान अवपति देव ।
 देवलोकनी स्थित हुती, प्रतिमादि पूजेव ॥७॥
 समदृष्टी पूजे तिमज, मित्य्याती पूजत ।
 देवलोकनी स्थित वशात्, पिण्य धर्म कार्य नहीं हुन्त

सुर्याभे जिन वन्दिया, प्रभु पट वच आख्यात ।
 एह पुराण आचार तुम्ह, जीत आचार सुजात ॥६॥
 यह तुम्हारा कार्य छे, बलि तुम्ह करवा योग ।
 ए तुम्हने आचारण छे, हे सुम्ह आण आरोग ॥१०॥
 नाटकनी पृच्छा करी, तिहा आदर न दियो-साम ।
 मनमें भलो न जाणियो, प्रगट पाठमें ताम ॥११॥
 बलि मौन रासी प्रभु, देवो पाठ प्रसिद्ध ।
 जे भाव निक्षेपे आगले, नाटक आण न दिद्ध ॥१२॥
 बलि मनमें भलो न जाणियो, ए पिण पाठ मभारत
 आज्ञा विन नहिं वर्म पुराय, देवो आंख उधार ॥१३॥
 तो तास स्थापन आवले, आज्ञा किम दे बीर ।
 यह न्यायछे पाधरो, धारो पर चित धीर ॥१४॥

॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय द्रोपदी अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे समकित छता, दुपदसुता अवलोय ।
 प्रतिमानी पूजा करी, तसु उत्तर दिवै जोय ॥१॥
 वृत्ति उंघ निर्युक्तनी, गवहस्त कृत माहि ।
 जे इक पुत्र थया पछे, द्रोपदी समकित पाय ॥२॥

पूर्व कृत 'निदानं करि, प्रेरी छती सु श्राय ।
 पात्र पाण्डव त्या द्रौपदी, कह्यो सुज्ञाता मांय ॥२॥
 तीव्र भोग अभिलाष तसु, निदानं विन पूरेह ।
 समकित किम पामैतिका, देखो वर चित देह ॥४॥
 दशां श्रुत स्कन्ध मूत्रमें, केइक जेह निदान ।
 पूर्ण्यां समाकित नवि लहे, दुर्लभ वोधी कह्या जान ५
 निदानं दोय 'प्रकार है, न्याय थकी अवलोष ।
 द्रव्य'प्रते धुर भेदहै, भवे प्रत्येय फुन जोय ॥६॥
 निदानं द्रव्य प्रत्ये तणा, दोय भद पहिछाण ।
 प्रथम भेद जे मदरश, द्वितीय तीव्र रत्न जाण ॥७॥
 द्रव्य प्रत्येय मन्दरश तणु, पून्ना थकांजु तेह ।
 समाकित चारित'बेहु लहे, द्रौपदी नीपरे एह ॥८॥
 द्रव्य प्रते तीव्रश तणों, समाकित चर्गा न पाय ।
 दशा श्रुतस्कन्ध विपैजवै, दुर्लभ वोविया थाय ॥९॥
 भव प्रत्येय ना भेद वे, धुर'मदरशनु होय ।
 द्वितीय तीव्र शशनु वली, न्याय विचारी जोय ॥१०॥
 भव प्रत्येय मद रश तणों, समाकित प्रति पामेह ।
 पिण चारित पामे नहीं, बामुदेव जिम यह ॥११॥
 भव प्रत्येय तीव्रश तणा, समाकित नहिं पामंत ।
 वलिं चारित पामे नहीं, ब्रह्मदत्त जिम हुन्त ॥१२॥

द्रव्य प्रत्येयने भव प्रत्येय, मद तीव्रश ख्यात ।
 तेह न्यायधी सभवे, वलि जागो जगनाथ ॥१३॥
 ते माटै ये द्रोपदी, निदान विन पूगेह ।
 प्रतिगां पूजा तिण सगो, समकित किम पामेह ॥१४॥
 ज्ञाता वृत्ती विपे कह्यु, येऊ वाचना माहि ।
 द्रोपदी जिन प्रतिमा तर्णी, श्रचा कीधी ताहि ॥१५॥
 दीसै ये तो हिज इम कछो, तेह वृत्तौ माहि ।
 नमुंथुण नुं पाठ त्या, आख्यो दीसै नाहि ॥१६॥

॥ पार्त्तिका ॥

कोई कहै द्रोपदी समकित धारणी प्रतिमा ययू पूजा । तेह
 नु उत्तर ॥ संवनिर्मुक्ती ग्रन्थने अभिप्राय द्रोपदी प्रतिमा
 पूजा तिण बेल्पा सम्यक्त धारणी नहीं ते देखाडे छै, “द्वय
 मि जिणशरा” इति व्याख्या ॥ उध निर्युक्त ख्याएपेप ॥
 द्रव्यानिद्रो परिग्रहितानि चैयानि किं सम्यगदृष्टीर्न सभावितानि
 इति कस्मात् द्रव्यानिद्रो मित्यवाहृतीत्वात् ॥ यद्यत्तर्हि दिग
 म्बर सवधीनी चैयानि किं सम्यक दृष्टी न सभावितानि एत
 रसस यद्ये तत्तस्य तर्हि स्वर्गलोकेषु मास्वतानि चैयानि सूर्या
 भाद्यादवा. सम्यक दृष्टय मपुज्यते तथैतानि सगमवत् अभव्य
 देवा. मदीय मिते बहुमानात् मपुज्यति पूर्वो पर विरद्ध न
 स्यात् ननुमुर्षा भाद्यादेषा तत्कल्पस्थिति समानुरोध व भव
 एव विरुद्धे न सभवति यद्येव तर्हि द्रोपद्या सम्यक्त धारयथा
 यानि चैयानि नमस्कृतानि किं द्रव्यानिद्रो परिग्रहितानि न

भवतीत्याह द्रौपदी । न सम्पन्नत्व धारणी स्यात् ॥ उधनियुक्तवा-
 इत्युक्त ॥ इत्थी जेण सघट्ट तिरिह तिवहेण बजा ए साहु इति
 रचनात् ॥ स्त्री जनस्पर्शो त्रिरिध* श्रावधेन माधृता वर्जनीय
 माधोश्च अकल्पनीय कर्माधारत सम्पत्तमानात् द्रौपदी भाग
 गेपु श्रूयते ॥ नोमहत्यय परामुमई ॥ लामहस्तेन परामृशति
 परामार्जयतीत्यर्थे तत् परामार्जनेन जिनस्पर्शो जात जिनस्य
 स्त्री जनस्पर्शेन जाशतनास्यात् आशानिनात्मसम्पत्तभाव भवत.
 एवं द्रौपदी । न सम्पन्नत्व धारणी समाच्यते पुन उधनियुक्ति
 चिरतन टांकायां गंधहस्य'चार्येण उक्त द्रौपद्या नृप पुत्रिका
 निदान कृति भर्तारि पंचस्पेच्छता निदान भोजितघान जातुक
 पुत्र', पुन. पश्चात्माधू सकाशमाप्य प्रवर सम्पन्नत्व मार्गो
 धरते ॥ इति ॥

॥ एहनु अर्थ वार्त्तिका करी कहै छै ॥

इहा कथी द्रव्य सिद्धी परिशुहीत चैस प्रतिमा ते सु
 सम्पक् दृष्टी संभावित नहीं ते विण कारण यकी इमो कोई
 मश पूछे तेहनु उत्तर द्रव्य सिद्धी मिथ्या दृष्टी छै त कारण
 यकी जो इम छै तो दिगम्बर संघ'पी चैस प्रतिमा स्यु सम्पक्
 दृष्टी संभावित नहीं ए सख जो ए मख तो स्वर्ग लोक नें विपे
 साखता चैस सुर्गभावि देवता समदृष्टी पूजते माटि ये पूर्वापर
 विरुद्ध नहीं हुबे काइ एहवातरुं कीपे छैन दिव पहनु उत्तर
 कहै छै, सूर्यभावि देव स्वर्ग लोक नें विपे साखता चैस पूज
 ते बल्प देव लोक'नी स्थित यत अनुगेध यकी इण कारण
 यकी ज विरुद्ध नहीं हुबे जो इम छै तो द्रौपदी समकित धारी
 चैस नें नमस्कार कियो ते स्यु द्रव्य-सिद्धी परिशुहीत न हुई

काई एहवीतर्क कीपै छैतै । हवै एहनुं उत्तर कहै छै । द्रौपदी समोक्त धारणा न हुइ इम कहै छै । वसिष्ठ पृच्छथो द्रौपदी सम कित धारणी किम नहीं तेनु उत्तर उदनिर्युक्त में विषै इस कथा स्त्रीजन नै स्पर्श साधु नै त्रीविध २ वरजवो साधु नै अकल्पनीय कर्म आचरवाधकी समकित तु अभाव हुवै ते कारण यकी साधु नै स्त्री जननु स्पर्श त्रीविध २ वरजवू द्रौपदी आगम नै तर्प माभली येछै " भोमहस्त परामुसई " । सामहस्त करिके फरसे पूज इत्यर्थ, त पूजवै करी जिननु स्पर्श हुवै जिनने स्त्री जन स्पर्श वै करी अशातना हुवै आशातना करिवै करी समकिततु अभाव इण कारण यकी द्रौपदी सम कित धारणी न सभावये, तसि उद निर्युक्तनी चिरतन टीका नै विषै ग बहस्त आचार्य कथो द्रौपदी तृप पुत्री निहा र्णानी करण हारी तिणै भर्तार पैच नै वरी । महाशो भोगशी गेक पुत्र यथा पछ साधु समीप समकित पार्थी एहवो उद निर्युक्तीनी टीका नै । वष गधहस्त आचार्य वद्या ते मित्पत्नना वस यकी पुष्पादिकरी प्रतिमा पूजी ।

॥ अथ तृतीय निक्षेपा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वावीज जिन, तसु मुनि प्रतिक्रमणेह ।
 किस्सुं करै चौबीस्यो, द्वितीय आवश्यक जेह । १।
 तसु कहिये महाविदेहना, मुनि प्रतिक्रमण विपेह ।
 द्वितीय आवश्यक स्यू कौ, न्याय विचारी लेह । २।

नहीं तिहां अवशर्पणी, उत्सर्पणी पिण नाहि ।
 ते मटि नहि पट अरा, सम अद्धा कहि वाहि ॥३॥
 तिहां अनन्ता शिवगया, जासे मुक्ति अनन्त ।
 मेल नहीं चौबीस नु, देखोजी बुद्धिवन्त ॥४॥
 इक इक विजय विपे वली, एक एक जिनराज ।
 वर्तमान काले हुवै, उत्कृष्ट पणै समाज ॥५॥
 हिव ते क्षेत्र विदह ना, जिनथया सिद्ध अनन्त ।
 तसु बाद्यां चौबीसनीं, संख्या नथी रहन्त ॥६॥
 यासे सिद्ध अनन्त जिन, तसु बंदे जे कोय ।
 तो पिण जिन चौबीस नीं, संख्या न रहै सोय ॥७॥
 विजय विपे ज्यो वर्त्तता, बंदे इक जिन गय ।
 तो पिण जे चौबीसथो, किण विव कहिये त्हाया ॥८॥
 विदेह क्षेत्रनां मुनि करे, द्वितीय आश्रयक जेह ।
 विचला जिन वा बीसना, मुनि पिण तिम हिज करेह ॥९॥
 चे टक नृ तसु नियम नहीं, पिण ज्यो किणहिकवार ।
 पडिकमणा में स्युं करे, द्वितीय आश्रयक सार ॥१०॥
 ज्ञाता अध्ययने पत्र में, शैलक ऋषिनां पाय ।
 पमक पडिकमणा करत, बाद्या आख्या ताय ॥११॥
 ते मटि जे जिन हुयै, तेह तर्णो ले नाम ।
 द्वितीय आश्रयक नु तदानाम उक्तिता ताम ॥१२॥

जिन चौबीस तर्कों-जिहा, नियम नहीं छे ताम ।
 तिण सु चौबीस्था तर्कों, स्वान उत्कीर्तन नाम ॥१३॥
 अनुयोग द्वार विषे अमल, आवश्यक पट माय ।
 अर्थ तणा अधिकारपट, आख्या श्री जिन राय ।१४।
 द्वितीय आवश्यक ने विषे, उत्कीर्तन अरयात ।
 कह्यु अर्थ अविचार ये, जिन गुन नाम विख्याता ।१५।
 विदेह क्षेत्र मे मुनि तणे, द्वितीय आवश्यक जान ।
 स्व स्व जिन गुन नाए ते, उत्कीर्तन अभिवान ।१६।
 जेह विजय नहीं जिन तदा, द्वितीय आवश्यक माहि ।
 पूर्व जिन गुन नाम ते, इगो सभयै साहि ॥१७॥
 विनता जिन चौबीसना, मुनि ने स्वजिन ताम ।
 उत्कीर्तन अभिवान तसु, द्वितीय आवश्यक ताम ।१८।
 धुरजिनना मुनि ले तिमज, स्वजिन गुन फुन नाम ।
 द्वितीय आवश्यक सभयै, उत्कीर्तन अभिगम ॥१९॥
 वा धुर जिनना मुनि तण, चौबीस्यो ज्यो होय ।
 तो गत चौबीसी हुई, जाण नेवली सोय ॥२०॥
 यथा नहीं चौबीस जिन, तसु वारे अवलोय ।
 द्वितीय आवश्यक ने विषे, चौबीस्यो किम होय ।२१।
 चौबीसमा आशण-सर्णी, तेहतर्णा अपेक्षाय ।
 आशु के चौबीस्यो द्वितीय आवश्यक माय ॥२२॥

द्वितीय आवश्यक नां कहा, उभयनाम अवलोय ।
 उत्कीर्तन चौवीसथो, तसु हेतु हिव जोय ॥२३॥
 पचम् अङ्गे धुरकह्युं, इन्द्रभृती सुप्रसिद्ध ।
 वृत्ति विषे कह्यो नाम ये, मात पिता नूदिद्ध ॥२४॥
 गौतम गौत्र वारि तसुं, गौतम नाम कहाय ।
 उत्तराध्ययन तेवीस में, गाथा छट्टी मांय ॥२५॥
 तिम जिनवर चौवीसमां, तसुं वारि अवलोय ।
 गुणो नाम चौवीस जिन, ते चौवीसथो होय ॥२६॥
 ते चौवीसथा नै विषे, उत्कीर्तन अभिराम ।
 अर्थ तणां अविचारके, पिण मुख्य चौवीसथो नांम२७
 विदेह क्षेत्र में बीस जिन, तसुं मुनि स्वजिन नांम ।
 अर्थ तणा अधिकार करि, ते उत्कीर्तन ताम ॥२८॥
 सूत्र उववाई नै विषे, तपनां द्वादश भेद ।
 तृतीय भेद भिक्षाचरी, वारु नाम सवेद ॥२९॥
 समवायंग विषे कहा, वारि भेद अभिराम ।
 भिक्षाचरी नै स्थान जे, वृत्ति सत्तप सुनांग ॥३०॥
 भिक्षाचरीनां नाम बे, द्वितीय आवश्यक तेम ।
 उत्कीर्तन चौवीसथो, उभय नाम तसु एम ॥३१॥
 नवमां जिनना नांम बे, सुविध अने पुफदन्त ।
 आख्या लीगसभे प्रगट, देखोजी बुद्धिवन्त ॥३२॥

पुष्प सरिता दन्त-तसु, पुष्प दन्त अभिराम ।
 इम अर्थ तगां अविकार करि, उत्कीर्त्तन पिण्ण नाम ३३
 कृष्ण अर्ने वलभद्र नौ, केशव राम आख्यात ।
 उत्तराध्ययन बावीसमें, तिम टितीय आवश्यक स्याता ३४
 किहा च्यार महा व्रत कहा, तास कहा विहु याम ।
 उत्तराध्ययन तेवीस में, केशी मुनि गुण धाम ॥३५॥
 द्वितीय आवश्यकनां तिमज, उभय नाम अवलोय ।
 उत्कीर्त्तन चौबीस्यो, सहभावे जिन जोय ॥३६॥
 चौबीसम जिननां मुनी, करि चौबीस्यो तांम ।
 विदेह तेवीस तणा मुनि, उत्कीर्त्तन जिन नाम ॥३७॥
 मुक्त ते भ्यासे यहवो, बारू न्याय विचार ।
 वलि केवली जे वदे, तेहिज सत्य उदार ॥३८॥
 भाव निक्षेपे भर्त्तनी, चौबीसी वर्तमान ।
 पाठ वदे बहु ठाम छै, लोगम मांदि सुजान ॥३९॥
 भाव निक्षेपे ऐसवत, चौबीसी वर्तमान ।
 पाठ वदे बहु ठाम छै, समवायिगे जान ॥४०॥
 चौबीसी भरत ऐसवत, अनागत जिन नाम ।
 द्रव्य निक्षेपो तुर्य अङ्ग, वदे पाठ न तांम ॥४१॥
 अष्ट अर्ने चालीश ना, वर्तमान जिन नाम ।
 भाव निक्षेपो ते भर्त्तनी, पाठ वदे बहु अंम ॥४२॥

अष्ट अने चालीसना, अनागत जिन नाम ।
 द्रव्य निक्षेपो ते भर्गी, वदे ठाट्या साम ॥४३॥
 द्रव्य निक्षेपै यह निज, गणवर वद्या नाहि ।
 तो चौबीसो करता छतां, द्रव्य जिन किम वदाहि ॥४४॥
 तीर्थकर घर में छता, द्रव्य निक्षेप जेह ।
 तेहने मुनि नदें नहीं, तुम्ह लेख पिण तेह ॥४५॥
 तो होणहार जिनघर भर्गी, चौबीसवा पिपेह ।
 मुनिवर किम वदें तसु, न्याय विचारी लेह ॥४६॥
 बलि कह्यो, अनुयोग द्वार में, जे आवश्यक नू जाण ।
 होर्ये पिण नययो हजी, ते द्रव्य आवश्यक पिछाय ॥४७॥
 तिमजे कोई इक मुनि हुस्ये पिण हिरडा ग्रहस्थ पण्डेह ।
 कहिये द्रव्य माधु तसु, आवश्यक वत येह ॥४८॥
 जो वन्दो द्रव्य निक्षेपने, तो तिण द्रव्य मुनीरा पाय ।
 तुम्हे पदता न्यु नयी, तुम्ह श्रद्धार न्याय ॥४९॥
 चौबीसी वर्तमान ने, वन्दे बहु ठामेय ।
 अनागत वाद्या नयी, देखो तुर्य अंगेय ॥५०॥
 तृतीय निक्षेपो द्रव्य तसु, गणवर वद्यो नाहि ।
 तो द्वितीय निक्षेपो स्यापना, किम वदी जे ताहि ५१
 द्रव्य तीर्थकर कृष्णवा, दीवा नेम वताय ।
 नेम तणां साधु सावना, त्या क्यु नहीं वद्या पाय ॥५२॥

उलटो कृष्ण भगो तिणा, दीवो पगा लगाय ।
 तो चोवीस्यो करता कृता, किम वदे मुनिराय ॥५३॥
 द्रव्य जिन श्रेणिफ नृप हुतो, दीधो वीर वताय ।
 वीर तया साधु साधिया, त्या म्यु नहि वंद्यापाय ५४
 तीर्थफ वदन तणु, तमु राश्यारे चाहि ।
 तो कृष्ण अने श्रेणिक तणा, त्या म्यु नहि वया पाहि ५५
 उलटी करी विडम्बना, जाणी ने भरतार ।
 तो चोवीस्यो करता कृता किम वदे शणुगार ॥५६॥
 जिन वटे तिहु कालना, नमोत्पुंगारे अत ।
 किणी मत्र में ते नहीं, देखोजी बुद्धिवत ॥५७॥
 जे कोई जीव अजीव नू, नाम आवश्यक देह ।
 ते आवश्यक नों प्रभु, नाग निक्षेप कहेह ॥५८॥
 अनुयोग टाग विषे इसो, प्रगट पाठ पाहिच्छाण ।
 तिम हिज तीर्थकर तणु, नाम निक्षेपो जाण ॥५९॥
 जिम कोई जीव अजीव नू, ऋपम नाम छे जेह ।
 ऋपम देव भगवान नों, नाम निक्षेपो नेह ॥६०॥
 जो वादी नाम निक्षेप ने, तो तिण ऋपभारा पाय ।
 म्यु नहि वादो छो तुम्हे, तुम्ह श्रद्धार न्याय ॥६१॥
 किणरो नाम दियो बली, अरिहंत ने भगवान ।
 नाम अरिहत बदो तुम्हे, तो म्यु नहि वंदो जान ॥६२॥

सिद्ध निरजन नाम पिण, दीते बहुजग माहि ।
 नाम सिद्ध बंदो तुम्हे, तो क्यु नहि बंदो पाहि ॥६३॥
 केईक मनुपांस काटा, ते पिण वाजे आचार्य त्हाय ।
 बंदो नाम आचार्य तुम्हे, तो क्यु नहि बंदो पाय ॥६४॥
 केईक ब्रह्मण लोक में, वाजे छे उपाध्याय ।
 नाम उपाध्याय बंदो तुम्हे, तो क्यु नहि बंदो पाय ॥६५॥
 जोगी संन्यासी प्रमुख, साधु नाम कहाय ।
 नाम साधु बंदो तुम्हे, तो क्यु नहि बंदो पाय ॥६६॥
 ज्ञान दर्शन चारित्र नाम गुण नही छे जे म्हाय ।
 नेह बंदवा योग किम, निमल विचारो न्याय ॥६७॥
 कोई कहै, आचार्यनां, उपाध्यायना ताहि ।
 उपग्रण नीं आशातना, कहि टालवी कांहि ॥६८॥
 ज्ञान दर्शन चारित तणां, तेह उपधिरे मांहि ।
 केहवा गुन छे ते भणी, उपधि संघट्टुं नाहि ॥६९॥
 नवमें दशमें कालिके, द्वितीय उद्देशे ख्यात ।
 इम कहै उत्तर तेहनुं, साभल जो अवदात ॥७०॥
 सूत्र विषे तो इम कह्यो, गुरु कायाइ करेह ।
 तिग हिम गुरुना उपधि करि, सघट्टे थये छतेह ॥७१॥
 मुक्त अप्रसाध स्वर्गो तुम्हे, बलि न हू करु कोय ।
 इम भाषे सुविनीत शिष्य, तास न्याय हिव जोय ७२

आचार्यनां उपवि ए, तदुपधि पिण्डाहाय ।
 जिम गुरु के सहवर्ती तनु, तेम प्रदित्तुणादे आयह ३
 भाव निक्षेपे गणपती, तास उपधि तनु जन ।
 तासु सघट्टययां खामबु, आरस्य सूत्रे एम ॥७४॥
 ययु बलि अपराध मुक्त, स्वमं तुम्हे अवलोय ।
 ए वच प्रत्यक्ष गुरु तयो, न्याय विचारी ज्ञोय ॥७५॥
 जो स्वमाययो हुवे उपधिने, तो देखो चित देह ।
 बदना करी स्वमायवे, उपग्रण स्थुं जोणह ॥७६॥
 येतो उपधि सहितजे, आचारजनीं जोय ।।
 रही अशातना टालवी, न थी अन्यथा कोया ॥७७॥
 सयनाशन गणपति तणा, तास सघट्टवूं नाहि ।
 ते हिज आचार्य विहार करि गया हुवे जो ताहि ७८
 सयणाशण तेहिज तब, शिष्य सेवके नाहि ।
 भोगविया अशातना, लागे के नहिं ताहि ॥७९॥
 जे पृथिवी शिल ऊपर, बैठा श्री भगवान ।।
 कालान्तर गोयम सुवर्म, बैठके नहीं जान ॥८०॥
 छायागणीनां तनु तर्णा, शिष्य अकर्मो तास ।
 चाले के चाले नहीं, जोवो हिये विमास ॥८१॥
 तुम्ह लेखे छाया भर्णा, आक्रमवू पिण्ड नाहि ।
 सघट्टे पिण्ड करबु नहीं, गुरु छायातुं ताहि ॥८२॥

सिद्ध निरजन ॥ चरित तणा ॥ बदन योग न होय ।
 नाम सिद्ध बंदो तुम्हे, त, तिणमें गुण नहिं कोय ॥८३॥
 श्रक र आचाध्य तणा, पगला तणी पित्राण ।
 तुम्हे करोओ स्यापना, तेहनें बंदो लागू ॥८४॥
 तो चाले गुरु केड शिष्य, गमन करता जोय ।
 धरती ऊपर गुरु तणा, पगला मडै सोय ॥८५॥
 शिष्यना पगतें ऊपर, पडिया वंड स्थु आय ।
 बन्दनीक, पगला कहो, ते लेखे दड पाय ॥८६॥
 चारित सहित जे गुरु भर्णी, वडै तीर्थ न्यार ।
 काल किया तसुं कायने, भस्म करे तिह नार ॥८७॥
 ज्ञान दर्शन चारित तणा, तिणमें गुण नहीं काय ।
 तिणसुं ददन कृया क्रिया, अशातना नहिं होय ८८
 करी स्वापना तेहनें, चाया कहोओ वर्म ।
 तो ए सांगे तनु बालिया, लागे आशातना कर्म ८९
 आवश्यकनों लागूशे, काल कियो तिह नार ।
 द्रव्य आश्रयक तनु कह्यो, देखो अनुयोग द्वार १९०
 तिम मुनि काल क्रियां छता, जीव रहित जे देह ।
 द्रव्यसाधु कहिये तसु, न्याय विचारी रोह ॥९१॥
 बदनीक द्रव्य मुनि कहो, तो तुम्ह लेखे तहाय ।
 द्रव्य साधु बाल्या छता, अशातना पिण्णाय १९२

जम्बू द्वीप पत्रतीर्मे कथ्यो, जिन जनम्या सुम राय ।
जन्म शुवन जिनवरतगा, तसु प्रदिक्षणादे आय ६३
जिनने वा जिनमात प्राणि, प्रदक्षणा त्रण वार ।
देई कर जोडी करी, वड शरु अवार ॥ ६४ ॥
हे परमा हारी रतन कृत्तिनी, आयो तुम्ह नमस्कार ।
इह विप्र सुम्पति ऊर्ध्व, ए विप्र ज्ञान आधार ६५
इग लम्ह मरु देवी प्रति, इन्द्र किया नमस्कार ।
विप्र समरिण किणो तही, मरु न्याय विचार ६६
अहम्य पण जिन जन रना, पद प्रणाम अत्र लोय ।
लोकीक हेतै जाणवु, उर्म हेतु नहि कोय ॥ ६७ ॥
ज्ञाता अ येयन प्राठने, गालनाथ भगवान ।
लागी पगा पिता तगो, लोकिर हेतै ज्ञान ॥ ६८ ॥
महिनाय यया केवली, तडा पके मा तात ।
वाग्नि सुर्गी श्रावक यया, पाठ विप अदात ६९
इग लेख मतिना पिता, पहिला श्रावक नाहि ।
ताम पाय प्रणम्या मली, उर्म नही निगु मांदि १००
तिम हिन द्रव्य जिनवर भगी, इन्द्र कर नमस्कार ।
ए तसु जीत आचारके, श्रीजिन आज्ञा वार ॥ १०१ ॥
जीव महित जिन बहने, द्रव्य जिन ताम कहेहे ।
ते बढनीर किण विप्र सुं, न्याय विचारी लेह १०२

जो बदनीक ते द्रव्य हुवे, तो तुम्ह लेखे वहेह ।
 तनु प्रते दग्ध कि ॥ कृता, आशातन लागेह १०३
 ज्यो द्रव्य निक्षेप वदो तुम्हे, तो जमाली आदि ।
 द्रव्यसाधु कहियतसु, वदो द्यू न सवाद ॥१०४॥
 भावे जे साधु हुतो, सेव्यो तिगु अग्नाचार ।
 भाव निक्षेपो तसु गयो, के गयो द्रव्यजिवार १०५
 मुनि वेमें सेव्यो तिगो, अग्नाचार अववार ।
 ते द्रव्य मुनि वंदाकैन्हि, वर्म हेत पर प्यार ॥१०६॥
 कृष्णादिक नरकें पडया, द्रव्य जिनवर कहि नाहि ।
 भावे काहिए नेगिया, बदनीक ते नाहि ॥१०७॥
 तीर्थकर जनभ्या पछे त पिगु द्रव्य जिनराय ।
 भाव निक्षेप तेहनें, ग्रहस्थी कहिये रहाग ॥१०८॥
 तीर्थ हर दीप्ता लिया, तसु द्रव्य जिन कहिवाय ।
 भावे ते मोटा मुनी, बदनीक तसु पाय ॥१०९॥
 चौतीस अतिशय उपता, वाणी गुण पैतीस ।
 केवल ज्ञान यथा पत्र, भावे जिन जगदीश ११०।
 बदनीक भावे मुनी, मलि भाव जिनराय ।
 उल्लस नै जपिगो यथा, पातक दूर पुलाय १११।

॥ अथ चतुर्थम् अम्बडाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे अम्बड कत्यु, अग्निहन्त विण अत्रलोय ।
 उलि अग्निहन्तना चेत्य विन, नथी बद्धा मोय । १।
 प्रथम उपाङ्ग विषे इमो, आख्यो श्री जिनगय ।
 ते अग्निहन्त ना चेत्य कृण, तसु उत्रा कहियाय । २।
 अरिहंत तो धुम्पद विषे, मनिमा चेत्य कहाय ।
 तो मुनियर नहीं बद्धा, अन्य उज्ज्या तिगन्याय ३।
 सुनि पद तो हे पंजमो, ते धु पद मे नहीं आय ।
 तिग काग्गा अरिहन्तना, चेत्य मुनी कहियाय । ४।
 जिन मनिमा जिन साग्नी, तुम्ह कहो तिग न्याय ।
 प्रतिगा ता धुम्पद हुई, सुनि धुम्पद नहीं अ य ५।
 अरिहन्त तो ए देव है, अग्निहन्त चेत्य सु सत ।
 तेह गुरु ए देव गुरु विना न अन्य बद्धत ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चम् आनन्दाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे आनन्द कथो, अनतीर्थक सग्रहीत ।
 अरिहन्तना जे चेत्य प्रते, उन्दू नहीं प्रतीत ॥ १ ॥

एह सातमा अङ्गै, दाख्यो गणु र देह ।
 ते अरिहन्तना चैत्यकृण, उत्तर तासु कहव ॥ २ ॥
 आनन्द कहु अण तीर्थने, अणतीर्थक ना देव ।
 अन्यतीर्थक परिग्रहीत जे, अरिहन्त चैत्य कहो ३
 ए तीनु नं बदना, करी करे नाहि ।
 नमस्कार करिवू नहीं, ए तीनु ने ताहि ॥ ४ ॥
 पहिला बोलाव्गा विना, बोलूं नहीं इकवार ।
 वार वार बोलू नहीं, नही आपू तस् साहार । ५।
 चैत्य इहा पतिमा हुने, तो बोलावे केम ।
 बलि आपे अशणादि क्रिया, न्याय विचार एमद
 कोई कहे तसु देवन, किम बोलावे ताय ।
 गलि अशणादिक क्रिमदिये, निमलसुणी तसु न्याय-
 पुत्र सुजेष्टा न कयो, महादेव तसु देव ।
 नयमें, ठाणें अर्थमें, ते नीर यत्ता स्वय मेव ॥ ८ ॥
 चंडारजानी सुता, तेह सुजेष्टा जाण्य ।
 तिण कारण तसु देवते, विद्यमान पहिळाण ॥ ९ ॥
 तेहने बोलावे नहीं, बलि नहीं आपे साहार ।
 गलि चैत्य सुनी अरिहन्तना, अष्ट यथा तिण वार १०
 ते अन्यतीर्थकमें जई मित्या, अन्यतीर्थकपिण तास
 महणक्रियानि जगत विषे अन्यतीर्थकपिण विभाव ११

नहीं बोलावू तेहने, वलि नहीं आपुं आहार ।
अभिग्रह ए आनन्द लियो, बारून्याय विचार । १२।

॥ शत ॥

॥ अथ पष्टम् जघाविद्याचारणाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै मुनि लब्धिपर, जघा विद्याचार ।
जावि रुचक नन्दीश्वर, वन्दे चैत्य तिवार ॥ १ ॥

वीमम शतके भगवती, नम उद्देश विपेह ।
प्रभु आख्या ते चैत्य कुण उत्तर तास कहेह ॥ २ ॥

जघा विद्या चारणा, रुचक नन्दीपर जाय ।
तिहा वन्दे पाठक, पिण नमसई नाहि ॥ ३ ॥

मानुषोत्तर गिरी विपे कृष्ट च्यार आख्यात ।
नयी कह्यु सिद्धायतन, तुर्य अण अवदात ॥ ४ ॥

वृत्ति विपे द्वादश कहा, तिहा देवता वास ।
आरयापिण सिद्धायतन, कूट कह्यो नहीं तास ॥ ५ ॥

तिहा चैत्य वन्दे क्रिसा, तिगासु चैत्य सुज्ञान ।
करै ताम गुन ग्राम अति, देसीने जे स्थान ॥ ६ ॥

उन भगवन्त नों ज्ञान ए, वन्य भगवन्तरो ज्ञान ।
जम कह्यु तिमाहिज सह्यु इम करै स्तुती जान ॥ ७ ॥

नमसई तिहा पाठ नहीं, वन्दई पाठज येक ।
 तेहनुंछे रतुती अर्थ, देखो धर सु विपक ॥ ८ ॥
 प्रथम हजाग पृच्छिया, गोयम पञ्चम अङ्ग ।
 तिहा वन्दई नमसई छे त्रिहु पाठ सुचङ्ग ॥ ९ ॥
 एतो छे अति अजब गति, रुचक ढीप लग जाहि ।
 तिहा नमसई पाठ नहीं, नमो त्यूण पिण नाहि ॥ १० ॥
 थापक तुङ्गिया ना प्रसर, आया स्थिवरं पास ।
 तिहा वन्दई नमसई, उभय पाठ गुण रास ॥ ११ ॥
 जो प्रतिमा वन्दन गया, तो करता नमस्कार ।
 नमो त्यूण गुणत, बलि, देखो हृदय विचार ॥ १२ ॥
 तथा चेत्यते जिन बहू, तेह तगा गुण गाय ।
 धन्य प्रभृइम कह तमुं, सत्य वचन सुख दाय ॥ १३ ॥
 कोई कह प्रभृजी भुगीं, चेत्य किहा आख्यात ।
 उत्तर नेह नै आखिए, सुणज्यो सुगण सुजात ॥ १४ ॥
 सूर्वाभे मन चिन्तव्यु, कल्याण कारी स्वाम ।
 दूरितोपसम करि यकी, मंगलीक अभिराम ॥ १५ ॥
 तीन लोकना अपति, तिणसु दवत नाथ ।
 हेतु सुप्रमन्न मनतगा, तिणसु चेत्य आख्यात १६
 राय प्रणगी वृत्तिमे, चेत्य अर्थ जिन खणत ।
 तेसांटे इहा संभवे, बहु जिनगुण अवदात ॥ १७ ॥

बहु जिनेन्द्र चा जिन कहे, रुचक नन्दीवर मोंहि ।
 भाग कल्या तिमहिज सह, देखि हिये हुलसाय १८
 अन्य जिनेन्द्र धन्य केवली, गिरी कुटा दिक जेह ।
 जेम कल्या तिम हीज ए, इम तमुस्तुति करेह १९
 तेमटि इहा दैत्यते, बहु जिन कहिए सोय ।
 वन्दई तमु स्तुती करे, एह अर्थ पिण होय ॥२०॥
 जिन आलोयां ते मुनी, काल करे जो काय ।
 तास विरायक प्रभु कल्या, पाठ पिपे अणुलाय ॥२१॥
 जब को तरु करे इमी, दिसां गौचरी जाय ।
 पात्रा आवी पडिकर्म, ईया वही मुनिराय ॥२२॥
 तिम ए पिण आगी करी, ईया वही गुणाय ।
 तासु उत्तर रहीजिये, साभलज्यो चित देय ॥२३॥
 शिमा गौचरी मुनी जई, आयता प्रियोकाल ।
 तेह विरायक नही हुने, जोवो नयण निहाल ॥२४॥
 जघा विद्याचारणा, काल कियौ अन्तराल ।
 तास विरायक प्रभु कल्या, नयी आराधक न्हाल ॥२५॥
 तिग्य सु डोरी वही तरण, नयी मिले ए न्याय ।
 ल देव फाडवी तेहनों, दगड कल्या जिनराय ॥२६॥

॥ वाचिका ॥

कोई कहे जघाविद्याचारणा लान्य फोडी नै न दीश्वर
 टोपे जाय ते आलोया विना मरे तो विरायक कयो ते आलो

यथा इर्यावही नो कही छे । दया गौचरी जाय तहनी पिण
 इर्या वही गुणें तिम ए पिण लाव्य फाडा नन्दीश्वर द्वीपगया
 तेहनी पिण इर्या वही जाणरी इम कहें तेहने काहणा इम
 इर्यावही गुणया विना विरायक हुव ता गाचरा पिण जाणा
 नही कदा ठिकाणे थाया विना पाहल मरिजाय तो विराधक
 हुवै, यलिंगाम वाहिर । दया, ज राँ नही । विहार करणों
 नही । पाहिलहणा करणों नही । जण भगूर काया है तो इर्या
 वही गुणिया विना पाहिला ही मरजाय ता विराधक होवणों
 पडे ते माटे, साधू गौचरी गयो पछा भावता बीच में काल
 करै इर्यावही पाठकमिया विना जय तो भो पिण विराधक
 हुवै, इम विहार करता बिचें इर्यावही पाठकमिया विना काल
 करै तो उणरी श्रद्धारे भैय भापण विराधक हुवै, इय तो पाठ
 लेहणा किया पछे अथवा बिचें इर्यावही पाठकमिया विना
 काल करै तो उणरी श्रद्धार लेल भो पिण विराधक हुवै,
 धर्म कारणों जाता धर्म कारणे अथा इर्यावही पाठकमिया
 विना काल करै तो उणरै भैय अ पिण विराधक हुवै, जद
 तो तीर्थकर न वादरा जाता भावता इर्यावही पाठकमिया
 विना काल करै ता उणरै लेल भो पिण विराधक, अगिदन्त
 गणधर आचार्य उपाध्याय महागोटा पूर्वा नें लोवे साधू मा
 विव्या नें धादण जाता नें भावता इर्यावही पाठकमिया विना
 काल करै तो उणरै लेल भो पिण विराधक, इम इत्यादिक
 अनेक कार्य किया इर्यावही पाठकमिया छे, जद ते पिण
 कार्य करता इर्यावहा पाठकमिया विना काल करै ता उणरै
 लेल भो पिण विराधक, इम इर्यावही पाठकमिया विना विरा
 धक हुव छे ता माधु नें पाहिला हीन इर्यावही पाठकमिया

बालो कार्य करणो हि नर्ही, तथा पण्डितेदृशा किये पछे
 मयरा विचै इयावही पण्डितमिया विना काल करै तो उणरै
 नेवै भो पिण विराधक हुबै, इम विहार करता विचै इयावही
 पण्डितमिया विना परै तो उणरै नेवै भो पिण विराधक हुबै,
 जो इम विराधक हुबै मद्र तो तीर्थकर, ने पग्दरा, माता ने
 भावता विचै इयावही पण्डितमिया विना काल करै तो उणरै
 सेवै भो पिण विराधक हुबै, भरिद-तगण धर भाचार्य उपा
 द्याप महा मोगा पुरुषा नै बाले साधु माश्रिषा नै एदवा जाते
 नै भावता विचै काल करै तो उणरै सेवै भो पिण विराधक
 छै, इम इयावही पण्डितमिया विना विराधक हुबै ता, साधाने
 पहिना होज इयावही पण्डितमनारे कार्य करणा होज नही,
 इण अदरै सेवैतो साधुनै हानवो चालवो इत्यादि वयुही
 कार्य करणो नही, भरिद-तन भगवन्तन तीर्थकरन गणधरन
 भाचार्यनै उपाध्यायनै महा मोटा पुफ्पा । साधाने माश्रिषा
 नै कियही नै मद्रवा जाणो नही, कदा विचैही काल करै तो
 विराधक पणो थापछै भाउगारो मरोसो छै नही तिणसु, उणरी
 अद्रा रै सेवैतो धर्मरो कार्य करणो नै कठेही जाणो नही
 जाता नै भावता इयावही पण्डितमिया विनापरै तो विराध
 कपणो थापछै, इण अदरै सेवै तो गणधरन मद्र उठेनाव
 पाता महा विपरीत अद्रा छै; भरिद-त भगवन्त तो सु कणो
 छै साधु चारित्रयाने कर्मयोगे अनक भारी-कार्य कीधा छै
 माटा मोटा दोप सेववा छै पछै गुरु कून, अनेक कौसा सुगे
 भासोषण चालयो छै कदा गुरु पास नही पृगा विचै ही भा-
 सोषा विना काल करै तो तिणन भगवन्त आराधन कयो छै,
 तो जग चारण नै विद्या चारणनी इयावही पण्डितमनारी

सरधा नहीं थी काई? ये विराधक किते सेलै हुभै तो ऐता ये काई भोलाछा अने धोले यारै ईयावही पहिरुपयारी सरधा न हुभै, तो गौचरी विसां विहार ममुखनी गुरु कने आज्ञा पागे ता आज्ञा पिण देखी नहीं विचमें मरिजापतो विराधक हुभै, धलि नन्दी उतरयारी पिण आज्ञा मोगै तो आज्ञा देखी, नहीं विधे मरिजापतो विराधक हुभै ते यारै नीकलियां पहिराही ईयावही तो १ गुणी इमजो विराधक हुभै तो नन्दी उतरतां मोक्ष किम जाय; सागारी सयारो पचखी नायामें येसे गृह्यु आचाराङ्ग अध्येषन तीसरे कथो छै, जो ईयावही गुणियां पिना विराधक हुभै तो नाग भैं सागारी सयारो पचखो किम येसे, धलि नन्दी उतरयारी साधाने भगवान आज्ञा दीधी अने गौचरी ममुखनीं पिण आज्ञा दीधी छै तिणसु नन्दी नावा उतरतां गौचरी ममुख पूर्वे कार्थ्य कथा ते करतां मरे तो अ यवा गौचरी ममुख कार्थ्य करी ठिकार्ये आयां ईयावही गुणियां पहिरां मरेतो आराधक पिण विराधक नहीं ।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिन्सा कियां, तुम्हे दोष कहो नाहि ॥
 पुष्पादिक श्रारंभ में, धर्म कहो जो ताहि ॥२७॥
 तो यात्रा करवा भर्णी, लब्धि फोडनी जेह ॥
 धर्म हेतु ए कार्य नों, किम प्रभृदगड कहेह ॥२८॥
 यात्रा अर्थे लब्धि जे, फोडवियां दगड आय ॥
 तो पुष्पादिक कार्य में, धर्म पुराय किमथाय ॥२९॥

॥ अथ सातमों धर्मार्थ हिंसा न गिरों
तेहना उत्तर नुं अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै धर्म कारणों, जीव हगों जो कोय ॥
पाप न लागै तेहनें, द्विव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमा कारणों, हगौ जु पृथिवी काय ॥
मन्द बुद्धि तेहने कह्या, दशमां अङ्गरे म्हांय ॥२॥
अर्थ धर्म नै हेतै हगों, मन्द बुद्धि कह्या तास ॥
ए पिण्डदशमां अङ्ग मँ, प्रथम अध्येयन विमास ॥३॥
जन्म मर्ण मृकायवा, हगौ जे पृथिवी काय ॥
कह्या अहेत अवोध तसुं, प्रथम अङ्गरे म्हांय ॥४॥
धर्म हेतु जंतु हगों, दोष इहां नेहीं कोय ॥
ए अनार्थ नृ वचन, आचाराङ्गे जोय ॥ ५ ॥
जिनाला सावद्य सह्य, वचन मात्र पिण्ड सोय ॥
सुम्ह नै आचरवा नही, प्ररुपवा तहीं कोय ॥६॥
महानिशीथरे पच मँ, कमल प्रभा इम ख्योत ॥
सावद्य पाप सहित मँ, धर्म पुण्य किम थात ॥७॥
ग्रन्थ संघ पट्टक कियो, जिन बलभ सुरेण ॥
जिन प्रतिमां यात्रा भर्गी, किस्सुं कह्यो छे तेण ॥८॥

सरपा नहीं थी काई। ये विराधक किते सैत हुंभे तो ऐसा ये काई भोलाछा भने बलि यारै ईयावही पहिकववारी सरपा न हुंभे, तो गौचरी वित्तां विहोर प्रमुखनी गुह कनें आज्ञा मांगे तो आज्ञा पिण्य देखी नहीं विचमै मरिजापतो विराधक हुंभे, बलि नन्दी उतरवारी पिण्य आज्ञा मांगे तो आज्ञा देखी, नहीं विधे मरिजापतो विराधक हुंभे ते यारै नीकलियां पहिसाही ईयावही तो न गुर्गी इमजो विराधक हुंभे तो नन्दी उतरतां मोक्ष किम जाय, सागारी सयारो पचखी नावामें बैसे एहउ आचाराङ्ग अध्येयने तीसरे कसो छे, जो ईयावही गुणियां विना विराधक हुंभे तो नावा में सागारी सयारो पचखी किम मैसे, बलि नन्दी उतरवारी साधाने भगवान आज्ञा दीधी भने गौचरी प्रमुखनी पिण्य आज्ञा दीधी छे तियसु नन्दी नावा उतरता गौचरी प्रमुख पूर्वे कार्य चथा ते करतां मरै तो अ-धवा गौचरी प्रमुख कार्य करी ठिकाणें आयो ईयावही गुणयां पहिसा मरतो आराधक पिण्य विराधक नहीं ।

॥ दोहा ॥

धर्म हेतु हिंसा किया, तुम्हे दोष कहो नाहि ॥
 पुष्पादिक आरभ मैं, धर्म कहो छो ताहि ॥२७॥
 तो यात्रा करवा भर्गी, लब्धि फोडी जेह ॥
 धर्म हेतु ए कार्य नौं, किम प्रभू दण्ड कहेह ॥२८॥
 यात्रा अर्थे लब्धि जे, फोडविया दण्ड आय ॥
 तो पुष्पादिक कार्य मैं, धर्म पुराय किमथाय ॥२९॥

॥ अथ सातमों धर्मार्थ हिन्सा न गिणों
तेहना उत्तर नु अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै धर्म कार्यों, जीव हणै जो कोय ॥
पाप न लागै तेहनें, हिव तसु उत्तर जोय ॥ १ ॥
देवल प्रतिमां कार्यों, हणै जु पृथिवी काय ॥
मन्द बुद्धि तेहने कह्यां, दशमां अङ्गरे म्हांय ॥२॥
अर्थ धर्म नै हेतै हणै, मन्द बुद्धि कह्या तास ॥
ए पिण दशमां अङ्ग मँ, प्रथम अध्येयन विमास ॥३॥
जन्म मरण मुकायवा, हणै जे पृथिवी काय ॥
कह्या अहेत अवोध तसुं, प्रथम अङ्गरे म्हांय ॥४॥
धर्म हेतु जंतू हणै, दोष इहां नहीं कोय ॥
ए अनार्य नृ वचन, आचाराङ्गे जोय ॥ ५ ॥
जिनाला सावद्य सहु, वचन मात्र पिण सोय ॥
मुक्क नै आचरवा नहीं, प्ररुपवा नहीं कोय ॥६॥
महानिशीथरै पच मँ, कमल प्रभा इम ख्यात ॥
सावद्य पाप सहित मँ, धर्म पुण्य किम धात ॥७॥
ग्रन्थ संघ पट्टक कियो, जिन बलभ सुरेण ॥
जिन प्रतिमा यात्रा भर्गी, किस्पुं कह्यो छै तेण ॥८॥

लोहना काया ऊपरै, मान्स'डली प्राति ताहि ॥

मूकी पकडै मीननै, धीपर नर जग, मांहि ॥६॥

तिम जिन विम्भ जिन नाम करि, मुग्ध लोक जे मीन ।

जिन यात्रादि उपाय करि, कुयूरूठगत मत हीन ॥१०॥

॥ काव्य ॥

अत्र जिन बल्लभ सूरिकृत सघ पट्टानां काव्य ॥

आकृष्ट मुग्धमानान्, बडिशपिशितवद्विवमाद-

श्य जेन ॥ तन्नाम्ना रम्यरूपान पवर कमठान्

स्वेष्ट सिद्धये विवाप्य ॥ यात्रा स्नात्रोद्युपाये नम-

सितक निशा जागराद्ये शकलेश्च । शृङ्गालुर्नामजे-

ने शकलित इव शठैर्वच्यतेहाजनोऽयम् ॥११॥

॥ दोहा ॥

भस्म ग्रह करिके, वली दशम् अछेर करेह ॥

मित्यया मत कह्यु सघपट्टे, जिन बल्लभ सूरैह ॥११॥

इन्दू विम्भ प्रतिवाल विन, ग्रहवू कुण वछेह ॥

तृतीय काव्य भक्तामरे, न्याय विचारी लेह ॥१२॥

तिम हिज जे जिन विम्भ प्राति, जिन जाणी नै जेह ॥

बाल अजाण विना कवेण, अङ्गीकृत करेह ॥१३॥

द्रव्य पूजा सावद्य छे, के निस्वद्य आस्यात ॥

उत्तर हिये विचारिये, छोडी नै पक्षपात ॥१४॥

निरवद्य छै तो मुनिकरै, गृही सामाईक म्हाय ॥
 ते पिण्य द्रव्य पूजा करै, तुम्ह श्रद्धारै न्याय ॥१५॥
 जो साग्र्य द्रव्य पूजा दुश्चै, तिण्य सृ मुनि न करेहा ॥
 तो सावद्य माही वर्म पुन्ये, केम कही जे तेह ॥१६॥
 आरंभ जे छकाय नूं, पचण पचावण जास ॥
 निज वा पर अर्थे किया, निन्दू गरहू तास ॥१७॥
 इम कह्यु वन्देतु विपे, सप्तम गाथा जोय ॥
 तो साहमी वच्छल विपे, धर्म पुण्य किम होय ॥१८॥
 ॥ इति ॥

॥ अत्र वन्देतु नीं गाथा ॥ छकाय समारभे पयम
 पचावण जे दोसा ॥ अत्तहा परहा ए, उभयहा चैव
 तू निन्दे ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ आठमो सुर्याभाधिकार ॥
 ॥ दोहा ॥

कोई कहे सुर्याभसुर, प्रतिमा पूजा तांम ॥
 तिहा हित सुत्तम पाठ है, निसेस्सा ए अनुगाम ॥१॥
 ते निसेस्सा नू अर्थतो, मोत्त भ्रमर पद होय ॥
 ते माटे शिव हेतु ए, तसु उत्तर हिव जोय ॥२॥
 राय प्रशेखी में कह्यु, जे सुर्याभ सु देव ॥
 उपनियो तव चिन्त व्युं, मन माही स्वय मेव ॥३॥

स्थु मुज नै करिवो हिवे, पहिलां पछे ज काज ॥
 स्थु मुज पहिला श्रेय जे, श्रेय फुन पछे समाज ॥४॥
 स्थु मुज पहिलां नै पछे, हित सुखम निस्सेसाहि ॥
 अनुगामी केठे हुइं, इम चिन्तव्यो मन मांहि ॥५॥
 सामानिक परिपथ सुरे, जाणी ए अर्धव साय ॥
 कर जोडी सुर्याभ प्रति, बोल्या एम ववाय ॥६॥
 जिन प्रतिमा दाढां प्रते, आप भुणी अवलोय ॥
 अन्य बहु वैमानीक सुरा सुरी, प्रते फुन जोय ॥७॥
 अरचण जोगज जाव फुन, सेवा जोगज जेह ॥
 ते भाटे पहिलां पछे, तुम नै करिवु एह ॥८॥
 पहिलां पछेज ए श्रेय, पूर्व पच्छा, पिण जोय ॥
 हित सुखम निस्सेसाए हें, अनुगामिक अवलोया ॥
 इम सीभल सुर्याभसुर, हृष्ट तुष्ट सलहीज ॥
 यावत विकस्यो हृदय फुन, ऊठयो सेक थकीज ॥९॥
 पवर सभा उपपातयी, निकली द्रह विपेह ॥
 आवी नै ते द्रह प्रते, तथा प्रदक्षण देह ॥१०॥
 द्रह में ऊतर स्नानकरै, जिहां सभा अभिपेक ॥
 तिहां आवी, सिंघाशणे, बैठो पूर्व सम्पेख ॥११॥
 सामानिक प्रपव प्रमुख, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
 अष्ट सहस्र नै चौशट फुन, जल भरिया कलशेह ॥१२॥

इन्द्राविषेक करी कहै, सुरगण में जिम इन्द्र ॥
 तारा गण में चन्द्र जिम, असुर विषे चमरिन्द्र ॥१९॥
 नाग विषे ध्रुविन्द्र जिम, भरत चक्री मनु मांहि ॥
 बहु पत्योपम लग तुम्हे, बहु सागरोपम तांहि ॥२०॥
 व्यास सहस्र सामानिका, यावत सोलहजार ॥
 आतम रक्तक देवता, तेह तर्गों अवधार ॥२१॥
 अधपती कुनस्वामी पणों, करता यकांज सोय ॥
 पालता विचरो तुम्हे, इम कहै सुर अवलोय ॥२२॥
 अलंकार सभातिहो, आवी करै अलंकार ॥
 आवी व्यवसाए सभा, पुस्तक वांच तिवार ॥२३॥
 पछे आय सिद्धायतन, प्रतिमादिक पूजेह ॥
 सूत्रे, विस्तार छै बहु, इहा कह्यु संक्षेपेह ॥२४॥
 इम प्रतिमा दादा पनग, पूतलिया दिक् पेख ॥
 बहु वाना पूजा तियों, स्वर्ग स्थित थी देख ॥२५॥
 ऊपजियो सुर्याभ तव, चिन्तवियो मन जेय ॥
 पूर्व पछे करिखु क्रिस्थु, मुक्त पूर्व पछे स्थु श्रेय ॥२६॥
 जेह कार्य कीयै छतै, पूर्व पछे, स्थु मोय ॥
 हित सुख प्रमुख भर्णा हुइ, इम चिन्तवायो सोया ॥
 धर्म कार्य तो जायतो, सम दृष्टी यो जेह ॥
 तेह तर्गो स्थु, चिन्तवे, किम तसु अमर वदेह ॥२७॥

पिण राज वैसतां कृत्य जे, करिखु पूर्व पछेह ॥
 तेह कार्य संसार नां, मङ्गल हेतु कहेह ॥२४॥
 तेह, रीति नवी जाणतो, नवां ऊपनो, एह ॥
 तिण स्युं चित्तपो सुज किंस्युं, करिवो पूर्व पछेह ॥२५॥
 एह भाव सुर्याभना, सामानिक सुर धार ॥
 बलि परिपननां देवता, जाण लिया तिण वांसरक्ष ॥
 ए जूना था ते भर्गी, राज वैसतां त्हाय ॥
 कारज करवो तेहनां, जांण हुंता अर्थिकाय ॥२७॥
 ते माटे सुर, स्थिती हुंती, ते दीवी तिणो वताय ॥
 जिन प्रतिमां दाटा भर्गी, कह्यो पूजवुताय ॥२८॥
 स्त्रर्ग रीति जाणी वेह्यु, सुर सुर्याभ प्रतेह ॥
 पूजा हित सुख प्रमुत्त पिण, प्रभुन कह्यो वच एह ३९
 पुर्वी पच्छां पाठ त्या, पहिला पछे सुजाय ॥
 हित सुख आदि कह्यो सुरे, पिण पेचा पाठ न कोय ३०
 पूर्व पछां ते इह भवे, द्रव्य मङ्गल कहिवाये ॥
 विघ्नोपशम अर्थे किया, राज वैसतां त्हाय ॥३१॥
 श्रावक तुगिया नां स्थिवर, वन्दन जाता कीच ॥
 सरिशव द्रोवात्त दही, द्रव्य मङ्गलिक प्रासिद्ध ॥३२॥
 उत्तराध्ययन नावीश मे, द्रव्य मङ्गल संवाद ॥
 तोरण जातां नेम कृत, दवी अत्तत द्रोवादि ॥३३॥

तिमहिज, सुर्याभे करी, मसारिक, भगलीक, ॥
 पूजा जित् प्रतिमादिर्ना, स्वर्ग स्थिती तद्दत्ता ३४
 प्रभू वन्दन अवशर कहु, पेचा हित, सुख आदि ॥
 पेचा ते पर भव विषे, देखो तज असमाधि ॥३५॥
 प्रतिमां त्या पूज्या पच्छा, फुन वन्दन जिन राय ॥
 पेचा पाठ कथो तिहा, राय प्रश्रेणी म्हाय ॥३६॥
 पचमा अङ्ग दृजे शतरु, प्रथम उद्वेसक पेख ॥
 स्वयं क दिक्षा अवशर, इह विध कहुं विशेष ॥३७॥
 धन काटे ग्रही लायथी, पच्छा प्राण, ताय ॥
 अहित काल यकी पछे, फुन पहिला कहिवाय ॥३८॥
 ते ग्रही जाणे, मुक्त हुसे, ए धन, हित सुख काज, ॥
 क्षम समरथ निस्सेसाय जे फुन अनुगामिक साज ३९
 तिम जरा मरणरी, लायथी, स्वात्म काढ्या ताय ॥
 पर लोके हित सुख भर्णी, वलि मुज क्षम निस्सेसाए
 मेघ कहु धन लायथी, काढ्या पूर्व पश्चात्, ॥
 हित सुपच निस्सेसाय फुन, पिण्यपेचा पाठ नख्यात् ४०
 तिम जरा मरणरी लायथी, स्वात्म काढ्या सोय ॥
 हुसे विन्द ससारनू, ज्ञाता प्रथम सु जोय ॥४१॥
 प्रतिमानी पूजा तिहा, लायथी धन बार, ॥
 काटे तिहां पच्छा प्रथम, ते दक भवणे नार ॥४२॥

जिन वन्दन पेचा कह्यु, धारित गृह्या परलोग ॥
 ते परभव हित सुख प्रमुख, देखो दे उपियोग ॥४४॥
 कोई कहे प्रतिमां तर्णी, पूजा छै निरदोख ॥
 हित सुखक्षम निस्सेसाए कह्यु, निस्सेसाय ते मोख ४५
 तसु केहिए धन लाययी, काढे तसु पिण सोय ॥
 हित सुखक्षम निस्सेसाए कह्यु, इहा मोक्ष स्यु होय ४६
 धन काढे जे लाययी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
 दारिद्रयी मृकायवो, ते मोक्ष दारिद्रनी ख्यात ॥४७॥
 तिम पूजा मंगलिक अरथ, इह भव पूर्व पश्चात ॥
 विघ्नयकी मृकायवो, ते मोक्ष विघ्ननी ख्यात ॥४८॥
 शतक पन्नर में भगवती, आगाँद थिवर प्रतेह ॥
 गौशाले जे वशिक नृ, आख्यु दृष्टान्त देह ॥४९॥
 चौथो बल्गू फोडता, बृद्ध पुरुष तिहवार ॥
 फोडक हाला पुरुषनृ, हित सुख बंछण हार ॥५०॥
 पथ्य आनन्द कारण तर्णी, बंछण हारो तेह ॥
 अत्रुकम्पा कारक तिको, निश्चय यश बन्देह ॥५१॥
 निस्सेसाए नृ अर्थ जे, आख्यो वृत्ति विपेह ॥
 बन्धे मोक्षज विपतनी, विपत मृकाय बू जेह ॥५२॥
 तिम प्रतिमा पूजे तिहां, निस्सेसाय आरयात ॥
 विघ्नतर्णी ए मोक्ष हें, विघ्न मृकाय बू ख्यात ॥५३॥

ए द्रव्यमंगल राज बैसतां, जे जग माहि गिरोह ॥
 विघ्नपडे नहीं राजें में, दधी अक्षत निम जेह ॥५४॥
 कोई कहे प्रतिमा तर्णी, पूजाथी कहियाय ॥
 अनुगामिया ए कह्यो, फल तसु कडे आय ॥५५॥
 तसु कहिये धन लायथी, कौढ तसु पिण सोय ॥
 अणुगामिया ए इसो, पाठ सरीसो जोय ॥५६॥
 जे धन कौढ लायथी, इह भव पूर्व पश्चात ॥
 तसु फल धन कौढण तण, जिहा जाय तिहा आत ५७
 विमान अधपती अभव्यथा, स्वर्ग तर्णी स्थिती मंत ॥
 सह सुर्याभ तर्णी परें, प्रतिमा दिक पूजंत ॥५८॥
 तिम पूजा प्रतिमा तर्णी, ए भव पूर्व पश्चात ॥
 तसु फल द्रव्यमंगल तण, जिहा जाय तिहा आत ५९
 शुभ सूचक ससार में, दधी अक्षत द्रोवादि ॥
 तिम पिण ए सुरलांक में, शुभ सूचक सेवाद ॥६०॥
 भाषा श्री जिनराय नीं, गावि विवाद विपेह ॥
 तिम पूजा प्रतिमा तर्णी, बलि गामीत्यूण ग्रोह ॥६१॥
 राज बैसतां कार्य्य जे, सह ससारिक हेत ॥
 स्वर्ग स्थिती माटे किया, वर्म पुण्य नहीं तेथ ॥६२॥
 कोई कहे पूजा किया, ए भव विघ्न मिटेह ॥
 पुण्य बध किम नवि कहो, हिव तसु उत्तर लेह ॥६३॥

चिढयो मूर सग्राम में, कर बहु जन सहार ॥
 आव्यू जीत फते करी, सुयस करै नर नार ॥६४॥
 सावद्य युद्ध तिगौ करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
 ते अशुभ कर्म करी, सुयस हुवे किम त्हाय ॥६५॥
 नाम कर्मनी प्रकृती, यसो कीर्त्ती पुन्य जेह ॥
 ते तो पाछल भव बधी, वर शुभ योग करेह ॥६६॥
 ते यसो कीर्त्ति पुण्य प्रकृती, युद्ध समय सुविचार ॥
 उदय आवी तिगौ कारणौ, सुयस करै नर नार ॥६७॥
 जन बहु जागौ युद्धथी, सुजस ययो जग माहि ॥
 पण नही जागौ पूर्व बंध, पुण्य थकी जस पाय ॥६८॥
 तुगियाना श्रावक किया, विघ्न हरणौ काज ॥
 दधी अक्षत द्रोवादि जे, इम हिज नेम समाज ॥६९॥
 दवी अक्षत द्रोवादि करी, अशुभ कर्म बंधाय ॥
 विघ्न मिटे किम तेहथी, किम सुख सम्पाति पाय ॥७०॥
 विघ्न मिटे अरिजन हटे, सुख सम्पाति पामेह ॥
 ते पुण्य प्रकृति पूर्व भवे, बधी शुभ जोगेह ॥७१॥
 ते पुण्य प्रकृती कदा, मङ्गल कियां पछेह ॥
 उदय आया सुख सम्पजे, बलि बहु विघ्न मिटेह ॥७२॥
 जन जागौ मङ्गल थकी, हित सुख प्रमुख जे पाय ॥
 पण नही जागौ पूर्व बंध, पुण्य थकी ए थाय ॥७३॥

पुत्रादिक परणायवे, थारा मोसर आदि ॥
 सुयस हुवे ते पूर्व वध, पुराये करी सम्वाद ॥७४॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश फुन, देवी पूजा आदि ॥
 कीधा सुख सम्पती मिलै, ते पूर्व पुराय प्रमाद ॥७५॥
 महा आरम्भ महा परग्रही, करै पंचेन्द्री घात ॥
 मास भक्षण ए चिहुं यकी, नरकायु ववात ॥७६॥
 नरके पंचेन्द्रीय पणों, पुराय प्रकृती छे जेह ॥
 ते तो छे पूर्व वधो, वर शुभ जोग करेह ॥७७॥
 पण महा आरम्भ आदिजे, चिहुं कारण करि जोय ॥
 पंचेन्द्री पण नहीं वधे, न्याय हिये अवलोय ॥७८॥
 तिम प्रतिमा पूज्या छता, हित सुख प्रसुख न थाय ॥
 पूर्व वधे पुराये हुवे, हित सुखत्तम निस्सेसाय ॥७९॥
 वर सुर्याभ विमाननों अथपती देव किंवार ॥
 मित्यया दृष्टी पिण हुश्रै, भव्याभव्य विचार ॥८०॥
 जे सुर्याभे सांचवी, तेहिज रीत तिंवार ॥
 राज बैसता सांचवे, विमान अथपती धार ॥८१॥
 प्रतिमा दिक पूजे-तिके, बलि नमोत्थुणं गुणोह ॥
 तिण सू ए स्थिती स्वर्ग नीं, मङ्गलीकहेतेह ॥८२॥
 बहु सागर सुर सुरी तण, अथपती पणों करेह ॥
 ए पिण बच हे देव नृ, देखो पाठ विपेह ॥८३॥

आपू जे सुर्याभनं, च्यार पल्योपम ख्यात ॥
बहु सागर लग किम रहें, पेखो तज पखपात ॥८४॥

॥ गीतक छन्द ॥

प्रतिमां तर्णां पूजा तिहां सुर्याभनें सुरश्राखियो
पुव्वी अनें पच्छा हीयाए । आदि पाठ सुभाखियो
पुव्वी पच्छा ते इह भवे संसार नां मगलीक ही ।
तुन्गियादि ना जिम विघ्न हरवा । द्रोव सरसव
तिम वही ॥ १ ॥ सुर्याभ जिन वन्दन तर्णा मन
माहि वारी छै तिहां । पेचा हियाए पाठ आदज
प्रगट अन्तर ए जिहां । पेचा तिको पर भव विपे
हित सुख प्रमुख पाहिकाया वू । पच्छा अनें पेचा
उभय नु अर्थ दिल में आंशि वू ॥ २ ॥ छन्धक
कहो धन लाययी काढे तिको चिन्ते सही । पच्छा
पूराए हिया सुहाए आदि पाठ सु प्रगट ही । तिम
जरा मरणज लाय थी निज आत्म प्राति काढयां
थके । मुक्त हुसे परलोके हियाए । प्रमुख पाठ
कह्या तिके ॥ ३ ॥ प्रतिमां तर्णा पूजा अनें धन
लाययी काढे वही । पच्छा हियाए पाठ छै पिशा
पेचा वा परभव नहीं । सुर्याभ जिन वन्दन अनें

जे खन्धके दीक्षा ग्रही । पेक्षा तथा परभवे यह
 बु पाठ पिण पच्छा नहीं ॥ ४ ॥ चंपा तर्णा जन
 वृन्द जिन वन्दन समय ए विध । कही । प्रभु
 वन्दता फल पेक्षा भव वा इह भव हित सुख प्रमुख
 ही । फुन तु निगयाना आवके पिण स्थिवर वन्दन
 समयहा । फल वन्दना नू इह भवे वा परभवे होसे
 सही ॥ ५ ॥ शिवराज ऋषी फुन ऋषभ दत्ते
 कह्यु प्रभु वन्दन तर्णा । फल इह भवे वा पर भवे
 हित सुख प्रमुख हुसे घण्ण । इम जिन मुनी प्रते
 वन्द वै फल पेक्षा वा परभव वही । पिण पाठ
 पच्छा शब्द किहा ही सूत्र में दास्यो नहीं ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ नवभू, चेइट्टी निजभरार्थी श-
 व्दार्थ अधिकार ॥ प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे प्रतिमा तर्णी, व्यावच करवी सार ॥
 आसी दशमां अङ्ग में, तीजे सवर द्वार ॥ १ ॥
 उत्तर तसु निसुणो हिने, तिण ठाणो इमवाय ॥
 आरावे ए तृतीय व्रत, ते केहवुं सुनिराय ॥ २ ॥

सूत्र भगवती में कह्यो, सीहो मुनी सुजाण ।
 पाक वीजोर वीर प्रति, बहरी आप्या प्राणि ॥२३॥
 अन्य केवली तेहनें, उपवादिक दे प्राणि ।
 आरावे इम तृतीय व्रत, महा मुनी गुण खान ॥२४॥
 राय प्रश्रेणी में कहा, वीर तणा चिहुं नाम ।
 कल्याण मंगल चलि, देवत चैत्य सु ताम ॥२५॥
 मलियागिरि कृत वृत्ति में, अर्थ इसो आख्यात ।
 कत्याणकारी ते भर्णी, कत्याणिक जग नाथ ॥२६॥
 दुर्त विधनज तेहनां, उपशम कारी स्वांम ।
 ते माटे जगनांथ ने, कह्यो मंगल ताम ॥२७॥
 तीन लोकना अधपती, तिणसु देवत ख्यात ।
 हेतु सुप्रश्न मन तणां, तिणसु चैत्य भजात ॥२८॥
 चैत्य शब्द नू अर्थ इम, आख्यो छै तिण स्थान ।
 ते माटे ए चैत्य जिन, तास वेयावच जान ॥२९॥
 मुनि ना ए पिण नाम चिहु, आख्या छै बहु ठाम ।
 कल्याणकारी ते भर्णी, मुनि कत्याणिक नाम ३०
 दुर्तोपसम कारी पणै, मंगल मुनि कहिवाय ।
 न्यार मंगल में देखत्यो, तीजो मंगल वाय ॥३१॥
 देवत कहता देव ए, पच देवमें ताहि - ।
 वर्म देव मुनि ने रूह्या, सूत्र भगवती मांहि ॥३२॥

भवद्रव्य देव भगन्तरे, देव हुसे ते त्हाय ।
 चक्री ते नर देव, हँ, यर्म देव मुनिराय ॥३३॥
 देवाधि देव तीर्थकरा, तिणसु दैवत वीर ।
 तीन लोकना अधपती, युग केवल गुण हीर ॥३४॥
 भाव देव चिहु जातिना, भवन पत्यादिक जेह ।
 बारम शतके भगवती, नम उद्देश विपेह ॥३५॥
 ते माटे ए चैत्य जिन तास वैयावच ताम ।
 निरजरानु अर्थी छतो, करे मुनी गुण धाम ॥३६॥
 कोई कह ए चैत्य नृ, अर्थ इहा जिन होय ।
 तो छेहडे, ए किम कह्यु, तसु उत्तर हिम जोय ॥३७॥
 चैत्य तुम्हे प्रतिमां कहो, तो छेहडे किम रयात ।
 तुम लेख तो धुर कही, पळे अन्य मुनी आत ३८
 जिन प्रतिमा जिन सारपी, तुम्हे कहोछो सोय ।
 ते माटे ए आदि मै, कहिबु चैत्य सु जोय ॥३९॥
 इहां वाल अत्यन्त धुर, दुर्वल ग्लान पश्चात ।
 स्थिर प्रवर्त्तक धुर कही, पळे आचारज रयात ४०
 आचार्य पदतो प्रथम, कहिबु धुर अहलाद ।
 ठाम ठाम व्यावच विपे, आचारज पद आदि ॥४१॥
 इहा प्रथम वालादि कही, पळे आचारज जोय ।
 तेहनु कारण को नहीं, देवो दिल अवलोय ॥४२॥

तिगहिज अंते चैत्य जिन, इहा आख्युं के सोय ।
 तेहनु पिण, कारण नही, हिये विचारी जोम ॥४३॥
 मुनि सदचारी पणा थकी, प्रथम, क्हा अणगार ।
 पळे चैत्य ते जित्त क्हा, तसु नही दोष लगार ॥४४॥
 गिण अनुपूर्वी तुम्हें, पद तसु, इकशय, वीस, ।
 पच्छानु पूर्वी विपे, पहलां मुनी जगीस ॥४५॥
 उवफाया आचार्य मिद्ध, अरिहन्त अन्त कहेह ।
 अनानुपूर्वी विपे, आषा पाळा लेह ॥ ४६ ॥
 अनुयोग दारे, आखीयो, पूर्वानुपूर्वी, जान, ॥
 पच्छानु पूर्वी वलि, अनानु पूर्वी आन ॥ ४७ ॥
 पूर्वानुपूर्वी तिहां, ऋपम, जाव वर्ध मान, ।
 महावीर यावत ऋपम, पथानु पूर्वी जनि ॥४८॥
 आषा : पाळा नाम ले, अनानुपूर्वी, तेह, ।
 ए, त्रहु, अनु, पूर्वी कही, देखोजी चित्त देह ॥४९॥
 सामाचारी दश विव कही, अनुयोग, डार विपेह ।
 इच्छा मिच्छा धुर अखी, पूर्वानु, पूर्वी एह ॥५०॥
 उत्तरा भयन छव्वीस में, आवसिसया, धुर जोय, ।
 अनानु पूर्वी यह के, तसु दोषण नही, कोय ॥५१॥
 ज्ञान दर्शन चारित्र तप, शिवमग, ए चिट्टे सार, ।
 उत्तरा भयण अठ्ठीवीस में, प्रथम ज्ञान सुविचार ॥५२॥

तिण हिज अ-पयनें कृपा, रुचि दर्शन ज्ञान चरित्त ।
 इहा दर्शन धुरे आखियो, तसु कारण न कथित्त ॥५३॥
 अभिणि वोविक धुर कही, प्रक्रे कयो श्रुत ज्ञान ।
 भगवती आदि विपे प्रभु, प्रगट पाठ पाहिछान ॥५४॥
 उत्तराभयण अट्ट वीस मे, कयो प्रयम श्रुत ज्ञान ।
 अभिणि वोव कयो पक्रे, तसु दोषण नहीं जाना ॥५५॥
 पूर्वानु पूर्वी किहा, किहा-द्वितीया अवलोय ।
 अनानु पूर्वी कही किहा, तसु दोषण नहीं कोय ॥५६॥
 पच ज्ञान मे देखलो, केहडे केवल ज्ञान ।
 केहडे दर्शन च्यार मे, केवल दर्शन जान ॥५७॥
 च्यार ध्यान माही बलि, केहडे शुक्ल ध्यान ।
 केहडे गुण दाणा मफे, अजोगी गुण स्थान ॥५८॥
 केहडे चिहु विध देव, मे, वैमानिक सुरख्यात ।
 चारित्र मे केहडे कहु, येथा तात जगनाथ ॥५९॥
 बलि पट नियदाने विपे, केहडे स्नातक जान ॥
 इत्यादिक बहु सूत्र मे, भाष्या श्री भगवान ॥६०॥
 अनानु पूर्वी करी, इहा चैत्य जिन अन्त ।
 उपधि मात, पाणी करी, तसु ध्यावच मुनी करंत ॥६१॥
 झागवै, इम, तृतीय व्रत, महा मोटा मुनीराय ।
 द्वितीय अर्थ ए आस्तीयो, निमल विचारो न्याय ॥६२॥

चैत्य ज्ञान धुर अर्थ कहु, द्वितीय अर्थ जिन जोय ।
 वलि केवल ज्ञानी वदे, तेहिज सत्य सुहोय ।६३।

॥ इति ॥

॥ अथ दशमू चमर सुधर्मागत अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै असुरेन्द्र जे, स्वर्ग सुधर्म जाय ।
 त्यां प्रतिमां नु शरण कहु, तसु उत्तर काहिवाय ।१।
 सूत्र भगवती तृतीय शत, द्वितीय उद्देशां माय ।
 चमर वीर नु शरण ले, स्वर्ग सुधर्म जाय ॥ २ ॥
 जई सुधर्म शक्र प्रति, चोत्यो विरुई वान ।
 शक्र कोप कर मृकीयो, वजू सुज्वाजल मान ॥३॥
 पछै इन्द्र विचारियो, विन नेश्राय सुजोय ।
 आवै चमर सुधर्म ए, इसी शक्ति नहि होय ॥४॥
 अरिहंत अरिहंत चैत्य फुन, भावितात्म अण गार ।
 आवै ए तिहुं शरण ले, चमर सुधर्म वार ॥५॥
 ते माटे महा दुख ए, अरिहंतनी अवलोय ।
 भगवन्त नें अणगारनी, अति आशातन होय ।६।
 इम चिन्तव अवयें करी, प्रभु कहै मुज प्रति देख ।
 शीघ्र गमन कर संग्रह्यो, वजू प्रते सुविसेख ॥७॥

इहा तिहुं शरणा में प्रथम, अरिहत केवल धार ।
 अरिहत चैत्य छद्मस्य जिन, चिहुं ज्ञानी सुविचार । ८ ।
 भावितात्म अणुगार फुन, यह तिहु शरणें मत ।
 इहा चैत्य ते ज्ञान वत, चिहु ज्ञानी भगवन्त ॥ ९ ॥
 वलि मन शक्र विचारियो, अरिहन्त नैं अवलाय ।
 भगवन्त नैं अणुगार नैं, अति आशातन होय । १० ।
 चैत्य स्थान भग शब्द कह्यो, भग नु अर्थ सुज्ञान ।
 चिहु ज्ञानी अरिहन्त ए, पिण्य प्रतिमा नहि जान । ११ ।
 कोई शरण तो त्रण कहै, आशातन कहै दोय ।
 अरिहन्त नैं प्रतिमां तर्णी, येक कहै छै सोय । १२ ।
 शरण विपे तो पाठ त्रण, आशातन में जोय ।
 दोय पाठ, दारूया हुता, तो आशातन बे होय । १३ ।
 शरण रिपे तो पाठ त्रण, आशातन में जोय ।
 तीन पाठ छैते भणी, आशातना त्रण होय ॥ १४ ॥
 प्रत्यक्ष सूत्रें शरणा तिहु, कही आशातना तीन ।
 अरिहत नैं भगवत नैं, वलि मुनि तर्णी कथीन । १५ ।
 तीन आशातन ने विपे, चैत्य शब्द नहीं ख्यात ।
 चैत्य ठिकार्यो भग कह्यु, देखो तज पख पात ॥ १६ ॥
 अरिहन्त नैं प्रतिमा तर्णी, मुनिनो शरण जु थाय ।
 तो छद्म जिन नु शरण ग्रह्य, ते किण शरणा माया १७ ।

अरिहत तो केवल धरा, तेह विपे सुविचार ।
 जिन छद्मस्य तर्णो शरण, आवि किण विषसा ॥२८॥
 जिन प्रतिमा नू शरण कहै, तिण भे पिण नहीं आय ।
 तृतीय शरण जिन पिन मुनी, किम तिण विपे कहाय ॥
 तिण सु छद्म जिन तण, द्वितीय शरण ए होय ।
 जो प्रतिमां नु शरण हुवै, तो किम आवि मनु लोय २०
 सभा सुधमी थी निकट, सिद्ध आयतन जाय ।
 जिन प्रतिमा नु शरण तो, ग्रहण करतो त्हाय ॥२१॥
 ते माटे इहा चेत्य नु, अर्थ ज्ञान अवलोय ।
 अन्य ठाम पिण चेत्य नु, अर्थ ज्ञान कह्यु सोय ॥२२॥
 चौबीस तीर्थकर तर्णा, चेत्य रूख चौबीस ।
 समवायद्र, विपे कथा, ए ज्ञान रूख सु जगीस ॥२३॥
 चेत्य ज्ञान केवल लहु, जिण तरु तल जिनराय ।
 चेत्य वृत्त ए जाणवा, ए ज्ञान वृत्त कहिवाय ॥२४॥
 तिमहि अरिहत चेत्य प्रति, चिहु ज्ञानी अरिहत ।
 द्वितीय शरण, ए जाणवो देखोजी मतिवत ॥२५॥
 द्वितीय आशातन नें विपे, चेत्य स्थान भगवत ।
 इहा अर्थ जे भग तर्णो, काहिए ज्ञान सुतत ॥२६॥
 ते माटे अरिहतनी, प्रतिमांनी अवलोय ।
 शरण कहै ते इहा नयी सभने मोय ॥ २७ ॥

॥ अथ इज्ञारमृ वली कम्मा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे वलीकम्म शब्द, सूत्र, विषे बहु स्थान ।
तेह तणुं स्यु अर्थ है, हिव तसु उत्तर जान ॥१॥

पंचमुद्देशे द्वितीय शत, बुद्धिया तणां विचार ।
श्रावकस्यिवरमु वादवा, त्पार थया तिह वार ॥२॥

स्नान करी वली कर्म कृत, तास अर्थ वृत्ती कार ।
कीधो छे ग्रह देवता, देखो हिये विचार ॥३॥

इमही उववाई में कह्यो, प्रवृत्ति वादुक कीध ।
वलि कर्म स्वग्रह देवता वृत्ती विषे सु प्रसिद्ध ॥४॥

केइरु इहा ग्रह देवता, जिन प्रतिमा कहै हेव ।
पिण इतलो जाणों नहीं, ए किण घरना देव ॥५॥

तीर्थकरतो छे 'सही', 'तीन' लोकना देव ।
ते किम 'जिन प्रतिमा भर्णां, घरनां देव कहेव ॥६॥

जिन प्रतिमा जिन सारपी, इम पिण कहता जाय ।
वलि स्यापे घर देवता, ए किण विधे मिलसे न्याय ७

कदापि कुल देनी । प्रते, कहिये घरनां 'देव ।
लोकीरु, हेतें पूजता, श्रावक पिण स्वमेव ॥८॥

जेह देवता शब्द नित, स्त्री लिङ्ग वाची होय ।
 कहुं श्रमर में ते भणी, न्याय हिये अवलोक्य ॥६॥
 नवम उद्देशै सप्तशत, वर्ण क्रीव वलीकर्म ।
 अर्थ देवता नं कियो, वृत्ति विषे ए मर्म ॥ १० ॥
 वलीकर्म नुं अर्थ धर्गसी, स्नान तरणी ज विसेस ।
 कीधो वलि कर्म शब्द करी, आया कारज सेस ॥११॥
 ज्ञाताध्येयने दूसरे, सुत वन्छा नें हेत ।
 नाग भूत यत्त पूजवा, गर्ड सुभद्रा तेथ ॥१२॥
 पुष्करणी में स्नान कर, कीवा वलीकर्म जोय ।
 ए वाच मधे किण देवनी, प्रतिमा पूजा सोय ॥१३॥
 भीनी साडी उडणै, एहवी कृतीज तेह ।
 कमल बहु ग्रही नीकली, पुष्करणी थी जेह ॥१४॥
 बहु पुस्प गन्ध धूपणी, मात्य प्रमुख अवलोक्य ।
 काडे जे मूक्या प्रथम, तेह ग्रही ने सोय ॥१५॥
 पछे नाग वर आय नें, प्रतिमा पूजा आम ।
 जाव वेश्रमण ना वलि, पूजा आसीताम ॥१६॥
 वलीकर्म पुष्करणी विषे, कीधो धुर आरुपात ।
 ते पुष्करणी नें विषे, किसा देवनी, जात ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

मल्लो पिता नै पासरे, श्रावता म्हाया कहा । जाव
 शब्द मे तासरे, वली कम्मा ए पाठ छै ॥१८॥
 वलि मल्लो पट राजानरे, समक्तावा आवी तदा ।
 जाव शब्द में जानरे, वली कम्मा ए पाठ छै ॥१९॥
 देखो मली भगवानरे, प्रतिमा पूजा केहनी ।
 अध्ययन अष्टम् जानरे, आख्यो ज्ञाता नै विपै ॥२०॥
 वलीकम्मा नृ जाणरे, अर्थ कहै पूजा तर्णा ।
 ए जिन प्रतिमा नी मांणरे, क पूजा कुल देवनी ॥२१॥
 जो स्यापे जिन विम्बरे, तो मल्लो तीर्थकर छना ।
 पूजे तेह अचम्भरे, वलि प्रतिमां किण जिन तर्णा २०
 जिन प्रतिमां नीं तायेरे, मल्लो नांथ पूजा करी ।
 तो भावे मुनि पायेरे, देखी प्रणमं कै नहीं ॥२३॥
 वलि अढी द्वीपेरे म्हायेरे, भावे जिन उत्कृष्ट थी ।
 इक सौ सित्तर थायेरे, जघन्य वसि थी ननि घटै ॥२४॥
 त्यां द्रव्ये जिन घर मांयैरे, भावे जिन वदे कै नहीं ।
 वलि तसुं वाण सुहायेरे, तसु लेखै किमं नहिं सुणै २५
 मलिनाथ घर माहिरे, जिन प्रतिमां पूजा कहै ।
 तो द्रव्ये जिन पिण ताहिरे, भावे जिन वन्दै न किम २६

जो स्यापै कुल, देवरे, मछिनांय पूजा करी ।
 सुर सहाय स्वयमेवरे, किम न करे श्रावक समकती २७
 स्नान तगुं ज विसेखे, अर्थ कहै वली कर्म नू ।
 तो टालियो क्लेश असेपरे, सहु ठाम वसेखे स्नान नू २८

॥ दोहा ॥

भगवती नवमा शतक में, तेतीस में उद्देश ।
 जमाली मंजन घरे, स्नान वली कर्म सेप ॥२६॥
 अलकार कर नीकल्यो, मंजन घर थी हेव ।
 इण न्हावा नां घर विपे, केहवो पूज्यो देव ॥३०॥
 देवा नन्दा त्राक्षणी, वलीकर्म मंजन गेह ।
 तिण न्हावा नै घर किसो, पूज्यो देव कहेव ॥३१॥
 द्वितीय उपाङ्ग प्रदेशी नृप, देव पूजवा जाय ।
 पहिला न्हावा घर विपे, वली कर्म कीवो ताय ॥३२॥
 इण न्हावा नां घर विपे, किसो, पूजीयो देव ।
 देव पूजवा तो हिवै, जवि छे स्वयमेव ॥ ३३ ॥
 ज्ञाताध्ययने सोल में, द्रोपदी-मंजन गेह ।
 स्नान वलीकर्म कौतुक, पवर वस्त्र, पहेरेह ॥३४॥
 मंजन घर सु नीकली, आवी जिन घर मांय ।
 इतरा सुधी पाठ छे, देख विचारो न्याय ॥ ३५ ॥

पहला तो न्हावो कह्यो, पछे कह्यो वलिकर्म ।
 पछे वस्त्र पहत्या कहा, हिव जोवो ए मर्म ।३६।
 स्त्री जाति सुभाव नम, थई न्हावा वैठी जेह ।
 त्या न्हावा ना घर विपै, केहवो पूज्यो देव ॥३७॥
 वलीकर्म कर जिन घर विपै, प्रतिमा पूजी आय ।
 तो वली कर्म मंजन घरे, ते केहनी प्रतिमा थाय ।३८ ।

॥ सोरठो ॥

अपात चिलाती न्हायरे, कय वलि कर्मा पाठत्या ।
 जम्बू द्वीप पत्रती मांयरे, किमो देव त्यां पूजीयो ३९

॥ दोहा ॥

कोणिक जिन वन्दन गयो, कह्यो स्नान विस्तार ।
 वली कर्म शब्दजमूलगो, नयी तिहां अवधार ।४०।

॥ अथ कोणिकजिन वंदवा गयो त्यां न्हावा
 नू पाठ उववाई सूत्र में कह्यो ते लिखीये छे ॥

जेणेव मज्झण घरे सेणेव उवागच्छइ गच्छइत्ता मज्झन घर
 अणुपविस्सइत्ता समुत्ताजाला उन्नाभिरामे विचित्त पणिर-
 पण कुट्टिमत्तसे रमाणजे एहाण महव मि णाणापणिरपण
 भत्ति भत्ति ति एहाण पीडांस सुहाणिसणे सुदोदगेहिं गघोद-
 गेहिं पुफोदगेहिं सुभोदगेहिं पुणोरेकल्लाणग पपरमज्झण वि-

हिममांजकृतस्य कोटपसपाहि बहुविदेहि कल्माणगपकरं मज्ज
 गावमाणे पम्हल मुकुमासगध कासाइय लूहिपगे सग्ग सुराहि
 गोतीस चदणोणु नित्तगत्ते अइय सु मइग्ध ट्ठवरपण मुत्तयए
 सुइ माला वगणग विलेवण आविद्ध मणि सुवणे काण्ठिय हाग्-
 दहार तिसरप पासव पमवमाणे काठिसुत्त मुकप सोई पिण्डगे
 ।वज्जे भगुत्तिज्जे कत्त विपगप सभिर्य कया भरणे वरकडग
 तुट्टिय यभियभूय आइय रुवसस्तिररिपा मुट्टिया पिगलगुलिय
 कुंडल उज्जोविषाणणे मण्ड विच सरए हारोत्थय मूकयर इयव
 वत्ये पासव पलवमाणे पइमुकय उत्तरिज्जे छाणामणि कणग
 रपण विमलमहार हाणुवणा विपमि समसति विरइय सुत्तिभिट्ट
 विभिट्टठ सट्टठ आविट्ट वीर वसये किं बहुणा कप्परखए भेव
 अंसकिय विमूत्तिए थारवई सकोरंठ मल्लदामेण छत्तेण थरिज्ज
 माणेण चउ चामर वासकोजपगे मगन्न जय सह कयालोए म-
 क्कण पराड प.डिण्डिक्क मइमक्क २ ता ॥ इति ॥

॥ सारठा ॥

वली कर्म शब्दे जेहरे, पूजा जिन प्रतिमा तर्णी
 तो कोणिक अधिकारेहरे, जिन वदन समय ए
 न किम ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप एन्नती एमरे, भर्तेश्वर
 नां स्नान नू, विस्तार कोणिक जेमरे, त्या वली
 कम्मा पाठ नहीं ॥ ४२ ॥ स्नान तर्णी जिण
 स्वानरे, विस्तार पणें नवि वरणाव्यू, त्या वली
 कम्मा जानरे पाठ देख निराण्य करो ॥ ४३ ॥

जलाजली प्रमुखे, स्नान करती, जे करे, कुला
 दिक् प्रतखरे, स्नान विपेसण यह छे ॥४४॥ ते माटे
 अवलोये, वली कर्मा, जे पाठ नृ, स्नान विपमण
 सोये, अर्थ, वर्म सी इम कियो ॥ ४५ ॥ वृत्तिकार
 कह्य सोये, वली, कर्म ते ग्रह देवता, तसु पूजा
 अवलोये, इहा कुल देवी-सम्भवै ॥४६॥ स्नान
 विपेसण, होयर, वा पूजा ग्रह देवता, उभय अर्थ
 अवलोये, सत्य सर्वग्य वदेतिको ॥ ४७ ॥

॥ अथ असहेजाधिकार ॥

॥ दोहा ॥

वलि कहे श्रावक समकती, चार जाति ना देव ।
 तास साफ बछे नहीं, सूत्र विपे ए भेव ॥ ४८ ॥
 ते माटे वली कर्म ते, जिन प्रतिमा पूजत ।
 पिण कुलदेवी अर्थ नाहि, हिय तसु उत्तर मत ॥४९॥

॥ सोरठा ॥

असहेज्का पाठ नृ जाणरे, अर्थ दोय हे वृत्ति मे ।
 आपद पड्ये सुजाणरे, साफ न बछे देव नृ ॥५०॥

पोतै कीधा पापरे, ते पोतैहीज भोगवे ।
 अदीन मनो वृत्ति स्यापरे, एक अर्थ तो इम कियो ५१
 बलि पाखडी आयरे, चलावै समकित आदि थो ।
 तो नहीं बछे सहायरे, शमर्थ स्वयमेव हटायवा । ५२।
 बलि जिन शासन मांयरे, अत्यन्त भावित आशता ।
 ते माटै असहायरे, अर्थ दूजो इम वृत्ती में ॥ ५३ ॥
 तुन्गिया नें अधिकाररे, उभय अर्थ ये आखीया ।
 तास न्याय सुविचाररे, चित्त लगाई साभलो । ५४।
 दूजो अर्थ पहिछागरे, समकित व्रत सैंठा पणो ।
 प्रवर मूल गुण जांगरे, यह अवश्य गुण चाहिजे । ५५।
 ए गुण खण्डित थायरे, तो दुश्चै विराधक पांति में ।
 शुद्ध दुश्चां सुंतायरे, आराधक पद आखीयो ॥ ५६ ॥
 जो पाखडी नें जेहरे, जाव देवा समर्थ नहीं ।
 पर सहाय बिन तेहरे, तासु चलायो नवि चले । ५७।
 तो पिण मूल गुण तासरे, तेहनु न गयु सर्वथा ।
 समकित व्रन नीं राशरे, अखड पणै राखी तिणै । ५८।
 आपद पहिया आयरे, घुर सहाय बछे नहीं ।
 ए घुर अर्थ कहायरे, उत्तर गुण ते जांगवु । ५९।
 सुनि घुर पहिर सभायरे, द्वितीय पहिर में ध्यान वर ।
 तृतीय गौचरी जायरे, चौथे पहिर सभाय फुन । ६०।

उत्तर गुण न व्यापे, कथा विचक्षण मुनि तयो ।
 ज्यो नकरे अणुगारे, तो समय में भंग नहीं । ६१।
 तिमं श्रावको यहो, उत्तर गुण असहायता ।
 सुर सहाय बछेहे, तो समकित में भंग नहीं । ६२।
 सूत्र उपाई माहिरे, अम्बड ने अधिकार पिण ।
 जाय शब्द में ताहिरे, असहेज्जा ए पाठ है । ६३।
 तास अर्थ वृत्ति माये, एऊ इज कीवो अछे ।
 आपद सुर असहाये, ए अर्थ कीवो नथी ॥ ६४ ॥
 कु तीर्थक पेरितरे, समकित में अविचल पणो ।
 पर सहाय नवि चित्ते, उपाई वृत्ति में व्हो । ६५।
 रायप्रणेशी वृत्तिगे, असहेज्जा नू अर्थ जे ।
 कीवो अपिऊ पवित्रे, चित्त लगाई सभिलो । ६६।
 कु तीर्थक प्रेरितरे, समकित में अविचल पणो ।
 पर सहाय नवि चित्ते, यह अर्थ इक हिज तिहा । ६७।
 आपद सुर असहाये, यह अर्थ कीवो नथी ।
 कु तीर्थक यो ताहिरे, न चले एहिज अर्थत्यां । ६८।
 आनन्दा दिक सारे, असहेज्जा पाठ व्होतिहां ।
 छ छडी आगारे, देवाभिउगे पाठ में ॥ ६९ ॥
 अन्य तीर्थी न धारे, तथा देव जे तेहना ।
 अद्वा भृष्ट अणुगारे, अन्य तीर्थी ग्रहा तेहन ७०

नकरुं वन्दनां ताहिरे, नमस्कार पिण नहिं करु
 पहला बोलुं नाहिरे, अशर्णा दिक देवू नहीं । ७१
 अभिग्रह यह विसेपरे, छ छडी आगारत्या
 राजनि आदेशरे, तथा कुटम्ब आदेशथी ॥७२
 बलवत तर्णे प्रयोगरे, देव तर्णे परवश परी
 कुटम्ब इहाने योगरे, अटवी विषेज कारणे ॥७३
 ए खट तर्णे प्रकारे, अन्य तीर्था दिक बहु भर्णा
 वन्दे करि नमस्कारे, अशर्णादिक दे तेहनै । ७४
 आपट उपजे आयो, अथवा तेहनां भयं थकी
 बान्छे देव सहायरे, जाणे सावम्भ तेहनै ॥७५
 तसु समकित किम जायेरे, समकिततो अद्धा अठे
 हिये विचारो न्यायेरे, अद्धा कार्य जुवा जुवा ७६
 छ छडी विन त्यागरे, ए पिण गुण अधिकार्ये
 अधकरो बैरागरे, व्रत सांकडा जेहना ॥७७
 इक व्रशनां पञ्चखासरे, कीथां से आवक हुथे ।
 शतक सतर में जाणरे, द्वितीय उद्देशे भगवती ७८
 अनर्थ दंड परिहाररे, ए आठमं व्रत है ।
 अर्थ तर्णा आगाररे, न्याय हिवे तेहनुं सुणी । ७९
 अर्थ दंडमे यहेरे, आठ आगारज आखिया ।
 द्वितीय सुयगडांगेहेरे, द्वितीय उद्देशे देखेल्यो ८०

आत्म ज्ञात घर तेघरे, परिवारनें मित्र कारणों ।
 नाग भूत यत्त हेतरे, हिंसादिक आरभ करे ॥८१॥
 अर्थ दहरे माहिरे, घं आहंही आर्षिया ।
 नाग भूत यत्त त्हायरे, आवकरे आगरहे ॥८२॥
 धारणीनों तिहवाररे, अकाले घन डोहला अर्थ ।
 देखी अमय कुमाररे, ज्ञाता सुर आराधियो ॥८३॥
 कृष्णे पिण्ड सुविसेखरे, लघु वधवरे कारणों ।
 देव आराध्यो देखरे, अतगढ मांही कथो ॥८४॥
 चक्री भर्त सु सोयरे, देवी देव भर्णी तिणों ।
 जम्बू द्वीप पन्नती जोयरे, अट्टम करि आराधियो ८५
 बलि मूक्या छ बाणारे, नमस्कार सुरनें निख्यो ।
 ए प्रत्यक्षही पहिछाणारे, बन्धयो सहाय देवनू ८६
 बलि चक्री भर्तेशरे, चक्रतर्णी पूजा करी ।
 इम हिम्क सुर सम्पेखरे, पूजे स्वार्थ काणो ॥८७॥
 शान्ति कुधु अरि जाणरे, चक्र रतन पूज्यो के नां ।
 खट खंड साधत पाणारे, अट्टम तेर क्रियाके नां ८८
 लवण सुठियो देवरे, कृष्णे पिण्ड आराधियो ।
 ज्ञाता सोलग भेवरे, सुर सहाय बन्धयो तिणों ८९
 पूर्वोक्त पहिछाणारे, देव सहायज बान्धवे ।
 सम्यक् दृष्टी जाणरे, सावर्ज्म लोकिक कृत करे ९०

समकित तास न जाये, नहीं जाय आवक पणों ।
 जो सुर पूजे नाहिरे, तो गुण आिकेरो अछे ॥६१॥
 नाद केरा पाये, दुपद सुता प्रणम्या नयी ।
 ए गुणछे अविनाये, पिशा पंडू प्रणमत करी ६२
 जाव शब्दरे माहिरे, कृष्ण पिशा नाद भणी ।
 प्रणमत कीधी ताहिरे, पिशा तसु संगकिन नवि गरि ६३
 प्रत्यक्षही पहिछाणरे, सम दृष्टी आवक तिके ।
 शीश नमावे जांगरे, भ्लेछ ना राजा प्रते ॥६४॥
 तिमहिज डरता ताये, अथवा स्वार्थ कारणों ।
 प्रणमै सुरना पाये, ते मार्ग लौकीकछे ॥६५॥
 ते माटे पहिछाणरे, पाखंडी यी नवि बलै ।
 दृढ प्रासता जांगरे, मूल अर्थ अमहेज्जन्तू ॥६६॥
 बलि जे कहै इम वाणरे, सुर सहाय नहीं बछणी ।
 तो चौबीस जिननां जाणरे, चौबीस जन जतणी कह ६७
 शासण देव सहाये, तसुं थुई पडिकमणों पढे ।
 बलि थुजे त्हाये, पूजे केम चकेश्वरी ॥६८॥
 तथा यती यकां प्रत्यक्षरे, काला गोरं भरेवे ।
 माणभद्र दिक यत्तरे, आरावे रत्ता भणी ॥६९॥
 ए लेखे तो जोये, सहाय देवनां बछे ।
 निज श्रद्धा अवलोये, तुम गुरु पिशा नहीं समरता १००

पूजे भैरव आदिरे, श्रावक परणी जे तदा ।
 शीतला दिक अहलादरे, तुम्ह लेखे नहीं श्रावक परणी १०१
 तिणसू देवसहाये, लौकीक खाते बद्धता ।
 सम्यक्तस न जाये, नहीं जावे श्रावक परणी १०२

॥ शिव ॥

॥ अथ-१२ मू-यात्रा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

यात्रा शत्रुजादिनी, कंठी केइक ख्यात ।
 पिण ए यात्रा सुत्रमें, कही नथी जग नाथ ॥१॥
 शतक अठारमें भगवती, दशमें उद्देश सार ।
 सोमल पूछ्या वीर प्रते, प्रश्न यात्रादि प्रकार ।२।
 हेभगवत स्पृं थांहिरे, यात्रा अधिक उदार ।
 इम सोमल पूछ्यां गके, उत्तर दे जगतार ॥३॥
 जिन भापे सुण सोमिला, छै मांहरे सुखकार ।
 तप अणशणा दिक नियम, तेह अभिग्रह सार ।४।
 संयम बलि सज्जायते, धर्म कथा दिक जाण ।
 ध्यान आवश्यक आदि वर, जाग विमल पहिछाण ५।
 ए पूर्व कहा तेहने विपे, जयणा प्रते राखे जेह ।
 ते मांहरे यात्रा अछे, कहा पवर वच यह ॥६॥

पिण शत्रुजय दिक् तर्णी, जिन यात्रा कही नाहि ।
देखोजी देखो, तुम्हे देखो, हिवडा माहि ॥७॥

॥ सोरठा ॥

वृत्ती विपै इम वायरे, यद्यपि प्रभू केवल पर्ये ।
आवश्यकदि तायेरे, बोल केइक नहीं छै तसु ।
तथापि तप नियमादिरे, तसुफलनां सदभावयी ।
तप नियमादि संवाहिरे, कहिये फल ते आशरी ६

॥ श्लोहा ॥

इमहिम्न पुष्पिया उपाङ्गमै, तृतीय अध्येयन सभार ।
पार्श्वनाथ भगवत प्रते, सोमल विप्र जिवार ॥१०॥
प्रश्न यात्रा दिक् पूछिया, तप नियमादि प्रवृत्ति ।
पार्श्व प्रभू यात्रा कही, पिण गिरीनी न कथित ११
ज्ञाताध्ययने पंचमै, मुनि स्थावरचा पूत ।
तह प्रते शुक पूछिया, प्रश्न यात्रादि प्रभूत ॥१२॥
हे भदत यात्रा किसी, शुख पूछे ए सार ।
कहु भावरचा पुत्र इम, जे मुक्त ज्ञान उदार ॥१३॥
दर्शन चास्त्रि तप वलि, सयम आदि विचार ।
सोगे यत्नी जीवती, ए मुक्त यात्रा धार ॥ १४ ॥

इहां पिण यात्रा यहही, ज्ञाना दिक्नीं जोय ।
 पिण शत्रुजा आदिनीं, यात्रा न कहौ कोय ॥१५॥
 उत्ताराध्यन सु वारमें, हरकेशी प्रति सार ।
 विप्र पूछियो थाहिरे, कुण द्रह तीर्थ उदार ॥१६॥
 धर्म रूप मुनि द्रह कह्यो, ब्रह्मचर्य श्रवलोय ।
 तीर्थ शान्ति कारी कह्यो, पिण गिरमें न कह्यो कोय ॥१७॥
 शेतुंज्के पव्वण सिद्धे, सूत्रमें इम गिरि ख्यात ।
 पिण शत्रुंज तीर्थ सिध, इम न कह्यो गणनाथ १८
 जागा अलाहदी जांशिनै, कीथा तिहा संधार ।
 बन्दनीक तो गुण अछै, जोवो हिय विचार ॥१९॥
 जीव रहित तनु तेहनु, ते पिण नहि बन्दनीक ।
 तो जागा बन्दनीक किम, न्याय विचारो ठीक ॥२०॥
 नाज खला थी ले करी, थाल्यो जे कोठार ।
 सूना खला लार रहा, चाढि तेह गिमार ॥२१॥
 हुगडी जे लाखा तराई, सिकार ता जे स्थान ।
 काल केतले शठजी, छोडी तेह दुकान ॥ २२ ॥
 हिव हुगडी सिकार नही, तेह दुकानें जोय ।
 तिम शत्रुजा दिक विपे, जिन मुनि सिद्धा सोय ॥२३॥
 हिव ते पर्वत नैं विपे, हुगडी तराई ज सोय ।
 सिकारण वालो नही रह्यो, बन्दनीक किम होय ॥२४॥

वन्दनीक जो गिर-हुश्रै, तो तिण ऊपर त्हाय ।
 पगदीधा आशातना, हुश्रै तुम्ह श्रद्धा न्याय ।२४।
 द्वीप अढाई, नै विपै, दोय- समुद्र विपेह ।
 सहुठामें सीधा मुनी, पन्नपणा सोलम यह ।२५।
 जिहा येक सीधा तिहा, सीया मुनी अनन्त ।
 सूत्र उववाई नै, विपै, भाख्यो श्री भगवन्त ॥२६॥
 इण लेखै तुम्ह बदवा, अदी द्वीप अवधार ।
 फुन वे दधि प्रति बदवा, त्यां सीया श्रण गार ।२७।
 ते मांटे वन्दनीक छै, जिन मुनि मंहा गुण धार ।
 पिण स्थानक वंदनीक नही, वारु न्याय विचार ।२८।

॥ इति ॥

॥ अथ १३ मू-इकीशहजार वर्ष
 तीर्थ रहसी ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

सुत्र भगवती में कह्यो, बीसम् शतक विपेह ।
 अष्टमुहेशरु वीर प्रति, गोयम प्रश्न करेह ॥ १ ॥
 जम्बू द्वीपना भरत में, ए अवशर्पिणी मांहि ।
 काल केतलु आपरो, तीर्थ रहिस्ये ताहि ॥ २ ॥

जिन कहै जम्बू भारत में, एह अवशर्पिणी गत ।
 वर्ष सहस्र इक वींश सुक्त, तीर्थ रहिस्य तत ॥३॥
 तीर्थ कहिजे कहने, हम को प्रश्न करह ।
 तमुं उक्त तीर्थ तीरगे, आगम सूत्र कहेह ॥ ४ ॥
 वर्ष सहस्र इक वींश लग, रहिस्य मूत्र उदार ।
 बहु दामें ज तीर्थ नु, सूत्र अर्थ सुविचार ॥ ५ ॥

॥ सोरसा ॥

तीर्थ आगम वारसे, अमर कोष में आखियो ।
 तीजा काण्ड मन्तारसे, यात तर्ग जाणयो ॥६॥
 निपान आगम जेहरे, मृषि सेयो जल गुरुबिषे ।
 ए चिह्न अर्थ विपहेगे, तीर्थ शब्द रह्यो तिहा ॥७॥

॥ श्लोक ॥

निपानाऽगमयो तीर्थ मृषि जुष्ट जले गुणे ॥
 इत्यमर तृतीय काण्ड याततर्ग ॥

॥ सोरठा ॥

तीर्थ नाम्न अवशरसे, हेम अनेकार्थ अरघू ।
 द्वादश नाम मन्तारसे, प्रथम नाम ए आखीयो ॥८॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थेशास्त्रे १ गुरौ २ यज्ञे ३, पुण्य क्षेत्रा ४ वतार यो ५ ।
 ऋषि जुष्ट ६ जले मन्त्रिण्यु ७, पाये ८, स्त्रीरज-
 स्यपि ९ ॥ योनौ १० पात्रे ११ दर्शनेषु १२ ॥

॥ इति ह्येव मनेकाद्ये ॥

॥ सारठा ॥

विश्व कोपरे माहिरे, तीर्थ नाम कहु शास्त्र तुं ।
 नव नामा में ताहिरे प्रथम नाम ए पेखी ये ॥६॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थ शास्त्रा १ धर २ क्षेत्रो ३ पायो ४ पा याय ५
 मन्त्रिषु ६ अवता ऋषि ७ जुष्टाभ ८ स्त्री रज ९
 सु च वि श्रुत ।

॥ विश्वे पात तत्रग ॥

॥ सारठा ॥

तीर्थ शास्त्र इम लेखरे कहुो मेदनी कोष मे ।
 दश नामा में देखरे प्रथमे नाम ए परखरो ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थे शास्त्रा १ धर २ क्षेत्रो ३ पाय ४ नारिज ५
सु च । श्रवता ऋषि ६ जुश्व ७ पात्रो = पा-
ध्याय ८ मंत्रिषु ९०

॥ इति मेदनी घान तवर्ग ॥

॥ मोरठा ॥

गुण तीसम उत्तराज्भयगरे, बोल गुनीसम वृत्ति में ।
तीर्थ शब्दे बयगरे, गणधर वा प्रवचन श्रुत ॥११॥
भगवई वृत्ति मन्तारे, तित्य गराण नों अर्थ ।
तीर्थ प्रवचन साररे, इमहिभ समवा यग वृत्तो ॥१२॥
तीर्थ प्रवचन, माररे, तेहना अव्यति रेक थी ।
सब तीर्थ सु विचाररे, तसु कर्ता तीर्थकरा ॥१३॥

॥ अत्र टीका ॥

तरति तेन मसार सागरपिति तीर्थ प्रवचन तदऽव्यतिरे
काशेह सय तीर्थ तत करण शीलत्वा तीर्थकर ।

॥ एहनों अर्थ वार्तिका करिइ कह छे ॥

तिरै तिणकरी ससार सागर इति तीर्थ ते तीर्थ में करिवानों
शील पणाईकी तीर्थकर कहियै, इम भगवती नों वृत्ति में नमो

वृत्त में लिख्यगता नौ धर्म कीयो, इमहिज समवायग भी वृत्ति
 में विषे जाग्यो, इहा तीर्थ नाम प्रवचन सूत्र तु कक्षु ते पाठ
 अर्थ द्वय सूत्र भाष्य तात्पर्य आधार श्लो छे नने अर्थ रूप सूत्र
 अरक तावका नें आधार श्लो छे ते सूत्र तीर्थ तो आधेय छे
 नो चतुर्विध सय आधार छे त आधय नें आधार ना किण ही
 प्रकारे करा अभेदापचार घनी सूत्र नें तीर्थ कायु तेह नें करि
 वा नु शील ते मटे तीर्थकर कहिये ।

इहा मुख्य अर्थ प्रवचननै तीर्थ कक्षु ते प्रवचन रूप तार्थ बहुन
 पथे प्रवचने विषे श्लो छे तिण सु सय । तीर्थ वस्तुते प्रवचन रूपी
 तीर्थ घी सय जुदो नथी ते मटे ।

॥ सारठा ॥

तीर्थ प्रवचन माग्ने, तत् करण शील तीर्थकरग ।
 नमोत्वृत्त में धारैरु राय प्रश्रेणी वृत्ति में ॥ १४ ॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्थ ते ममाग समुद्राऽनगति तीर्थ प्रवचन तत् करण शील
 स्तोष करा १२५ ॥ इति ॥

॥ एहनु अर्थ वार्त्तिका करीइ कहै छे ॥

तीर्थे तमार समुद्र इण करी इति तीर्थ प्रवचन सूत्र ते
 नुप तीर्थकरिवा ता शील घनी तीर्थकर कहिये, इहा राय
 प्रश्रेणी नी वृत्ति में प्रवचन त आगग नें तीर्थ वस्तु त आगम

द्विती तीर्थ वा कर्त्ता तीर्थकरं छे ते माटे तीर्थपरे नों अर्थ तीर्थ
कर कियो ।

॥ सौरठा ॥

पन्नवशावृत्ति मन्ताररे पनर भेद भे तित्व सिद्धा ।
प्रथम पदे अत्रवाररे वार्यो छे ते साभला ॥१५॥
सत्य प्ररूपक सोयरे परम गुरु छे तेहना ।
वचन विमल अत्रलायरे तीर्थ कहिये तेहने ॥१६॥
ते निराधार नहिं होयरे तसु आवारज मघ प्रति ।
तीर्थ कहिये जोयरे वाधुर गणधर तिहा कछु ॥१७॥

॥ अत्र टीका ॥

तीर्थते समार सागरे अनेनेति तीर्थ यथा अवास्थित सकल
जीवाजीवादि पदाद्य पररूपक परमगुरु मणीत वर्चन तद्य
निराधार न भवति इति तदाधार सद्य मघम गणधरो वा तस्मिन्
उत्पत्ताये सिद्धान्त तीर्थ सिद्धा ।

॥ एहनुं अर्थ वार्त्तिका करीई कहैछे ॥

द्वितीयै समार सागर इत्य वरी इति तीर्थ यथावास्थित
सकल जीव अजीवादिक पदाद्यां पररूपक परमगुरुना कक्षा
वचा तेह । तार्थ कहिये अने ते परम गुरुना वचन रूप तीर्थ
ते आधार विना न हुवे इत्ये सघने आधारछे ते भर्त्ता सघने
तीर्थ कहिये, अथवा मघम गणधर । तीर्थ कहिये ते संघरूप

तीर्थेनै विपै ऊपना जे सिद्ध घया ते तीर्थ सिद्ध इहां पिण
परमगुरुते तीर्थकर तेहना बचन ते आगम तेहने तीर्थ कहो, ते
आगम आधार बिना न हुवे ते आधार माटे सधने तथा प्रथम
गणधरने तीर्थ कहो ।

॥ सारठा ॥

आदृश्यक निर्युक्तिरे तास अर्थ में भावथी ।
तीर्थ प्रवचन उक्ते, समर्थ क्रोधादि जीपवा ।१८।

॥ अत्र टीका ॥

इह भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन मेव सृष्टे ।

॥ एहनु अर्थ ॥

इहां भाव तीर्थ क्रोधादि निग्रह समर्थ प्रवचन सूत्र हीज
ग्रहण करिये, इहा पिण प्रवचन सूत्रने तीर्थ कहो ।

॥ सारठा ॥

इत्यादिक बहू द्वामेरे, तीर्थ सूत्र भर्णा कह्यु ।
ते तीर्थ प्रवचन तामरे, रहिस्ये इक वीश सहस्र वर्ष १६
प्रवचन तीर्थ, सोयरे, संघ, आधारे हुवे कदा ।
किण हिक बेलां जोयरेद्रव्य लिगी आधार हूये ।२०।
जद को प्रश्न करंतरे, मुनिना गुण विन जेहनु ।
भग्यूसूत्र किम हुन्तरे, तसु उत्तर हिव साभलो २१

धुर उद्देशे व्यवहारे, बहु श्रुतं बहु आगमं भगव्यु ।
द्रव्यलिङ्गी जे धारो, मुनि प्रायश्चित्तले तिग्ग कर्ने २२
इहा द्रव्यलिङ्गी आधारे, सूत्रागम श्री जिनक्या ।
तसु श्रद्धा आचारे, विरुद्ध हुंते तो जुदो ॥२३॥

॥ वार्त्तिका ॥

व्यवहार उद्देशे पहिले कसो साधुना रूप गतिभेप धारी
बहुश्रुत बहु आगम नू जाणते कर्ने साधु आलोचना करे एहवु
कसु ए भेपधाराने आधार बहु श्रुत बहु आगम कसो छे ते माट
तेहनु जतलु भतलु शास्त्रना भयनू शुद्ध जाण पणो ते श्रुत
आगम रूप तीर्थ नू राम भगवे त माटे किण एक कामे चतु
विध सध न हुंते तो स्थिताचारी न आधारे भयचन रूप तीर्थ
ना भत हुंते एहवुं सभाविये छे ।

॥ मारठा ॥

बलि व्यवहार कथित्तरे, बहु श्रुत आगम भगव्यु ।
श्रावक पश्चात्कृत्यरे, मुनी आलोचने तिग्गकर्ने ॥२४॥
इहा ग्रहस्य आधारे, बहुश्रुत आगम जिन कया ।
तसु सायव व्यापारे, ए तो एहवी छे जुदो ॥२५॥
अर्थ रूप अलोचरे, जाण पण छे जेहवुं ।
ते निर्वाचने सोयरे, सूत्र तीर्थ छे जे भगी ॥२६॥

मिथ्या दृष्टी देखे, देश ऊग दश पूर्व वर ।
 उत्कृष्टो सपेखे, नदी माहि निहाल ज्यो ॥२७॥
 मिथ्याती आचाररे, इहा प्रभू पूर्व आसीया ।
 श्रद्धा तास असाररे, ते ती धुर शाश्रव प्रुठे ॥२८॥
 इग हिम्न पंचम् आसरे, किण वेत्यां मुनि नहि वया ।
 द्रव्य लिग्धाद्या वाररे, सूत्र रूप तीर्थ हुई ॥२९॥
 सघ आधारे जेहो, सूत्र रूप जे तीर्थ ते ।
 निरतर नहीं दीसेहो, वर्ष सहस्र इकवीश लग ३० ।
 कदही सघ आधारे, कदही अन्य आ गार हुवे ।
 सूत्र तीर्थ सुवकारे, वर्ष इकवीश हजार लग ३१ ।
 कोई कहे चिहु विव सघो, तेह मर्णा तीर्थ कहो ।
 तसु आचार सु चगरे, प्रवच तीर्थ ते मर्णा ॥३२॥
 पिण प्रवचन सु प्रशंसरे, द्रव्य लिङ्गी आवाग तसु ।
 तीर्थ तर्णोज अणरे, किग काहियै उत्तर तसु ॥३३॥
 पण्डित मर्णा विख्यातरे, शत दूजे उद्देग धुर ।
 पाउवगगन सुजातरे, भक्त पञ्चखाण ज दूमरो ॥३४॥
 सुख बचने करिन्हालरे, मरण पण्डित वे आसीया ।
 मुनि अणशण विच कालरे, करैतिको पण्डित मृत्यु ॥
 बाळ मर्णा फुन वाररे, मुख्य बचन करि ने कहा ।
 वाग मरण विन धाररे, असेयती नो बाल मृतक ॥३५॥

पूरण तापश ताहिरे, बलि जमाली तामली ।
 वार मरण में नाहिरे, पिण बाल मरण ते जाणवो ३७
 मुख्य वचन करि वाररे, बाल मरण आख्या प्रभू ।
 तिम तीर्थ संघ च्याररे, मुख्य वचन करि जाणवा ३८
 परिडत मरण पिण दांयरे, मुख वचनें करिनें कहा ।
 तिम चिहु तीर्थ जोयरे, मुख्य वचन करि जाणवा ३९

॥ एहिज अर्थ धार्तिका करिई कहे छे ॥

जिम भगवती शतक दूसरे उदेशे पहले मुख्य वचनें करी, बाल मरण वारा प्रकार नों कही अने असयनी आविरती वारा प्रकार बिना चालतोही परजाय ते पिण बाल मरण हीज छे, तथा तामली जमाली प्रमुख नों बाल मरण हीज छे पिण ते वारा में नयी कही ते माटे ये वार प्रकार बाल मरण मुख्य वचनें करी जाणवो, वा बलि परिडत मरण के प्रकार कहा येऊ ता पादोपगमन दूजो भक्तपंचराण ए पिण मुख वचनें करी कहा, जे साधु संथारा बिना भाराधक पद पायो तेह पिण परिडत मरण हिज छे जिम श्रवानुभूति तथा सु नक्षत्र मुनी नौ संथारो चाल्यो तथी ते भिगी भक्त प्रत्याख्यान पादोपगमन तो नयो पिण परिडत मरण हिज छे अने पादोपगमन भक्त पंचराण ए ये भेदे परिडत मरण कया ते मुख्य वचनें करी जाणवा, तथा भाराधना ज्ञान दर्शन चारित्र ए तीन प्रकारनी भगवती शतक षाठ में उदेशे दूसरे कही ते पिण मुख्य वचनें करी जाणवो अने बलि तिणाहिभू उदेशे अत ते ममाकित रहित

अने शील कृपा सहित ने देश आराधक कता तिहा वृत्तीकार
 कह्यो ए वाल तपस्वी थोडो अक्ष मुक्ति मार्ग नौ आराधै एह
 वा अर्थ कियो छै जिम ज्ञान रहित शीम सहित वाल तपस्वी
 मोक्ष मार्ग नौ अश आराधै ते देश आराधक छै पिण तीन
 आराधना में नयी तिम द्रव्य लिङ्गी में आधार प्रवचन सूत्र ते
 तीर्थ नौ अश सभैव पिण ते चार तीर्थ में नघी ।

॥ सोरठा ॥

वर्ष इक्कीस हजारै, तीर्थ रहिस्यै न्याय तसुं ।
 एम सभैव सारै, फुन बहु श्रुत कहै तेह सत्य ४०
 वर्ष इक बीस हजारै, तीर्थ रहिस्यै इम कह्यो ।
 पिण चिहु तीर्थ सारै, रहिस्ये इम आरयो नयी ४१
 ते मांटे अवधारै, तीर्थ प्रवचन सूत्र छै ।
 कदहि सव आधारै, द्रव्य लिङ्गी आनार कादि ४२

॥ दोहा ॥

सूत्र भगवती नौ पवर, मम कृत जोड विपेह ।
 बलि कर्म तीर्थ न्याय कह्यु, ते इहा ग्रहण करेह ४३

॥ अथ चौदम आगमा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

पत्र अने चालीस में, जे विहु शरणा विचार १ ।
 नाग भक्त परिज्ञान बलि, फुन पडन्नो मंथार ३ ॥ १ ॥
 जीत कल्प ४ पिड निर्युक्ती ५ पत्र साग कल्प अवलोय ।
 ए सुट ना नन्दी विषे, साग नहीं कू कोय ॥ २ ॥
 महा निशीथ विषे कहुं द्वितीय अध्ययन मभार ।
 कृ लिखत दोष देगे नहीं, तसु कारणा अववार ॥ ३ ॥
 गहिभ महा निशीथ मे, किहायक अर्द्ध शीलोग ।
 किहां श्लोक किहा अक्षर नीं, पक्की उंली प्रयोग ॥ ४ ॥
 किहायक पानों अर्द्ध हीं, किहां पत्र वे तीन ।
 गत्यो ग्रय इम आदि बहु, इह विष कहुं सुचीन ॥ ५ ॥
 बलि कहु तृतीय अध्ययन में, ए पुस्तकरै माहि ।
 चेट्टे इक पानायकी । बीजो पानो ताहि ॥ ६ ॥
 तेमाटे ए सूत्रना, आलावा न पामेह ।
 तिहां भणगा द्वार सूत्रातयां, सा मयट लिख्यु बुवै जेह ॥ ७ ॥
 दोष न देवो तेहनों, खड खड थई एह ।
 पत्र सदया साया बलि, जीव उदेहि जेह ॥ ८ ॥

हरी भद्र निज मतिकरी, सांधी लिख्युज ताम ।
 इमकहु महा निशीथ में, बलि अन्य आचार्य नाम ६
 तिणसू महा निशीथ पिण, डोहलाणो छै एह ।
 सर्व मूलगो नहि रह्यो, निपुण विचारी लेह ॥१०॥
 सेपरह्या खट तेह में, काइक- काइक बाय ।
 अङ्गसूं न मिलै तेहवच, किम मानी जे ताहि ॥११॥
 टीका, चूरशि दीपिका, भाष्य निर्युक्ती जाण ।
 किणही करी दीसै नथी, तिणसू एह अप्रमाण ॥१२॥
 एकादशजे अगथी, मिलता वचन सुजाण ।
 सर्वमानवा योग्यमुक्त, पइना प्रमुख पिआण ॥१३॥
 धुर बे अंग नीं वृत्ति जे, शीलाचार्य किछ ।
 अभय देव सुरें करी, नव अंग वृत्ति प्रसिद्ध ॥१४॥
 फुन अभय देव सुरें रची, प्रथम उपाङ्ग प्रबंध ।
 चद्रसूरि विरचित वृत्ति निरावलिया श्रुतस्कंध १५
 शेष उपाङ्ग अरु छेदनी, मलमा गिरिकृत जाय ।
 हेमाचार्य वृत्तिकरी, अनुयोग द्वारनीसोय ॥ १६ ॥
 हरी भद्र सुरे करी, दशव, कालिक, वृत्ति ।
 भाष्य अने बलि चूर्णापिण, पूर्वाचार्यरुत ॥ १७ ॥
 तिम ए खटनी नविकरी, पूर्वा चार्थे जोय ।
 तिणसू तिणें नमानीया, एहवृ दीसे सोय ॥ १८ ॥

शेष रहया वत्तीमजे, मानण योग आरोग्य ।
एहथी मिलता अन्यापिण, छै मुक्त मानणयोग्य १६

॥ इति पैतासोम वत्तीस भागवाधिकार ॥ १ ॥

॥ अथ पनरम मुख वस्त्रिका अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

इंद्रभृति नै आखियो, मृगा राणी ताहि ।
सुहपोत्तिया इ करी, मुख वायो मुनिराय ॥ १ ॥
तेमुखकहिये केहने, उत्तर तहु अवलोय ।
नाकतंगों ए नाम मुख, न्यायविचारी जोय ॥ २ ॥
दुर्गन्ध आवै नाकनै, तेमाटे सुविचार ।
नाक बाधवा नी कही, राणी मृगा जिवार ॥ ३ ॥
ज्ञाता अध्ययन आठमें, दुर्गन्ध व्याप्या ताहि ।
खट राजा मुख दांकीया, ते दुर्गन्ध नाके आय ।
ज्ञाता नवम अध्ययनमें, दुर्गन्ध व्याप्या न्हाल ।
मुख दांकीया आख्यातिहा, जिनभृषने जिन पाला ॥ ४ ॥
ज्ञाता अध्ययन बारमें, जे जित शत्रूराय ।
मुख दांके इमें आखीया, दुर्गन्ध व्यापे त्हाय । ६ ॥
मुखनौ अवयव नाकरू, तेनाक भणी मुखख्यात ।
वारुन्याय विचार नै, समझो सुयुग सुजात । ७ ॥

होट हडवटी नाक फुन, चक्षु गाल, निलार ।
 मुखना श्रवयव, ते भृगी, मुखकहिये सु विचार ।
 धुरश्रङ्ग प्रथम अज्जयण मँ, द्वितीय उद्देश उद्दंत ।
 पृथिवी वेदन ऊपर, श्रध पुरुष हृष्टन्त । ८ ।
 पंगसू लेई शिरलगे, तनु द्वात्रिंशत् स्थान ।
 भालाभू भेदे वलि, सडगे छेदे जान ॥ १० ॥
 तिहां होटहडवटी नाक फुन, आंखजीभनें दन्त ।
 गाल निलारश्ररु कर्ण फुन, जृ जृश्रा नाम कथन्त ११
 ए मुखनां श्रवयव कहया, पिण्ण मुख नों नकह्यो नाम ।
 ते माटे ए सहु भृगी, मुख कहिये छे ताम ॥ १२ ॥
 द्वादश आंगुल मुख कहयो, नव मुख नों सहु देह ।
 अनुयोग द्वारे आखियो, देखो पाद विपेह ॥ १३ ॥
 ललाटपी लेई करी, द्वादश आंगुल जाण ।
 नाक होट नें हडवटी, ए मुख तगु प्रमाण ॥ १४ ॥
 गर्गाचार्य ना कुशिप्य, मुखनें विपे विकार ।
 भृकुटी फेरि कहया प्रभू, उत्तरा व्ययन मकार ॥ १५ ॥
 मुख नों देश निलाड छे, ते निलाड नें मुख ख्यात ।
 भृकुटी ललाट नें विपे, प्रत्यक्ष ही, देखात ॥ १६ ॥
 द्दाम द्दाम सूत्रं कह्यु, त्रिबलि भृकुटी ललाट ।
 निरावालिया दिक नें विपे, प्रभुजी आख्या पाठ ॥ १७ ॥

तिमज मृगा राणी तदा, नाक भणी मुख ख्यात ।
 ते दुर्गन्ध प्रति टालवा, पेखो तज पख पात ॥ १८ ॥
 कर रासे मुख वस्त्रिका, जसु तीखो उपयोग ।
 तो पिण नहि अटकायतसुं, नहिं मुक्त खंय प्रयोग १९
 तीखो नहिं उपियोग तसु, जतना काज सुजोय ।
 मुस बाधे मुस वस्त्रिका, तो पिण दोपन होय ॥ २० ॥
 मुख बाधे दोरै करी, कोई कहै किहा रयात ।
 सांचुजी सांचु कहु, सांचु प्रश्न सुजात ॥ २१ ॥
 नहिं तीखो उपियोग तसु, मुस बाधे सुविचार ।
 वायु नीं जतना भणी, पिण नहिं छै शृङ्गार ॥ २२ ॥
 सूठ तणों जे गांठियो, गणी देवाछि सयाद ।
 भोगवणी भूनी गया, संद्या आयो याद ॥ २३ ॥
 जाण्यो बुद्धि हीणी पढी, लिख्या सुत्र सुख राश ।
 वीर निर्वाण गया पछै, नवसय अस्सी वाश ॥ २४ ॥
 तिम तीखो उपयोग अति, रहतो जाणै नाहि ।
 टोरा सू मुख वस्त्रिका, बाधै छै मुनिराय ॥ २५ ॥
 अशणा दिक प्रति बहिरतां, पांती करतां सोय ।
 अन्य साधु प्रति वीगता, चरचा करतां जोय ॥ २६ ॥
 मुनि नै कार्य भलावतां, इत्यादिक सु प्रयोग ।
 मुख बाध्या चिन किमरहे, अति तीखो उपियोग

तिण, सु-यत्तना कारणे, डोरो घाली सोय ।
 मुख बांधे मुख वस्त्रिका, और कारण नाहि कोय २८
 जादि कहै डोरो किहां कह्यो, तसु कहिये इम वाय ।
 कान विषे घाले तिका, किसा सूत्रे मांहि ॥ २९ ॥
 मुख बांधे डोरे करी, तसु करै निन्दा तात ।
 कान बंधावे प्रगट ए, आ किसा सूत्र नी वात ३०
 तर्क करे डोरा तणी, कहे किण सूत्रे ख्यात ।
 कान बंधावे तेहनी, क्यू नहि पूछे वात ॥ ३१ ॥
 मोर पृच्छनां देश प्रति, घाली कर्ण मन्कार ।
 उदक यकी छाट्या यकां, फूलै तेह तिवार ॥ ३२ ॥
 इम नित प्रति बहु खपकरी, कर्ण बधाय विशेष ।
 इम घाले मुख वस्त्रिका, किसा सूत्र में लेख ॥ ३३ ॥
 कहे बचन शुद्ध यतना अर्थ, घालां कर्ण मन्कार ।
 तो डोरो पिण यतना अर्थ, न्याय सरिपो धार ॥ ३४ ॥
 उदक तणां घट नें विषे, डोरी बांधे तेह ।
 किसा सूत्र में ते कह्युं, देखोजी चित देह ॥ ३५ ॥
 तथा तर्पणी प्रमुख जे, डोरी बांधे तास ।
 ते किण सूत्रे आखीयो, जोवो हिये विमास ॥ ३६ ॥
 कम्बर दिछाणा नी करै, तसु डोरी बांधेय ।
 ते पिण किण सूत्रे कह्युं, न्याय विचारी लेह ॥ ३७ ॥

बालि सीराणा - बां वता, डोरी यर्काज जोय ।
 ते पिण किण सूत्रे कहु, उत्तर आपो मोय ॥ ३८ ॥
 बालि चिरमली सूत्र-में, आली श्री, भगवान् ।
 तसु डोरी बाधे तिका, फिसा सूत्र में जान ॥ ३९ ॥
 पुस्तक नें पूठा तणे, पहलारे पहिआण ।
 डोरी बाधे छे तिका, फिसा सूत्र में बाण ॥ ४० ॥
 बालि लेखणा सपना, कलम दान कहिवाय ।
 डोरी बाधे तह नें, फिसा सूत्रे म्हायें ॥ ४१ ॥
 लिखवारी पाठी तणे, डोगी प्रति, बाधेह ।
 फिसा सूत्र में ते कहु, देखो, तसु लगेह ॥ ४२ ॥
 तथा लीक पाना तणे, डोरी श्री पाडेह ।
 फाट्या नी पाठी करे, फिसा सूत्र में तेह ॥ ४३ ॥
 कारण में पग प्रमुपे, पाठी बाधे दसु ।
 डोरी बाधे तेह नें, फिसा सूत्र में लेख ॥ ४४ ॥
 गोशरै डोरया थकी, पात्रा बाधे तह ।
 फिसा सूत्र माठी कहु, उत्तर आपो एह ॥ ४५ ॥
 डोरा सू मुह पोतिया, बाधे जयणा काज ।
 तर्क करे तसु पुछि ए, इतना बोल समाज ॥ ४६ ॥
 कहे अष्ट पहिर बाध्या रहै, त किण सूत्रे ख्यात ।
 तो एक पहिर बाधे तिका, फिसा सूत्र अउदात ॥ ४७ ॥

चलांग में इक पहिर लग, कर्ण घाल बाधंत ॥
 ते पिण्य किणी सिद्धान्त में, भाष्यो नहिं भगवन्त ४८
 अष्ट पहर बांध्यां थकां, दोष घणों जो होय ।
 तो एक पहर बांध्यां थकां, दूषण थोडो जोय ॥४९॥
 जो एक पहर बांध्या थकां, दोष नहिं छे कोय ।
 तो आठ पहर बांधे तसू, दोषण किण विध होय । ५०
 डोरो घाले कर्ण में, तेहनों दोषण होय ।
 तो कर्ण विषे मुख वस्त्रिका, घाल्या दोषण जोय । ५१
 जो कर्ण विषे मुख वस्त्रिका, घाल्या दोष न कोय ।
 तो डोरो घाले कर्ण में, तो पिण्य दोष न होय ॥५२॥
 कोई कहे मुख वस्त्रिका, अष्ट पहिर लग एह ।
 बांध्या कफ में ऊपजे, जीव असखित जेह ॥ ५३ ॥
 तो मुनि अज्मा तनु विषे, थयो गुम्बडो कोय ।
 रावि रुधिरै ऊपरै, पांठो बांधे सोय ॥ ५४ ॥
 जीव समुच्छिम ते विषे, उपजे तिणर लेख ।
 पाठरै लागी रहै, रुधिर रावि सपेख ॥ ५५ ॥
 जब कहे तनुनी गर्म थी, जीव न उपजे आय ।
 तो कफ में किम ऊपजे, एक सरिपो न्याय ॥५६॥
 पांठे जीव न ऊपजे, तो कफनी क्यु ताण ।
 समभो जी समभो तुम्हे, समभो चतुर सुजाण । ५७ ।

तनु असज्माई मुनि तर्णें, इक विध व्रण संवेद ।
 रत्नशला नें व्रण फुन, अज्मा नें वे भेद ॥५८॥
 ए तनु असज्माइ विपै, मुनि अज्मा नें त्हाय ।
 निज निज स्थानक नें विपै, करवी नहिं सज्माय ५९
 ए तनु असज्माई विपै, मुनि अज्मा नें ताहि ।
 देवी लेवी वांचणी, कर्पै माहो माहि ॥ ६० ॥
 ववहार उद्देशे सान में, इम भापी प्रभु वाणी ।
 राखो जिन वच आस्या, चमको मती सुजाण ॥६१॥
 तनु सलम वस्त्र नें विपै, जो जतु उपजेह ।
 तो माहों माहीं वांचणी, तसु आज्ञा किम देह ॥६२॥
 जो उघाडै मुख बोलिया, न मरै वायु काय ।
 तो वखाण में मुह वस्त्रिका, ते वावै किणन्याय ६३
 फुक देणी वरजी प्रभू, वायु नें अतिकार ।
 दशवै कालिक देखलो, तुर्य अध्येन मभार ॥६४॥
 मुख नें वायु करि मरै, वायु जीव विचार ।
 दशमें अङ्गे देखलो, पहिले आश्रव टार ॥ ६५ ॥
 सूत्र भगवती नें विपै, सोलम शतक मभार ।
 टितीय उद्देशे भाखीयो, कहिए ते अतिकार ॥६६॥
 शक उघाडै मुख लवै, भाषा सावद्य सोय ।
 हस्त वस्त्र मुख देवदै, निरवध भाषा होय ॥ ६७ ॥

वृत्तिका इम आखीयो, जीव संरक्षण सोय ।
 निरग्र भाषा जागवी, अन्या भावद्य होय ॥६८॥
 विक्रिन्दी ना पञ्चत्तगा, तेहना स्थानक जेह ।
 ते सुरलोक विपै नयी, पन्नगणा द्वितीय पदेह ।६९।
 धर्म सम्बन्धी वार्त्ता, करै शक्र जेहवार ।
 बोलै मुग द्वाकी तदा, ते निरवद्य वच सार ॥७०॥
 ससारिक जे वार्त्ता, करै शक्र जेहवार ।
 वदे उपाडि मुख तदा, ते साग्रद्य वच धार ॥७१॥
 तिण कारण वायु तणी, दया अर्थ मुने राज ।
 मुलबाये मुह पोत्तिया, पिण अवर नहिं छे काज ७२

॥ इति ॥

॥ अथ सतरमू स्याद्वाद अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहे भगवंत नों, स्याद्वाद मत जोय ।
 एकान्तिक कहिबू नहीं, तमु उत्तर अग्रलोय ॥ १ ॥
 स्याद कथचित जाणव, किण ही प्रकार करेह ।
 वदव कहिबू वादते, स्याद्वाद छे एह ॥ २ ॥
 कहिये किणी प्रकार करि, ते स्याद्वाद कहिवाय ।
 न्याय कहु छु तेह नों, साभल जो चितल्याय ॥३॥

सूत्र भगवती नै विपै, शतक सात में सोय ।
 द्वितीय उद्देश भाखीयो, जीव प्रथम अव लोय ॥ ४ ॥
 किणी प्रकार करि प्रभु जीव सास्वता ख्यात ।
 किणी ही प्रकार असास्वता, आख्या श्री जगनाय ५
 द्रव्य थकी तो सास्वता, भाव थकी सु विचार ।
 असास्वता प्रभुजी कह्या ग स्याद्वाच्यं मत सार ॥६॥
 सूत्र भगवती नै विपै, शतक चौद में सार ।
 तुर्य उद्देश भाखीयो, परमाणु अविचार ॥ ७ ॥
 कह्यो परमाणु सास्वतो, किणी प्रकार करेह ।
 किणी प्रकार असास्वतो, हिव तसु न्याय कहेह ॥८॥
 द्रव्य थकी तो सास्वतो, परमाण प्रति ख्यात ।
 न मिटे परम अणु पणों, किणी ही काल विख्यात ॥९॥
 वर्णादिक नै पञ्च करि, असास्वता अव लोय ।
 स्याद्वाच्यं वच एह छे, न्याय दृष्टि करि जाय ॥ १० ॥
 वृद्धरूप माहि कह्यु, पञ्चमुद्देश मकार ।
 प्रथम दोहर अशुणादि प्रति, गहिरी नै अणु गार ॥११॥
 तुर्य पहिर राखी करी, ते अशुणादि प्रतेह ।
 भोगवणो कल्पे नहीं, सुखे समाये एह ॥ १२ ॥
 गाढा गाढ आतक करि, तुर्य पहिर में तेह ।
 भोगवणो कल्पे तसु, स्याद्वाच्यं वच एह ॥ १३ ॥

प्रथम पहिर बहिरी कगी, कारण पडियां ताहि ।
 रात्री विषे जे भोगवै, ए स्यादाद वच नाहि ॥१४॥
 तुर्य पहिर आज्ञा कही, निग नों आज्ञा नाहि ।
 तिग सु निग नहि भोगवै, कारण पडियां ताहि ॥१५॥
 द्वितीय उद्देशे नें विषे, बृहत्कल्पै माहि ।
 जल वा मदना घट तिहा, रहिबु कल्पे नाहि ॥१६॥
 अन्य स्थान न मिलै कदा, तो इक वे निशि जाग ।
 रहिबु कल्पे प्रभू कह्यो, ए स्यादाद पहि छाग ॥१७॥
 तिग हिज उद्देशे आखियो, जे आखी निशि माहि ।
 दीपक वा अग्नि बले, तिहा नहि रहिबु ताहि ॥१८॥
 जो अन्य जागा नहि मिलै, तो इक वे निशि । तग स्थान
 रहिबु कल्पे प्रभू कह्यो, ए स्यादाद वच जान ॥१९॥
 मुनि नें संघट्टो स्त्री तणों, करिवो बरज्यु स्वाम ।
 सोलमा उत्तम अध्ययन में, गलि बहु सूत्रें ताम ॥२०॥
 बृहत्कल्प छटे कह्यु, नदी प्रमुख थी वार ।
 अजम्भा प्रति काढे मुनी, ए स्यादाद मत सार ॥२१॥
 ग्रहस्य पुरुष वा स्त्री भणी, नदी प्रमुख थी जोय ।
 काढे मुनि वच एह बू, स्यादाद नहि कोय ॥ २२ ॥
 दशवै कालिक देखल्यो, तुर्य अध्ययन मकार ।
 साचित उदक नहिं सघट्टे, ए जिन आज्ञा सार ॥२३॥

बृहत्कल्प तीजे कह्यु, विहार कारण थी जोय ।
 नदी उतरणी प्रभुकही, ए स्यादाद वच होय ॥२४॥
 मरणांत कष्टे मुनि भर्णी, सचितोदक अवलोय ।
 भोगवण प्रभू एहवु, स्यादाद नहिं होय ॥२५॥
 उत्तराध्ययन कथा विपे, परिशह द्वितीय प्रसिद्ध ।
 मर्यान्तकष्टे तुलक शिष्य, सचितोदक नहिं पिद्ध २६
 शत अष्टादश भगवती, दशम उदेषे देण ।
 पूछ्यो सोमिल प्रभू प्रति, जे स्थु छो तुम्ह एक ॥२७॥
 तथा तुम्हे स्थू दाय्य छो, वा अक्षय तुम्ह होय ।
 फुन स्थू अव्यय छो तुम्हे, अथ स्थित तुम्ह जोय २८
 के तुम्ह अनक भूत फुन, भाव भविक अथ धार ।
 वीर भर्णी खट प्रश्न ए, सोमल पूछवा सार ॥२९॥
 वृत्ति का कळ्या तव प्रभु, स्यादाद प्रति त्हाय ।
 सर्प दोष गोचर रहित, अत्रि लवी काहिवाय ॥ ३० ॥
 इक पिण्ड हू छू सो मिला, वायत बलि अनेक ।
 भूत भाव भात्री अपि, हू छू डम फलु, पेस ॥ ३१ ॥
 किण्ण अर्थे प्रभु इम कह्यु, जाव भविक हू सोय ।
 प्रभु कहै द्रव्यार्थ करी, इक पिण्ड हू अवलोय ॥ ३२ ॥
 ज्ञान दर्शन करि दाय्य हू, प्रदेशार्थ करि त्हाय ।
 अक्षय हू अव्यय अपि, अथ स्थित पिण्ड

अनेक भूत भावी अपि, हू उपियोग करेह ।
 न्याय सहित उत्तर छवू स्यादाद वच एह ॥३४॥
 इमज थावरचा सुक प्रते, ज्ञाता पत्रम् लेह ।
 इमज पार्श्व सोमिल प्रते, पुष्पिदा विपे कहेह ॥३५॥
 सहु दोषण करि सहित छे, स्यादाद वच एह ।
 पिण दोषण कर सहित वच, स्यादाद न कहेह ॥३६॥
 पूर्वापर अविरुद्ध वच, स्यादाद मति माहि ।
 पिण पूर्वापर विरुद्ध वच, स्यादाद वच नाहि ॥३७॥
 इत्यादिक प्रभू आखिया, किण ही प्रकार करेह ।
 नित्य अनित्यादिक जिके, स्यादाद वच तेह ॥३८॥
 पिण ज्या किण ही प्रकार करि, कुशील में नाहि धर्म ।
 वलि नाहि किण ही प्रकार करि, शील विपे अघ कर्म
 अज हिंसादिक में नहीं, किण ही प्रकारे वर्म ।
 किण ही प्रकार वचै नही, सवरथी अघ कर्म ॥४०॥
 किण ही प्रकार हुवे नहीं, सावद्य माहि वर्म ।
 किण ही प्रकार वचै नहीं, निरवद्य थी अघ कर्म ॥४१॥
 किण ही प्रकार हुवे नहीं, जिन आज्ञा विन धर्म ।
 किण ही प्रकार नहीं वचै, आज्ञा थी अघ कर्म ॥४२॥

॥ अथ १७ मूं विपवादे अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै विपवाद मत, प्रभु नो समय विपेह ।
 किण सूत्रे वच जे कह्यु, किहा अन्यातेह ॥ १ ॥
 किण सूत्रे वच जे बह्यु, ते वच अन्य सूत्रेह ।
 विगटे ते विपवाद कहै, उत्तर तास सुणैह ॥ २ ॥
 अखर सप्त बद्धी कही, जिन चाणी सुखदाय ।
 सप्त नये करि सत्य वच, तसु विपवाद न कहाय ॥ ३ ॥
 किण ही सूत्र विपे प्रभु, आरया वयण विरयात ।
 विगटे जे अन्य सूत्र यो, ते विपवाद वच थात ॥ ४ ॥
 विपवाद वच एह तो, प्रभु नो नहिं ऊ कोय ।
 नच केवल ज्ञानी तर्णा, व्यभचारिक नहि होय ॥ ५ ॥
 विपवाद जोगे करी, अशुभ नाम कर्म वर ।
 अष्टम शतके भगवती, नयमे उद्देशे सब ॥ ६ ॥
 विपवाद ए अशुभ छै, किण थी अशुभज वध ।
 तो किम हुये प्रभुजी तर्णा, विपवाद वच मद ॥ ७ ॥
 अ विपवाद जोगे करी, नाम कर्म शुभ वर ।
 अष्टम शतके भगवती, नयम उद्देशे सब ॥ ८ ॥

दशमा अङ्ग में देखलो, ससमर्थने मांहि ।
 सत्यवादी छे तेहनु, विपत्ताद वच नाहि ॥ ६ ॥
 सत्यवादी ससार का, तसु विपत्ताद वच नाहि ।
 तो प्रभृजी नां वयण ते, विपत्ताद किम याय ॥१०॥
 पूर्वापर आविरुद्ध वच, प्रभृ ना समवायङ्ग ।
 वच अतिशय पेंतीस में, अतिशय नयम सुचङ्ग ॥११॥
 उत्सर्ग में आज्ञा किहा, किहा आज्ञा अपत्ताद ।
 इकसू इक विगटै न ते, पिण नहि छे विपत्ताद ॥१२॥
 उत्सर्गें आज्ञा नथी, ते कार्य नों जान ।
 अपत्तादे आज्ञा कही ने विपत्ताद मत मान ॥१३॥
 विपत्ताद रे ऊपर, कहिये हेतु सार ।
 निपुण न्याय वच सभली, टैप हिये मत वार ॥१४॥
 बार मास हें वर्ष ना, तेह विपे सुविमान ।
 अधिक वर्म करिवा तणु, मामभाद्वे ज्ञान ॥१५॥
 तेह विपे पण प्रगट हें, अविक धर्म ना दीह ।
 पर्व पर्युपण प्रसिद्ध ही, पोसह प्रमुख सुलीह ॥१६॥
 ते पर्युपण नें विपे, कल्प सूत्र व्याख्यान ।
 तेह विपे ततका कही, सुण ज्यो सुगण सुजान ॥१७॥
 प्रभृ दशमा सुर लोक थो, भय स्वत भोग्य तेह ।
 चरियां पहला नें पछे, जाणयु अवधि करेह ॥१८॥

चवन समय नवि जाणोवों, सूत्तम काल विशेष ।
 इम हिम्पनरमज्जयण मों, द्वितीय आचारङ्ग लेख । ६
 कल्प अने धुर अङ्ग मों, चवन काल त्रहु घार ।
 एक सरिण आखीया, हिम साहरण विचार ॥२०॥
 गर्भ साहरण क्रियो तिहा, कल्प सूत्र मों स्यात ।
 सहस्रिया पहिला पळे, जाण्यु श्री जगनाथ ॥२१॥
 सहस्रता वेला प्रभू, वर्त्तमान कालह ।
 जाण्यु नाहि एहवु कहु, कल्प सूत्र वच एह ॥२२॥
 आचारङ्ग पत्रम मों कव्यो, साहागा प्रथम पश्चात ।
 वलि साहरता वार पिण, जाण्यु श्री जगनाथ ॥२३॥
 चवन काल तो समय इक, छद्मस्थ नों उपयोग ।
 असंख समय नृते भणी, चवनन जाण्यु जोग २४
 सुर कार्य्य साहरण ते, समय असंख सुजाण ।
 तिण सु साहरता प्रभू, जाण्यु अवधि प्रमाणा ॥२५॥
 साहरतां जाण्युं नहीं, कल्प सूत्र मों स्यात ।
 साहरता जाण्युं कहु, धुर अमे जगनाथ ॥२६॥
 कल्प सूत्र धुर अङ्ग मों, ए विहु वच आख्यात ।
 वच साचो भूटो क्रिसो, देखो तज पल पात ॥२७॥
 वीर प्रभूतो एक ह्ये, जाण्यु धुर पग स्यात ।
 नवि जाण्यु कल्प कहु, विहु साचा किम थात ॥२८॥

उभय मांहिलो एकतो, मिथ्या वचन विशेष ।
 देखोजी देखो तुम्हे, देखो तज मत टक ॥ २६ ॥
 जाण्या धुर अङ्गु कृह्या, तेह सत्य वच जाण ।
 नवि जाणथु कर्ते कहु, ते वयणु अप्रमाण ॥ २७ ॥
 बृहत्कृत्परै पच भैं, तनु कारण थी त्हाय ।
 सूर्य ऊगो जाणो न, आहार लियो मुनिराय ॥ २८ ॥
 भोगवता शक्का पडी, रवि ऊगो के नाहिं ।
 अथवा सूर्य आयम्यो, तथा आयम्यो नाहिं ॥ २९ ॥
 शक सहित इम भोगव्या, रात्री भोजन पिरड ।
 भोगवतो पामें तिफो, गुरु चोमासी दण्ड ॥ ३० ॥
 इम हिम्न कारण विन रवि, ऊगो जाणो त्हाय ।
 आहार ग्रहो पिरण शङ्क सहित, भोगविया दंड आय ३१
 दण्ड उद्देश निशीय भैं, रात्री भोजन ताय ।
 कारण सूपिंग भोग व्या, दण्ड चोमासी आय ॥ ३२ ॥
 निशीय उद्देशे वारभे, चुर्णि विपे अरलोय ।
 निशि भोजन कारण थकी, भोगवणो न्ह्यो सोय ३३
 इम हिम्न बृहत्कृत्प तर्णी, चुर्णि वृत्ति विपेह ।
 रोगादिक कारण मुनी, निशि भोजन जीमेह ॥ ३४ ॥
 सूत्रे निशि भोजन प्रते, वज्यो ते तो शुद्ध ।
 चुर्णि विपे ए म्थापियो, तेह प्रत्यक्ष विरुद्ध ॥ ३५ ॥

निशीथ उद्देशे पन्नर में, आखी श्री जिन वाण ।
सचित अम्ब चूसै मुनि, दग्द चौमाभी जाण ।३६।
आरयो चूर्णि में तिहा, शिष्य अपहित सोय ।
रोग मिटावा निमित्तै, वैद्य कथन थी जोय ॥४०॥
अथवा मारग चालता, उगोदगी छै तेह ।
अणसस्तै जे भोगवै, विरुद्ध कहिने जेह ॥ ४१ ॥
सूत्रे वरज्यो सचित अम्ब, चूर्णिकार फुन, तेह ।
कारण पडिया चूसवू, कह्यु विरुद्ध वच येह ॥४२॥
सचित रूख मुनि जो चढे, तो चौमासिक दग्द ।
निशीथ उद्देशे वारमें, श्री जिन वयण सुमग्द ४३
सूत्र निशीथ तणी जिका, चूर्णि विपे डम वाय ।
स्वान प्रमुख ना भय हरण, दग्द ग्रहे मुनिराय ।४४।
प्रथम अचित दाडो ग्रहे, पछै मिश्र परि तेण ।
प्रथम परित्त यावत पछै, अनन्त फायनुंजेण ।४५।
रूख ऊपर मुनि नवि चढे, ए जिन आज्ञा शुद्ध ।
चूर्णिकार कह्यु सचित दग्द, ग्रहे ते वयण विरुद्ध ४६।
ऋषभ भरत फुन बाहुबलि, ब्राह्मी सु-दरी वेह ।
लख चौरासी पूर्व नू, आयु तूर्य अङ्गेह ॥ ४७ ॥
ऋषभ मग्दल माहि कह्यु, ऋषभ देव भगवान ।
भगत विना बलि ऋषभ ना, पूत्र निन्नाणु जान ।४८।

भरत तथा वलि अष्ट सुत, अष्टोत्तरसौ एह ।
 एक समय सीमा तीको, विरुद्ध वचन कै जेह । ४६ ।
 ऋषभ बाहुबलि आउपा, पूर्व चौरासी लक्ष ।
 किमतसुं शिव गति इक समय, पेखे तज मतपक्ष ५०
 शत चौदश में भगवती, सप्तम उद्देश विषह ।
 वृत्ति विषे आख्यो तिको, साभल जो वित देह ॥ ५१ ॥
 पदरसौ प्रति बोधिया तपस गौतम साम ।
 प्रभूये आवत पारिण्या, केवल युग अभिराम । ५२ ॥
 भां साधो बन्दो तुम्है, श्री जिन प्रति शिरनाम ।
 इम गौतम आखे कते, जिन भाषे गुण वाम ॥ ५३ ॥
 ए केवल ज्ञानी तर्णी, हे गौतम मुनिराय ।
 लागै तुम्ह आशानना, वृत्ति विषे ए वाय ॥ ५४ ॥
 दशरे कालिक सूत्र में, नव में भयण विषह ।
 प्रथम उद्देशे ज्ञारमी, माया में इम लेह ॥ ५५ ॥
 विप्र अग्निहोत्री तिको, अग्नि प्रते शिरनाम ।
 आहुती पद मत्र पद, वृत्तादि सींचे ताम ॥ ५६ ॥
 आचार्य प्रते इह विषे, वारुं शिष्य विनीत ।
 वर अनन्त ज्ञानी कते, आराधे इह रीत ॥ ५७ ॥
 हरीभद्र सूर करी, वृत्ति विषे इम उक्ति ।
 शिष्य केवल ज्ञानी कते, को गुरु नी भक्ति ॥ ५८ ॥

कष्टु वृत्ति में जिन प्रते, चंदो गौतम, ख्यात ।
 तसु प्रभु कही आशातना, केम मित्ते ए वात ॥५६॥
 गुरु वेद, शिष्य केवली, सूत्र विषे इम ख्यात ।
 तो प्रभु वेदो इम कह्या, आशातन किम थात ॥६०॥
 मचित आहार सुनि ने अभक्त, पंचम अङ्ग प्रबंध ।
 ज्ञाता अन्धेने पंचमे, निरावालिया श्रुतस्कध ॥६१॥
 द्वितीय आचारङ्ग लागता, आधा करमी आहार ।
 अप्राशुक पिण वृत्ति में, भोगवणु कतु वार ॥६२॥
 कष्टो र्थफासु अभख जिन, वृत्ति विषे फुन तेह ।
 कष्टुभोगवणो कारणौ, विरुद्ध चचन के एह ॥६३॥
 शन पण बीसम भगवर्ता, छट्टा उद्देशा माहि ।
 बकुश उत्तर गुण तर्णौ, पाडि शेवी कष्टु ताहि ॥६४॥
 तिणज उद्देशे वृत्ति में, बकुश प्रति इम ख्यात ।
 मूल उत्तर पाडिशेविये, तेह विरुद्ध सजात ॥६५॥
 ठाणा अङ्ग ठाणै चतुर्थ, प्रथम उद्देशे पेल ।
 सनत कुमार तर्णी कही, अत कृया सुविशेख ॥६६॥
 आवण्यरु निर्युक्ती में, उत्तराधेन वृत्ति माहि ।
 तीजे स्वर्ग गयु कष्टो, मिले नहि ए वाय ॥६७॥
 अष्टम् शतके भगवती, द्वितीय उद्देशा माहि ।
 एकेन्दो निश्चय रुगी, कह्या अज्ञानी ताहि ॥६८॥

कर्म, ग्रन्थ में देखल्यो, 'एकेन्द्रिरे' माहि ॥
 वे गुण ठाणा आखाया, तेह विरुद्ध कहाहि ॥६६॥
 शतक सात में भगवती, छट्टे उद्देश सवेद ।
 छट्टे आर वेतादय विन, सहुं गिर हुस्ये विच्छेद ॥७०॥
 प्रकरण में शत्रुज गिरि, सप्त हस्त परिमाण ।
 सहिस्ये आख्यो तेह वच, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिच्छाण ॥७१॥
 अष्टम् शतके भगवती, नवम् उद्देश विपद ।
 माया गूढ माया करै, वचन अलीक वदेह ॥७२॥
 कूडा तोला नें बलि, कूडा माप करेह ।
 ए च्यारुई प्रकार करि, तीरि आयु ववेह ॥ ७३ ॥
 ए चिहु कारण अशुभ यी, तीर्यच आयु वन्व ।
 तिण कारण तिर्यच नू, आयु पाप कथिध ॥ ७४ ॥
 कर्म, ग्रन्थ माही बह्यो, तिर्यच आयु पुन्य ।
 ते माटे ए सूत्र यी, वचन विरुद्ध जवुन्य ॥७५॥
 पच स्थावर विह्वेन्द्रिया, ए पिण्य तीर्यच जाण ।
 तास आउपो पुन्य कहै, प्रत्यक्ष विरुद्ध पिच्छाण ७६
 जवन्य आउपा नु धर्णा, तीर्यच मरि नें तेह ।
 जो तीर्यच में ऊपजै, कोडि पूर्व स्थित केह ॥७७॥
 जवन्य आयु पच तिरि तणा, माठा अध्वसाय ।
 कथा भगवती नें विषे, शतक चौबीसमा माहि ॥७८॥

अपसत्य अध्यवसायं सुं, कोहि पूर्व तिष्ठि होय ।
 तिष्ण सु एतिरि आरुपो, पाप कृत अवलोय ।७६।
 कुल चारुहाले ऊपना, हरकेशी मुनिराय ।
 उत्तरायण विपै कहु, वारमा अयेन म्हाय ।७७।
 कर्म ग्रन्थ माहीं कह्यो, छट्टे गुण उगोह ।
 नीच गौतनी उदय नहीं, न्याय मिले किम तेह ।७८।
 अष्टम शतके भगवती, दशम उद्देशे इष्ट ।
 जघन्य ज्ञान आरावना, सत अठ भव उत्कृष्ट ।७९।
 वृत्तिकार कह्यु यह विप्र, चरित सहित जे ज्ञान ।
 तेहनी जघन्य आरावना, तसु भंग ए पहि ज्ञान ।८०।
 बीजा सम दृष्टी तणा, देश व्रती ना जेह ।
 भंग उत्कृष्ट असखे हैं, न्याय वचन छे एह ।८१।
 चदा विजय ग्रन्थमें, आरावक ना सोय ।
 आख्या भंग उत्कृष्ट व्रण, यह मिले नाहि कोय ।८२।
 अष्टम् अङ्गे नेम प्रभू, कृष्ण भगी आख्यात ।
 तृतीजी पृथ्वी विषे, जास्ये स्थित दीधि सात ।८३।
 तीजी थी अन्तर रहित 'निकली सय वारेह ।
 अष्टम नाम द्वादशम् जिन, वास्ये महागुण गेह ८४।
 इहा आख्यो अन्तः रहित, तृतीय नग्न थी ताहि ।
 निकली तीर्थकर दुस्ये, तिष्ण सुविच भंग नाहि ८५।

प्रकण रत्न संचय विपै, आख्यो कृष्ण मुरार ।
 बालू प्रभायी नीकली, नर भव लही उदार ॥८६॥
 ब्रह्म कल्प में सुर यई, हुस्ये तीर्थकर देव ।
 इम आख्या तसु पञ्च भव, केम मिले ए भव ६०
 इत्यादिक जे सूत्र थी, वृत्ति प्रमुखरे मांहि ।
 विरुद्ध बचन छै ते प्रते, किम मानी जै ताहि ॥८१॥
 द्वितीय आचारङ्ग, नै विपै, दशम उद्देश, म्हाँय ।
 मस मच्छ कह्यो पाठमें, तास अर्थ कहि गाय ॥८२॥
 टवां पार्श्व चंद्र रुरि कृत, तेह विपै इम ख्यात ।
 वृत्तिकार ए मास मच्छ, लोक प्रसिद्ध आख्यात ६३
 विरुद्ध सूत्र सु ते भर्गी, नसभाविये ए अर्थ ।
 बलि गीतार्थ जे बदै, प्रमाण छै ज तदर्थ ॥८४॥
 अस्थी शब्दै सूत्र में, कुलिया छै बहु स्थान ।
 एगडिया क्षरि कल्पे, सूत्र पन्नवणा जान ॥८५॥
 कह्या दाडिम प्रते बहुडिया, एहवा शब्द प्रभृत ।
 अस्थि शब्द कुलिया कह्या, तो मस शब्द गिर हुन्त ६६
 एहवा सभाविये अर्क, ते माटे अवलोय ।
 वनस्पतिज विशेष छै, मन्स मच्छ ए जोय ॥८७॥
 भाव उघाडै मन्म मच्छ, चारित्रया नै जेह ।
 कारण थी पिण आहार वो, योग्य नथी दीसेह ॥८८॥

वलि सूत्र में माधु नें, उत्तरग भाव आख्यात ।
 वृत्ति विषे अपवाद ए, भाव तर्णो अवदात ॥ ६६ ॥
 तिण जे विशेष सूत्र नो, अर्थ उत्तरग पणोह ।
 जेम अऊँ तिमहिम्न मिलै, इम कह्यु टवा विपेह १००
 टवा कार पिण इम कह्यो, सूत्र थकी विगटेह ।
 अर्थ प्रमाण तिको नहीं, तो मुक्त दूषण किम देह १०१

॥ इति ॥

॥१८८॥ भगवती मे नियुक्ती कहौ तथा पन्न-
 वणा सामाचार्य कृत कहै तमुत्तर अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै नियुक्ती कहौ, शत पण बीसमा मांहि ।
 तृतीय उदेशे भगवती, तुम्हे न मानू कांहि ॥ १ ॥
 तसु पूछीजे नियुक्ती, कहनी कीधी जेह ।
 भद्र बाहु कृता तव कहै, चौद पूर्व धर तेह ॥ २ ॥
 तसु काहिये जे तुम्ह कहौ, भद्र बाहु कृत एह ।
 तो भगवती सूत्र विषे तिका, केम कहौ छै तेह ॥ ३ ॥
 धीर छतां ए भगवती, तेह विषे अवधार ।
 किम कहि भद्र बाहु कृता, देखो न्याय विचार ॥ ४ ॥

भद्र बाहु मोटा हुवा, पञ्चम अर्क सुजात ।
 चौथ अर्के भगवती, तेह विपै निम श्रुत ॥ ५ ॥
 ग्रामो नास्ति सीम कृत, 'भद्र बाहु' अर्णगार ।
 नयी हुता तो तसुं कृता, केम निर्युक्ति तिवार ॥ ६ ॥
 सूत्र भगवती नै विपै, कही निर्युक्ति जेह ।
 तेह मानवा योग अम्हे, पिण्ड द्विजडा नहिं तेह । ७ ।
 तबे कहे 'पट तेबीस मे, सामाचार्य ताहि ।
 सूत्र पन्नगणा तिण कस्यु, कह्यो पीठका माहि ॥ ८ ॥
 गणधर कृन ते भगवती, तेह विपै सु विचार ।
 नाम पन्नवणा नी कह्यो, तैकिण विव अवधार ॥ ९ ॥
 तसुं कहिये ते पन्नगणा, सामाचार्य 'जोय ।
 मोटा नीं कोटी करी, एहवु दीसे सोय ॥ १० ॥
 पिण्ड मूल यकी कीधी नयी, इसो संभने नाहि ।
 दश पूर्ववर ते नहीं, तनु कीवी किम थाय ॥ ११ ॥
 सम्पूर्णा 'दश पूर्व' धर, चौदश पूर्व वार ।
 ताम रचित आगम हुवे, वारुन्याय विचार ॥ १२ ॥
 हेमि 'नाम माला विपै, धुर काराडे अवदात ।
 मुहस्ताद्या वज्रान्ता, दश पूर्व वर आम्पात ॥ १३ ॥
 सुहस्तसे लेई करी, वज्र स्वामी लग जोय ।
 दश पूर्व वर दाविया, अतिक पूर्व नहिं होय ॥ १४ ॥

स्वामी वज यथा पछे, बहु वर्षे सुविमास ।
सामानार्थ्य तो यथा, दश पूर्व नहि जास ॥१५॥
तसु कृत् आगम किम हुवे, न्याय नेत्र करि जोय ।
सूत्र वृहत् नो लघु करै, तसु कारण नहि कोय ॥१६॥
इमाहिक्त सूत्र निशीथ प्रति, गणी तिसाह विचार ।
मोटा नू छोटा कन्धु, एहबु दासै सार ॥ १७ ॥
वलि कहै दशवै कालिक पिण, कन्धु सीजभव एह ।
तास नाम नदी विष, किम आख्यो शुण गेह ॥१८॥
गण्यवर कृत जे भगवर्ता, तास विषै सुविचार ।
नाम नदी नू पिण कह्यो, हिव तसु उत्तर सार ॥१९॥
जेम पत्रपणा तिमज ए, वृहत् यकी लघु कीध ।
पिण मून यकी कीवी नवी, नयी समवे सीव ॥२०॥
चौदश पूर्व माहि थी, अर्थ अनोपम सार ।
दशवै कालिक वृहत् पिण, पूर्वे शचित उदार ॥२१॥
ते मोटा नू ए लघु, मनक पुत्र अर्थेह ।
सूत्र सीजभव पिण कन्धु, न्याय समवे एह ॥ २२ ॥

॥ शत ॥

॥ अथ १६ मूनदी थिरावली अधिकार ॥

कोई कहै नदी तर्णी, थिरावली छे तेह ।
गण्य १६ कृत के अन्य कृत, हिव तसु उत्तर देह ॥१॥

नदी पीठका नें विषे, सुधर्म जम्बू सांम ।
 प्रभव सीजभव आदि त्यां, पाठ वन्दे बहु ठांम । २।
 अनागत जिन तुर्य अङ्ग, वन्दे पाठ न ख्यात ।
 तेह अनागत मुनि भर्षी, किम बदे गणीनांष । ३।
 प्रिया सू यह थिरावली, देव वाचक कहिवाथ ।
 पिण गणधर कृत ए नहीं, निर्मल विचारो न्याय ४
 थिरावली नें अन्त कह्यु, अन्य पिण सहु भगवंत ।
 प्रणमी ज्ञान परुपणा, कहस्यु तास उदन्त ॥ ५ ॥
 नदी सूत्र नी वृत्ति में, आख्यो इम अवदात ।
 दुष्य गणी नो शिष्य जे, देव वाचक इम ख्यात । ६।
 इण लेखे नदी सूत्र, दुष्य गणी शिष्य देव ।
 मोटा नृ छोटा कस्युं, ते जाणै जिन भेव ॥ ७ ॥
 कथा तणी गाथा जिके, नदी सूत्रे माहि ।
 देव वाचक कीवी हुवे, एहबु दीसे न्याय ॥ ८ ॥
 दश चौदश पूर्व धरा, आगम रचे उदार ।
 ते पिण जिननी शाख थी, विमल न्याय सुविचार । ९।
 पिण जिननी जे शाख विन, आगम सूत्र अमोल ।
 कर्षस्थ कृन किण विध हुवे, त्राजु न्याय सं तोल । १०।
 चो नाणी गोयम गणी, चौदश पूर्व धार ।
 ते पिण बचन खलाविया, सप्तम अग गम्कार ११

दृष्टीवाद तर्गों यर्गी, वचन खलाया ताहि ।
 अन्य मुनी नैं हँसवो नही, दशवै कालिक माहि । १२।
 पञ्चम अंग तृतीय शत, प्रथम उद्देश्य र्हाय ।
 वैक्रिय शक्ती सुरतर्गी, अभि भूति कहिवाय । १३।
 वाय भूति श्रद्धी नही, प्रतीत नागी तेह ।
 प्रभू नैं पूछ खमाविया, टादशाङ्ग धर एह । १४।
 टाशा अङ्ग ठागें सात में, हिन्सा झूट अदत्त ।
 शब्द रूप गेव फर्य रस, आस्वादी हुवै रक्त । १५।
 वलि पूजा सत्कार प्राति, पामी नैं हर्षाय ।
 सावद्य इहवव कही, वास सेववू थाय ॥ १६ ॥
 जेम प्ररूपे तै विषे, नथी पालवू होय ।
 मस प्रकारे जाणवू, छद्मस्थ प्रति अवलोय ॥ १७ ॥
 चौद पुर्व धर पिण कौ, पठिक्मणो विहु काल ।
 खलता खामी नु तिको, देखो न्यायनिहाल । १८।
 तिण सु चौदश पूर्व धर, वलि दश पूरय वार ।
 जिन शाखे आगम रचे, इसो समवै सार ॥ १९ ॥
 इम द्विभक्त प्रत्येक चुद्धि पिण, जिन शाखे सुविचार ।
 आगम रचवु समवै, अमल न्याय अववार । २०।
 इम मुज म्यासै तिम कह्यु, अर्थ अनूप उदार ।
 फुन केवल ज्ञानी कहै, तहिज छै तन सार । २१।

जद कहै चौदश पूर्ण वर, भद्र वाहु गुन गेह ।
 निर्युक्ती तेहनी करी, किम मानूं नवि तेह ॥२२॥
 हिव तेहनी उत्तर सुगो, तेह निर्युक्ती माहि ।
 हू रादू वजू स्वामी प्रते, एम ऋष्य छे ताहि ॥२३॥
 जो भद्र वाहु कृत ए हुवे, तो वजू स्वामी प्रति जेह ।
 नमस्कार किण विध कर, देखोजी चित देह ॥२४॥
 बलि निर्युक्ती में कह्यो, बाल्य अरस्था मांहि ।
 मेह वर्षता देवता, आहार निमज्यो ताहि ॥२५॥
 पिण ते आहार वंछ्यो नहीं, सीख्यो विनय आचार ।
 एहना वजू स्वामी प्रते, नमस्कार करू सार ॥२६॥
 नगर उज्जैणी नै विपे, जम्बक नामें देव ।
 करी परीक्षा नै पछै, स्तव्यो तास स्तयमेव ॥२७॥
 लब्धि अक्षीण माहणसी, तेह तणी वरण हार ।
 सीहें गिरी प्रशसीयो, वन्दू ते अणगार ॥ २८ ॥
 पदासारणी लब्धि जसु, दश पुर नगर मभार ।
 महिमा कीर्धी देवता, करू तासु नमस्कार ॥२९॥
 जेह कुशुम पुर नै विपे, वनी शेट तिवार ।
 वन फुन कन्याइ करी, निमित्तियो वरप्यार ॥३०॥
 नव जीवन वय नै विपे, वज्र ऋषी गणधार ।
 नमस्कार तेहनें करू, इम कह्यो निर्युक्ति मभार ॥३१॥

भद्र वाहु स्वामी पछे, बहु वर्षे अवधार ।
 वज्र स्वामी मोडा हुना देखो न्याय विचार ॥३२॥
 निर्मित्रीयो कन्या वने, एम इहा आरुयात ।
 पिण निमत्रसी इम नयी कथो, देखो सुगण सुजात
 महिमा कीधी देवता, इम इहां आरयो सोय ।
 सुर रुस्ये महिमा इसो, वचन कथो नही कोय ॥३३॥
 तिगो कारणा ए निर्युक्ती, मद्र वाहु कृत नाहि ।
 वलि ए निर्युक्ती विषे, वचन बहु विरुद्ध दिखाहि ॥३४॥
 उवराई मे आसीयो, उत्कृष्टी अथ गाह ।
 धनुष पंचसय नी तिफो, सीके ए जिन वाय ॥३५॥
 आवश्यक निर्युक्ति मे, मोरा देवी गाय ।
 सवा पाचसो वनुष तनु, ए वच रुम मिलाय ॥३६॥
 टांगांग तुर्यठाणा विषे, प्रथम उद्देशा माहि ।
 सनत् कुमार चकोतणी, अत रुया कही ताहि ॥३७॥
 आवश्यक निर्युक्ति मे, चहो सनत् कुमार ।
 तीजे सुर लोके गयो, ए वच विरुद्ध विचार ॥३८॥
 ऋषभ वाहुवल आउपो, पूरे चोरासी लक्ष ।
 समयागमे आखीयो, पाठ माहि प्रतक्ष ॥३९॥
 आवश्यक निर्युक्ति मे, ऋषभ वाहुवल राय ।
 एक समय गिगत लही, केम मिले ए वाय ॥४०॥

ज्ञाताव्येनें आठ में, मल्ली नाथ जिन राय ।
 पोह सुध इगारस दिनें, चारित्र केवल पाय ॥४२॥
 आवश्यक निर्युक्ती में, चारित्र केवल नाण ।
 मृगशिर सुध एनादशी, विरुद्ध बचन ए जान ॥४३॥
 नेऊ गणधर अजित ना, समवायग विपेह ।
 आवश्यक निर्युक्ति में, कहा पंचाणु जेह ॥४४॥
 तुर्य अङ्ग जिन सुविव नां, असी अरु खगण वार ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, अठ्यासी अधिकार ॥४५॥
 तुर्य अङ्ग शीतल तणां, तीन असी सुविचार ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, एक असी गणधार ॥४६॥
 तुर्य अङ्ग वासट कहा, वास पुज्य गणधार ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, छासट्ट कहा तिवार ॥४७॥
 गणधर अनन्त प्रभू तणा, सूत्रे चौपन जास ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, आख्या के पचास ॥४८॥
 गणधर वर्म प्रभूतणां, सूत्रे अडतालीस ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, तयां लीस कुन दीस ॥४९॥
 नेऊ गणधर अन्ति नां, तुर्य अंग सुजगीस ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, आख्या के सट तीस ॥५०॥
 पार्श्व प्रभू नां तुर्य अङ्ग, गणधर अष्ट उदार ।
 आवश्यक निर्युक्ती में, आख्या दश गणधार ॥५१॥

आवश्यक निर्युक्ती मुनि, कृत पचक में काल ।
 पञ्च हांभ ना पूतला कखा कहा जु न्हाल ॥५२॥
 आवश्यक निर्युक्ती में, वतिका विरुद्ध अनेक ।
 चतुर हुथै ते ओलखा, छाडे मतरी टेक ॥ ५३ ॥
 तिगा सु चौदश पूर्व धरु, भद्र बाहु अणमार ।
 तेहनी कीधी किम हुवै, ए निर्युक्ती विचार ॥५४॥
 आवश्यक निर्युक्ती में, कारण थी अण गार ।
 ग्रहण करै खट काय नै, कहिये ते अधिकार ॥५५॥
 शर्पादिक डसिया छता, पृथिवी काय प्रतेह ।
 प्रथम अचित्त मांगी लिये, ग्रहस्थ समीपे जेह ॥६५॥
 जो मागीलाधे नहीं, तो पोतै आणेह ।
 कदा अचित लावे नहीं, तो मिश्र पृथ्वी भागेह ५७
 मिश्र पृथ्वी लाधे नहीं, तो पोतै हिक्क जाय ।
 अटव्या दिक या मिश्र प्रति, ले आवै मुनिराय ॥६८॥
 मिश्र कदा लाधे नहीं, मांगे जई ग्रहस्था पास ।
 सचित पृथिवी काय प्रति, मांगी ल्यावे तास ॥६९॥
 जो मागी सचित मिलै नहीं, ता पोतै हीज जाय ।
 खान प्रमुख आगर थकी, ले आवै मुनिराय ॥६०॥
 जेह काम आणी तिकी, कार्य करी नै ताय ।
 पृथिवी काय जे उगरे, तेह परिद्वै जाय ॥ ६१ ॥

इम कारण या धुर अचित, मिश्र सचित अपकाय ।
 मुनी दातार कने जई, मार्गी ल्यावे त्हाय ॥६२॥
 जो मार्गो जल ना मिलै, तो पोतै हिम्न जाय ।
 नदी तलावादिक थकी, अप आणे मुनिराय ॥६३॥
 शूलादिक कारण पड्या, इम हिम्न तेऊ काय ।
 अचित मिश्र फुन सचित प्रते, मार्ग अदी पै जाय ६४
 जो मार्गी आसि मिलै नहीं, तो पोतै हिम्न जाय ।
 कुम्भ कारादिक स्थान या, लेइ आवै मुनिराय ॥६५॥
 शूलादिक कारण पड्या, इम हिम्न वाउ काय ।
 अचित मिश्र फुन सचित प्रति, ग्रहण कर ऋषी त्हाय ।
 इम हिम्न वनस्पती अचित, मिश्र फुन सचित मुनिराय
 गाढा गाढ कारण पड्या, ग्रहे मूला दिकताय ॥६७॥
 नश बन्धिया दिक प्रते, तनु फोडा दिक होय ।
 तास मिश्रावा मुनि ग्रहे, जलोक आदि सुजोय ॥६८॥
 आवण्यक निर्युक्ती में, पण्डितावागिया समितेह ।
 आसी छे ए वास्ता, किम् मानी जे एह ॥६९॥

॥ अथ विसमू नदी अधिकार ॥

सोई कहै नदी ऊतरे, मुनि ईर्ष्या समितेह ।
 तिहा जिन आज्ञाते भगी, हिंसकतसुंन कहेह ॥१॥

तिम म्हे पिण्य प्रतिमां भग्नी, पुष्प चढावां तेह ।
 म्हानें पिण्य जिन आण्य छे, हिन्सा तसु न कहेह ॥२॥
 तसु कहिये साधू नदी, उतरै तिहा जिन आण्य ।
 जो पूजामें जिन आण्य छे, तो मुनि के मन करै जाण्य
 वंदना नी पूछ्या यका, मुनि आज्ञा दे तेह ।
 पुष्प चढावू इम कख्यां, मुनि आज्ञा नहिं देह ॥३॥
 नदी ऊतरै जे मुनी, द्रव्य पूजा कहे तेम ।
 हेतु तिण्य ऊपर कहूं, चतुर सुणी धर पेम ॥४॥
 विहार विषे जल सहित इक, नदी देख मुनिराय ।
 ते टालग्य रै कारणी, अवलाई पिण्य खाय ॥ ६ ॥
 इक कोशादिक अन्तरै, सूकी नदी निहाल ।
 तेह प्रते मुनि ऊतरै, उदक सहित रे टाल ॥७॥
 तिम दश दिननां पुष्प जे, मृका ते श्रव लोय ।
 एकगा आडी पुष्प फुन, तत् जग्य चूट्या होय ॥८॥
 किसा चढावो पुष्प तुम्ह, तुम्ह लेखे इम न्हाल ।
 सूका फूल चढावणा, हरिया देणा टाल ॥ ९ ॥
 जो चढौ तरकालनां, सुफुल पुष्प न चढाय ।
 जदतो पुष्प नदी तगी, मिल्यो न सरियो न्याय १०
 उदक सहित टाल नदी, मुनि अवलाई खाय ।
 तिण्य कारण्य हणवा तरण्य ते कामी नहिं र्हाय ॥११॥

हरित पुष्प चाढे तुम्हे, शुष्क पुष्प न चढाय ।
 इण कारण हणवा तरणां, तुम्हे कामी इण न्याय ।१२।
 तिण सुं पुष्प नदी नर्णी, नयी सरिपो न्याय ।
 द्रव्य पूजा नीं आण नर्णी, नदी जिन आज्ञा म्हांय ।१३।
 जिन आज्ञा देवै जिको, निर्वद्य कारज जान ।
 जिन आज्ञा देवै नर्णी, ते सावद्य कार्य्य मान ।१४।
 सुर सुर्वाभ भर्णी प्रभु, वन्दन आज्ञा ख्यात ।
 नाटक नीं पूरुया थका, आण न दीवी नाथ ।१५।
 मन मे भलो न जाणियां, मौने रखा अवलोय ।
 तिण सुं ए नाटक कियो, ते सावद्य कार्य्य होय ।१६।
 प्रभृजी जे नाटक तरणी, आज्ञा दीधी नाँय ।
 तो किम द्रव्य पूजा तरणी, आज्ञादे जिनराय ।१७।
 मुनि दिक्षा लेतां कीया, सावद्यरा पञ्खान ।
 न करै द्रव्य पूजा तिको, सावद्य कार्य्य मान ।१८।
 सावद्य कार्य्य प्रते मुनी, करै करवै नाँय ।
 अनुमोदै पिण नर्हि तिको, निमल विचारो न्याय ।१९।
 जेह कार्य्य अनुमोदियां, मुनी ने लागे पाप ।
 तो करण वालो तो धुर करण, तिण मेँ वर्म न थाप २०।
 सावद्य कार्य्य सर्व ही, मुनि त्यागे विष जाण ।
 आज्ञा तेहनी किम दिये, वारुं करो विनाण ।२१।

द्रव्य पूजा सावद्य है, कै निर्वद्य कद्विवाय ।
 सावद्य है तो तेह म। धर्म पुण्य किम थाय ॥२२॥
 जो पूजा निर्वद्य है, तो मुनि न करे काय ।
 वालि सामायिक पोषा मभक्त, तुम्हे करो क्यु नाय ॥२३॥
 सामायिक पोषा मभक्त, पचरूया सावद्य जोग ।
 निर्वद्य तो त्याग्या नहीं, देखो दे उपयोग ॥२४॥
 द्रव्य पूजा आज्ञा मभक्त, कै जिन आज्ञा वार ।
 जो आज्ञा वारे कहो तो धर्म पुण्य मत वार ॥२५॥
 जो ए है आज्ञा मभक्त, तो मुनि न करे वांदि ।
 सामायिक पोषा मभक्त, तुम्हे करो क्यु नाहि ॥२६॥
 द्रव्य पूजा है विस्त में, कै अविस्त रे माहि ।
 जो अविस्त माहीं कहो तो धर्म पुण्य किम थाहि २७
 द्रव्य पूजा है विस्त में, तो मुनि क्यु न करेह ।
 सामायिक पोषा मभक्त, क्यों न करो तुम्हे तेह ॥२८॥
 जो पूजा समभक्त पडे नहीं, तो राखो प्रभु प्रतीत ।
 जिन आज्ञा वाहर धर्म कही, न करणी सह अनीत २९

॥ अथ इक्षीस मृ दानाधिकार ॥

असयती नै जाण नै, ना थावक नै कोय ।
 दान दीया स्यु फल हुश्रै, तसु उत्तर अवलोय ॥१॥

अष्टम शतके भगवती, छट्टे उद्देशे जोय ।
 गौतम पूछ्यो वीर प्रति, हे प्रभू श्रावक कोय ॥२॥
 तथा रूप जे असंजति, तसु संचित्त अचित्त अशंखादि
 अणोपणी फुन एषणीक, प्रातिलाभ्ये स्युं संवाद ।३।
 तेहने स्यु फल सम्पजै, तब भाषे जिन राय ।
 एकान्त पाप हुवै तसु, निरयरा किञ्चित नाँय ॥४॥
 एकान्त पाप कह्यो प्रभू, प्रगट पाठ में जोय ।
 तो ते दान दीया छता, धर्म पुण्य किम होय ।५।
 बलि सातमां अङ्ग में, प्रथम अध्येन मन्तार ।
 वीर भणौ आणंद कह्यो, अन्य तीर्थी प्रति धार ।६।
 अन्य तीर्थकर्ता देव प्रति फुन जिन ना मुनिराय ।
 अन्य तीर्थक में जई मिल्या, तिणें सग्रहा त्हाय ।७।
 ए त्रिहु प्रति बहू नहीं, बलि न करूं नमस्कार ।
 पहली बोलाऊं नहीं, एक वार बहु चार ॥ ८ ॥
 अशंखादिक नाहिं स्यु तसु, बलि देवावूं नाहिं ।
 एहवु अभिग्रह आदरयो, देखी आगम माहिं ।९।
 छ छरडी आगार ते, गरयो सावज्ज जाण ।
 सामाधिक पापह मन्त, तेहनः पिण पञ्चखाण ।१०।
 दीवो अन्य तीर्थक भणौ, धर्म पुण्य जो होय ।
 तो आणन्द किम तज्यो, हिये विमामी जोय ।११।

उत्तराज्जम्भेणो चोद मे, गाया वरिमी मॉय ।
 भग्नु प्रते पुत्रो कह्यो, सामल जो चित ल्याय ॥१२॥
 वेद भग्यो सुत जन्मियां, त्राण शरण नहि होय ।
 वीया जीमायां तम तमा, जाये इम कह्यो साय ॥१३॥
 वृत्तिकार इह विधे कह्यो, नरक रोखा देय ।
 तो तेह नै पोष्यां छता, त्रिण विव यर्म कहेह ॥१४॥
 कोई कहे ए गृही हुता, तसु उत्तर अवलोय ।
 तेहनी धुर गाय विपे, तुर्म पदे कहुं साय ॥१५॥
 कुमर आलोची नै वेद, इम कह्यो गणधर देव ।
 ते माटे तसु सत्य वच, पिण नहि मूठ कहेव ॥१६॥
 वेद भग्यो सुत जन्मियां, त्राण शरण नहि होय ।
 ए पिण भग्नुप्रते कहुं, वेहु पुत्रा अवलोय ॥१७॥
 ए वच सांचा तेहनां, तुम्हे जाणा मन माहि ।
 तो दीयां जीमाया तम तमा, ए पिण सांची वाहि १८
 द्वितीय सुगडामे सखर छट्ठा येनै माहि ।
 निज अट्टा विपे कही, आट्ट मुनि नै ताहि ॥१९॥
 जीमावे दिक्क सहस्र वे, तसु पुम्य स री वधाय ।
 तेह पुण्य थी सुगडवे, वेद विपे ए, माय ॥ २० ॥
 आट्ट मुनि कह्यो सहस्र वे, दीहा जीमावे जेह ।
 तेह नरक में ऊपजे, अति आसिनाप विपह ॥२१॥

प्रगट पाठ में वांत 'ए, 'आद्र' मुनि वच जोय'।
 तो असंजतीरा दान में, धर्म पुण्य किम होय ॥२२॥
 कोई कहे छद्मस्थ था, 'आद्र मुनी निह वार ॥
 कह्यु, तांण में नेह वच, किम कहिये तसु सार ॥२३॥
 तसु कहिये आद्र मुनी, चरवा करी विशाल ।
 बौद्ध मती गौशाल सू, साग मती सु न्हाल ॥२४॥
 एरु डडिया प्रमुख ने, उत्तर दिया विचार ।
 तेह सत्य जाणो तुम्हे, तो ए पिण सत्य उदार ॥२५॥
 जाव अन्य प्रति सत्य छे, ब्राह्मण प्रति अवदात ।
 उत्तर असत्य कहा तुम्हे, आ किमा लेखारी वात ॥२६॥
 सूत्र सुयगहा, अङ्ग जार में, दान प्रशसे गत ।
 व'प वंछे प'काय नी, इम भाष्यो भगवन्त ॥२७॥
 तृतीय करण प्रशंसियां, हिंसक कहिये ताहि ।
 तो दान देवेत धुर करण, ते हिंसक किम नाहि २८
 कर प्रशसा कुशीलरी, तासु कर्म बवं होय ।
 तो मेवे ते तो धुर करण, स्यु कहिये तसु सोय ॥२९॥
 तिम सावद्य दान प्रशंसियां, कर्म तणी बंध थाय ।
 तो दान दियेते धुर करण, तसु अघ बंध आधिकाय ३०
 दान निपट्यां वृत्ती नी, छेद करे इम रूयात ।
 कह्यो अर्य गे काल ए, वर्त्तमान में थात ॥ ३१ ॥

मिलतो अर्थ ए सूत्र थी, देवो न्याय विचार ।
 ताम दाम सूत्रे कथ्यो, सावद्य दान अमार ॥ ३२ ॥
 असजती नें दान दे, पाप एकन्त आख्यात ।
 सूत्र भगवती नें विपै, देवो तज पन्व पात ॥ ३३ ॥
 ते माटे वर्त्तमान ज, काल विपै जे मून ।
 मून कहै विहु काल में, श्रद्धा ताम जवून ॥ ३४ ॥
 द्वितीय सुगडा अङ्ग विपै, पंचम् उभयणो पेश ।
 देतो लेतो एहवो, वर्त्तमान में देख ॥ ३५ ॥
 पुण्य पाप नाहिं कहै तिहा, एहवु वच अवलोय ।
 ते माटे वर्त्तमान हीज, काले मून सु जोय ॥ ३६ ॥
 कह्यो उपाशक अङ्ग में, सुत्र सकडाल उदार ।
 गौशालक नें आपीया, फलग मेष्का सयार ॥ ३७ ॥
 कह्यो प्रभृना गुण करया, तिणस्युं आपू सोय ।
 पिण निश्चय नाहिं धर्म तप, इम कह दीधा जोय ३८
 दीधा गौशालक भगी, नाहिं धर्म तप सद्य ।
 तिमज अनेरा नें दीया, केम हुवै पुण्य बध ॥ ३९ ॥
 दुख विपाक माहीं कह्यो, मृगा-लोढो देख ।
 गौतम पूछयो वीर प्राति, पूर्व भवे इण पेश ॥ ४० ॥
 स्युं दीधो स्युं भोगव्यो, इम पूछयो गाणिराय ।
 तिण सु दान कुपात्र नां, फल अति कडक कहाय ४१

प्रदेशी केशी भणति, बोल्यो एह री वाय ।
 च्यार भाग ए गजरा, हू करस्यु मुनिराय ॥ ४२ ॥
 एक भाग राश्या निमित्त, दुजो भाग खजान ।
 तीजो हय गय अर्थ ही, चौथो देवा दान ॥ ४३ ॥
 च्यारु माउडभ जाण नै, मौन रत्ना मुनिराय ।
 तीन भाग जिम तुर्य पिण, जागी मावद्य ताय ॥ ४४ ॥
 पिण न कव्यो त्रण भाग तो, हेतु अघनी राश ।
 तुर्य भाग तो पुण्य बध, इम न कव्यो गुण तास ॥ ४५ ॥
 च्यारु भाग बोलाय नै, प्रदेशी राजान ।
 निज लफगे गेरी धयो, वर्म करण सात्रवान ॥ ४६ ॥
 तुर्य भाग दान तालक, नित प्रते दान रंधाय ।
 वणी मगराँ जिमायिने, तिहां जीव हिन्सा अविनाय ।
 सप्त सहस्र ज ग्राम नाँ, च्यार भाग तसु कषि ।
 दान तालकै यापीयो, चौथा भाग प्रसिद्ध ॥ ४७ ॥
 दान तालकै ग्राम था, साढ सतोर सो जेह ।
 तसु हांसल धान रवाय नै, दान शाला मॉडेह ॥ ४८ ॥
 नित्य हजारौ मण तदा, दान सौता जाण ।
 हुने हजारौ मण तिहां, अग्नि पांगी घमसाण ॥ ४९ ॥
 उदक विषे फुरागादि फुन, बलि वनस्पती जल मॉय ।
 लुग मणौ बर नागती, अनेक मूषा तशकाय ॥ ५० ॥

वायु जीव विराधना, ते पिण तिहों विशेष ।
मोशे श्रारंभ ए सही, दान शाला में देव ॥५२॥
दिन दिन प्रति पटकाय हग, अनन्त जीवारी घात ।
नर्गागौ पाप द्विन्सा तणी, तसु बट माहि मित्यात ५३
असंयती बहु पोपिया, करे पटकाय विगाश ।
धर्म पुण्य किम तेह में, जीवो हिये विमास ॥५४॥
धर्म हेतु प्राते जीव नै, हगयां दोष न कोय ।
कष्टु अनार्य्य वचन ए, आचारङ्गे जोय ॥ ५५ ॥
कह्यो धर्मरे कारणे, जीव न हगवू कोय ।
ए श्रार्य्य ना वचन है, धुर अङ्गे अवलोय ॥५६॥
तिण सू प्रदेशी तणी, दान शाला पाहिछाण ।
श्री जिन आता वारहें, समप्तो चतुरसुजाण ॥५७॥
ताता पधेने तेर में, जे नन्दन मणिहार ।
नन्दा पुष्करणी तणी, आख्यो बहु विस्तार ॥५८॥
चिहु दिश च्यारु बाग फुन, चिहु बाग चिहु शाल ।
पूर्व बना विपे प्रवर, चिघ्र शभा सुविशाल ॥५९॥
विवव रूप चिड्या निहां, नयना न सुवदाय ।
नाटक ना धुंकार बहु, जन मन हुलसत थाय ॥६०॥
दान शाला दक्षण बने, दिये दान दगचान् ।
जीमाये बणी मग रांक बहु, भोजन विवध रसाल ६१

तीगच्छ शाला पश्चिम वने, राख्या-वेद्य सुताम ।
 औषध करी रोगी भर्णी, करे अधिक आगम ।६२।
 शुभ अलङ्कार उत्तर वने, नाई प्रमुख वैशाय ।
 रोगी प्रमुख भर्णी तिहा, खिजमत स्नान कराय ।६३।
 इम बहु असंयती भर्णी, सुख साता उपजाय ।
 उपना छेहडै सोल गद, नन्दनरे तनु माँय ।६४।
 काल करी मीडक हुश्री, निज पुष्करणी माँय ।
 सावज्भ कार्य ना कटुक फल, निमल विचारो न्याय
 ज्ञाताज्भेणें आठ मै, देखो चतुर सुगर्म ।
 चोखी शन्याशण कह्यु, दान धर्म शुचि धर्म ।६६।
 दान धर्म शुचि धर्म कर, निर विघ्न स्वर्ग जाय ।
 मल्लि भर्णी चोखी कही ए निज श्रद्धा तार ॥६७॥
 तव मल्लि कह्यो चोखी भर्णी, रुधिरै खरड्यो जेह ।
 वस्त्र लोही सू योगीया, शुद्ध हुश्री किम तेह ।६८।
 तिम अष्टादश पाप प्राति, सेवे जे कोई जत ।
 तेह निमल किण विध हुश्री, दीयो एह दृष्टान्त ।६९।
 रुधिरै खरड्यो वस्त्र जे, जलादि करि शुद्ध होय ।
 तिम हिन्सादिक अघतज्यां, जीव निमल हुवे साँय ।
 सचित अचित सहु नै दीयां, पुस्य कहै छै जेह ।
 फेदायत चोखी तणा, न्याय विचारी लेह ॥७१॥

दश भै ठाणें देखल्यो, प्रभु कथा दश दान ।
 संक्षेप कहिये तिके, सुगजो चतुर सुजाण ॥७२॥
 सचित अचित जल अन तावण, अग्नि जर्मो कद जान
 अनुकम्पा आर्गी देव, ते अनुकम्पा दान ॥७३॥
 द्वितीय दान संग्रह क्यो, पापे वन्दी वान ।
 तथा छुडावे वाम दे, चोर प्रमुख न जान ॥७४॥
 ग्रह परडा जाणी करी, यावरिया न जान ।
 देवे भय आर्गी कर्म, ते तीजो भय दान ॥७५॥
 खर्च कर मृत केड वा, जायत वारियो जान ।
 श्राध ऊमासी प्रमुख ते, तुर्ग फालुणी दान ॥७६॥
 बहु नो लज्भाडे करी, सचित अचित धन धान ।
 दिय असजती न जिन्हो, पत्रम् लज्भा दान ॥७७॥
 मुकलाओ पैराणी, जस अहकार जान ।
 द्विये रावलिया प्रमुख न, छट्टो गार्व दान ॥७८॥
 कुशील नो अर्थी जिको, गार्शिका दिरु न जान ।
 दिय द्रव्य तेह न कण्ठे, सप्तम् अर्धर्ग दान ॥७९॥
 धर्म दान वर आठ मू, तीन भेद हे तास ।
 मूत्र सुपात्र दान फुन, अभय दान गुण रास ॥८०॥
 आगम अर्थ वताय न, तसु मित्यात्त मित्राय ।
 शुद्ध ममकित पमाविये, मूत्र दान कहियाय ॥८१॥

वर महाव्रत धारी मुनि, दिये सृज तो तास ।
 दान सुपात्र तसु कह्यो, द्वितीय भेद सुविमास ॥८२॥
 भय नहिं दे जत्तु भर्णा, हणवारा पच्चखाण ।
 ते अभय ए भेद त्रण, धर्म दानरा जाण ॥८३॥
 सचितादिक जे द्रव्य बहु, दिये उयारा जेम ।
 ध्यान पाछो लेया तणी, नवम् काण्ण्ती एम ॥८४॥
 लैणायत नें जिम दिये, हाती नेता देय ।
 दिया पछे पाछो लिये, दग्गम् कयन्ती त्हेय ॥८५॥
 धुर वोहरा जिम उभय ए, दिया प्रथम दे तेह ।
 ते नदमृ फुन दशम् जे, दिया पाछो दे जेह ॥८६॥
 धर्म दान अष्टम् तिको, श्री जिन आज्ञा माहि ।
 शेष दान नव छे जिका, जिन आज्ञा मे नाहि ८७
 असजती नै दान दे, तसुं कह्यो अघ एकन्त ।
 नव ही दान तेह ने विपै, देखोजी बुद्धिवन्त ॥८८॥
 ए दश दान कह्या तिके, गुण निष्पन्न तसु नाम ।
 पिण जिन आज्ञा वाहिरो, ते सावव अघ वाम ॥८९॥
 वेश्याने देवे तिको, प्रत्यक्ष अधर्म पेस ।
 दीशे लोक विपै तसु, अधर्म नाम संपेस ॥ ९० ॥
 धर्म दान विन शेष अठ, ते पिण अधर्म जान ।
 गुण निष्पन्न ए नाम तसु, भाण्या श्रीभगवान ॥९१॥

श्री जिनपर जे दानरी, आज्ञा नहीं दे कोय ।
 धर्म पुराय नहीं तेह में, हिये विमासी जोय ॥६२॥
 दशमें ठाणें धर्म दश, पापड धर्म आख्यात ।
 पिण्णुते नहीं आज्ञा विषे, तिमहिम्न दान अवदात ६३
 सृत्रं चारित्र जे धर्म वे, श्री जिन आज्ञा माहि ।
 तिमहिम्न जिन आज्ञा विषे, धर्म दान कहि वाय ६४
 जिन आज्ञा जे धर्म नी, ते निर्बद्य पहिआण ।
 आज्ञा नहि जिण धर्म री, तेतो सावज्ज जाण ॥६५॥
 जिम आज्ञा जे दान नी, ते निर्बद्य अवलोय ।
 आज्ञा नहीं जे दानरी, ते सावद्य छे सोय ॥ ६६ ॥
 दशमें ठाणें स्थिर दश, भाष्या श्री भगवान ।
 सावद्य निर्बद्य ओलसो, जिन आज्ञा करि जान ॥६७॥
 तिम हिज जिन आज्ञा करी, सावज्ज निर्बद्य दान ।
 ओलख ने निर्णय करे, ते कहिये बुद्धिमान ॥६८॥
 नरम ठाणें पुराय बध, नरे विव समुच्चै रियात ।
 अन्न पुराय फुन पाण पुराय, लेण पुराय पिख्यात ६९
 सयण पुराय फुन वस्त्र पुराय, मन पुराय उच्च पुराय काय ।
 नमस्कार पुराये नवम्, समुच्चै ही कहियाय ॥ १०० ॥
 कोई कहे अन्न पुराय डम, समुच्चय आख्यो साम ।
 ते माटे सहुने दीया, पुराय बंध छे ताम ॥ १०१ ॥

इम कहै तेहनें पूत्रिये, अन्न पुण्य आख्यो सोय ।
 के कोरो दीधां पुण्य हुये, के काचो दीधां होय १०२
 के अन्न पुण्य राध्यो दिया, सचित दिया पुण्य थाय ।
 तथा अचित्त दीधा थका, पुण्य बध कहियाय १०३ ।
 दियां सृक्तो पुण्य है, वा असृक्तो दियेह ।
 पात्र प्रति दीधा पुण्य है, तथा कुपात्र विपेह १०४ ।
 मुनि प्रति दीधा पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह ।
 चोर कसाई ने दिया, बलि गणिका प्रतेह देह १०५ ।
 भमुच्चय आख्यो अन्न पुण्य, ते गाटे अवलोय ।
 सहु ने दीधा पुण्य नौ, तुक्त लेखे बध होय ॥१०६॥
 इम तसकर गणिकादि जे, सहु ने दीधा पुण्य ।
 तिण सु सधला पात्र है, नहि कुपात्र जबुन्य १०७ ।
 पाण्य पुण्य समुच्चय कह्यो, ते अचित्त पाया पुण्य होय ।
 के सचित्त उदक पायां थका, पुण्य बध तसु जोय १०८ ।
 जो सचित्त पाया थी पुण्य हुये, तो छाण्यो पावेह ।
 अथवा अछाण्यो उदक प्रति, पाया पुण्य कहेह १०९ ।
 बलि सृक्तता उदक प्रति, पायां तसु पुण्य होय ।
 अथवा उदक असृक्तो, पाया पुण्य अवलोय ११० ।
 पात्रे दीधा पुण्य है, तथा कुपात्र विपेह ।
 मुनि प्रति दीधा पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह १११ ।

चोर कसाई नें दियां, बालि गणिका प्रति जोय ।
 तुम्ह लेखे सहुने दियां, पुण्य बध श्रवलोय । ११२।
 लयण पुण्य समुच्चय कह्यो, ते जागा नवी कराय ।
 छ्वाय दृष्टी दे तामु पुण्य, के सीवा दीवा याय ११३।
 पात्र नें दीवा पुण्य है, तथा कृपात्र विपेह ।
 मुनि प्रते दी मा पुण्य है, तथा असाधु प्रतेह । ११४।
 गणिका चोर कसाई प्रते, दीवा पुण्य बंधाय ।
 समुच्चय लयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो त्हाय । ११५।
 सयण पुण्य समुच्चय कह्यो, रत्न कटाय कटाय ।
 पाट बानोट कसाय नें, दीधा पुण्य ववाय । ११६।
 के सीधा दीवां पुण्य है, पात्र कृपात्र भण्णज ।
 साधु असाधु नें दिया, ते किण्णम पुण्य कहीज ११७।
 गणिका चोर कसाई प्रते, दीधा पुण्य श्रवलोय ।
 समुच्चय सयण पुण्ये कह्यो, उत्तर देवो सोय । ११८।
 वस्त्र पुण्य समुच्चय कह्यो, कपडा नवा वणाय ।
 धोवाय दीवा पुण्य है, के सीवा दीधा त्हाय ॥ ११९ ॥
 पात्रेज दीधा पुण्य है, तथा कृपात्र विपेह ।
 साधु असाधु नें दिया, किण्ण म पुण्य कहेह । १२०।
 गणिका चोर कसाई प्रते, दीवां पुण्य वधाय ।
 समुच्चय वत्य पुण्य कह्यो, उत्तर देवो न्याय । १२१।

मन पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्ज्क अशुद्ध जवून्य ।
 मन प्रवर्त्ताया पुण्य छे, के निर्वद्य मन थी पुण्य ॥१२१॥
 पंच आश्रव सेवण तणा, मन थी पुण्य वधाय ।
 पच आश्रव छोडण तणा, मन थी पुण्य वधाय ॥१२२॥
 समुच्चय मन पुण्ये कह्यो, सावद्य मन प्रवर्त्ताय ।
 ते थी पुण्य वधे के नहिं, उत्तर देवो ताय ॥ १२३ ॥
 वच पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्ज्क अशुद्ध जवून्य ।
 वच दोटया थी पुण्य छे, के निर्वद्य वच थी पुण्य ॥१२४॥
 समुच्चय वच पुण्ये कह्यो, मुख में वोलै गाल ।
 एक पुण्ये नवकार शुद्ध, किण थी पुण्य न पन्हाल ॥१२५॥
 काय, पुण्ये समुच्चय कह्यो, सावज्ज्क तन प्रवर्त्ताय ।
 तेह थकी पुण्य तप हुवै, के निर्वद्य तनु थी याय ॥१२६॥
 शीत तप्त तनु थी खमे, ते थी पुण्य वधाय ।
 गेहु पीसै छेदै हरी, ते थी पुण्य वध थाय ॥१२७॥
 हिन्सा मूट अदत्त फुन, चौथो आश्रव ताहि ।
 समुच्चय काय पुण्ये कह्यो, इण थी पुण्य के नहिं ॥१२८॥
 नमस्कार, समुच्चय कह्यो, सिद्ध साधु प्रति जोय ।
 नमस्कार किया पुण्य छे, के अन्व प्रते की वां होय ॥१२९॥
 कुत्ता भाई, राम राम, कागा भाई - राम ।
 इम चीण्डाल भगी नम्यां, पुण्य छे, के नहिं तामा ॥१३०॥

विनय करै सधला तणो, विनय वादी अवलोय ।
 तसु पापण्डी प्रभु कह्यो, सृत्र ए वच जोय ।१३२।
 जो नमस्कार सहु नै किया, पुण्य कहे मति मद ।
 ते केहायत जाणवा विनय वादीरा अथ ॥१३३॥
 अन्न पुण्य समुच्चय कह्यो, ते माटे अवलोय ।
 सहु नै अन्न दीधा थका, पुण्य कहे जे कोय ।१३४।
 तसु लेखै समुच्चय कह्या, मन पुण्य वच पुण्य काय ।
 ए पिण्य अशुद्ध तीनों थकी, पुण्य तणो वध थाय १३५।
 जो सावद्य मन वच कायथी, पुण्य वध नहिं थाय ।
 अन्न पिण्य दिया कुपात्र नै, पुण्य ववै किणन्याय १३६।
 नमस्कार पुण्ये अपि, समुच्चय काहिये पेख ।
 सहु नै नमण किया थका, पुण्य वध तसु लेख, ।१३७।
 गणिका चौर कसाई प्रति, कर जोडी नमस्कार ।
 कीधा पिण्य पुण्य वव हुवै, जसु लेखै अवधार ।१३८।
 सर्व भणी जो अन्न दिया, बलि सहु नै नमस्कार ।
 कीवा पुण्य तो देखलो, सप्तम् अङ्ग मम्कार ॥१३९॥
 अन्य तीर्थी नै नहिं करुं, वदना ने नमस्कार ।
 अशणादिक पिण्य चुं नहीं, आणाद व ह्यु उदार ।१४०।
 मुनि विन अन्य प्रति अन्न दियां, बलि कियां नमस्कार ।
 पुण्य हुवै तो किम लियो, आनन्द अभिग्रह सार १४१।

जसु अन्न दीवा पुण्य हुअे, तेहने पिणो शिरनांम ।
 नमस्कार कीधां छता, पुण्य हुवे छै तांम ॥१४२॥
 ते नवही निर्गद्य छै, साधू नै नमस्कार ।
 कीधां पुण्य छै तो तसु, अन्न दीवा पुण्य सार ॥१४३॥
 जल पिण निरदोषण तसु, दीवा पुण्य सु देख ।
 जाग। पिण तसु सूक्तती, आप्यां पुण्य सु पेट ॥१४४॥
 सयण पाट प्रमुख तसु, दीवां पुण्य सु जोय ।
 वत्य पिण निरदोषण तसु, दीवा थी पुण्य होय ॥१४५॥
 मन वच काया पिण बलि, निरवद्य थी पुण्य वं व ।
 नमस्कार पद पंच प्राति, कीधा पुण्य सु सध ॥१४६॥
 निरवद्यै लेखे नबू, बोल शरीपा शुद्ध ।
 नधू शरीपा नवि कहे, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
 साधू नै कल्पे जिफे, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
 द्रव्य अनेरा नवि कत्या, देखो तज पख पात ॥१४८॥
 अन्न साधुरे जोई ये, जल पिण सुनिरै त्हाय ।
 चाहिजे तिण कारणे, पाण पुण्य कहिवाय ॥१४९॥
 जागा पाट वाजोगदि नौ, पडै साधुरे कांम ।
 कपडो पिण साधू तणे, अवश्य चाहिजे तांम ॥१५०॥
 इम कल्पे साधू भर्षी, आख्या तेहिज बोल ।
 देखोजी देखो तुम्हे, आख हीयारी खोल ॥१५१॥

साधु विन जो अन्य प्रति, दीया पुण्य जो होय ।
तो गाय पुण्य किमनवि कह्यो, भंग पुण्य पिण्य जोय
सुपराण पुण्य रूपो पुण्य, हीरो, पुण्य-उदार ।
मोती नें माणक पुण्ये, नेती पुण्य विचार ॥१५३॥
इत्यादिक सुनिवर भखी, नहिं कल्पे ते बोल ।
सुत्र पिपे ते नावि कह्या, देवोजी दिल सोल ॥१५४॥
मुनि प्रति नहिं कल्पे तिभो, टक ही बोल कहत ।
तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीर्घे पिण्य, पुण्य हु-त ॥१५५॥
जब को कह कह्यो अर्थ, भें, पात्रे अन्न दीयेत ।
तीर्थर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बवेह ॥१५६॥
पात्र यकी जो अन्य प्रति, दीया अनेरी ताहि ।
पुण्य प्रकृति बवे इसो, फह्यो अर्थरे माहि ॥१५७॥
तसु कहिजे जे पात्र नें, दीवें छता जु तेह ।
तीर्थर नामादि जे, पुण्य प्रकृति बवेह ॥१५८॥
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
इक ही वाकी नविरही, निगल पिचारो न्याय ॥१५९॥
ऋषिमादिक कहिये इहा, जिन चउ बीस सु आय ।
गौतमादिक गुण वे करी, चउद सहस्र मुनिराथा ॥१६०॥
तिग तीर्थर नामादि इम, आदि शब्दर माहि ।
पुण्य प्रकृति आवी सहु, वाकी रही न कोय ॥१६१॥

जसु अन्न दीधा पुण्य हुअै, तेहनें पिण शिरनाम ।
 नमस्कार कीधा छता, पुण्य हुअै छै ताम ॥१४२॥
 ते नवही निर्वद्य छै, साधु नै नमस्तार ।
 कीधां पुण्य छै तो तसु, अन्न दीधा पुण्य सार ॥१४३॥
 जल पिण निस्दोषण तसु, दीवां पुण्य सु देख ।
 जागा पिण तसु सृभ्तती, प्राप्या पुण्य सु पेश ॥१४४॥
 सयण पाट प्रमुख तसु, दीवा पुण्य सु जोय ।
 वत्य पिण निस्दोषण तसु, दीवा थी पुण्य होय ॥१४५॥
 मन वच काया पिण बलि, निस्वद्य थी पुण्य बंध ।
 नमस्कार पद पंच प्रति, कीधा पुण्य सु सध ॥१४६॥
 निस्वद्यै लेखे नवू, बोल शरीपा शुद्ध ।
 नवू शरीपा नवि कहे, श्रद्धा तास विरुद्ध ॥१४७॥
 साधु नै कल्पे जिफे, तेहिज द्रव्य आख्यात ।
 द्रव्य अनेरा नवि कल्या, देखो तज पस पात ॥१४८॥
 अन्न साधुरे जोई ये, जल पिण मुनिरै त्हाय ।
 चाहिजे तिण कारणे, पाण पुस्य कहिवाय ॥१४९॥
 जागा पाट वाजोगदि नौ, पडै साधुरे काम ।
 कपडो पिण साधु तणे, अवश्य चाहिजे ताम ॥१५०॥
 इम कल्पे साधु भर्णा, आख्या तेहिज बोल ।
 देखोजी देखो तुम्है, आख हीयारी खोल ॥१५१॥

साधू विन जो अन्य प्रति, दीया पुण्य जो होय ।
तो गाय पुण्य किमनवि कह्यो, भेश पुण्य पिण्य जोय
सुखण्य पुण्य रूपो पुण्य, हीरो, पुण्य-उदार ।
मोती नें माणक पुण्ये, खेती पुण्य विचार ॥१५३॥
इत्यादिक मुनिवर भणी, नहिं कल्पे ते बोल ।
सुत्र विषे ते नवि कह्या, देखोजी दिल सोल ॥१५४॥
मुनि प्रति नहिं कल्पे तिको, एक ही बोल कहत ।
तो तुम्हे कहता अन्य प्रति, दीये पिण्य पुण्य हु-त ॥१५५॥
जब को कह कह्यो, अर्थ में, पात्रे अन्न दीयेह ।
तीर्थकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति वनेह ॥१५६॥
पात्र यकी जो अन्य प्रति, दीया अनेरी ताहि ।
पुण्य प्रकृति वने इसो, कह्यो अर्थ रे माहि ॥१५७॥
तमु कहिजे जे पात्र-ने, दीये अन्नता जु तेह ।
तीर्थकर नामादि जे, पुण्य प्रकृति वनेह ॥१५८॥
आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
इक ही वाकी ननि रही, निमल विचारो न्याय ॥१५९॥
ऋषभादिक कटिने इहा, जिन चउ बीस सु आय ।
गाँतमादिक गुण वे करी, चउद सहस्र मुनिराय ॥१६०॥
तिम तीर्थकर नामादि इम, आदि शब्द रे माहि ।
पुण्य प्रकृति आनी सहु, वाकी रही न कोय ॥१६१॥

पात्र थकी जो अन्य प्रति, दीयां अनेरी जाण ।
 पुण्य प्रकृति वधै तिको, अर्थ विरुद्ध पाहिछाण । १६२।
 आदि शब्द में तो जिके, पुण्य प्रकृति सहु आय ।
 बलि अनेरी पुण्य नीं, प्रकृति किसी कहिवाय । १६३।
 किणहिक ठाणा अङ्ग में, छे ए अर्थ जवून्य ।
 सहु ठाणा अङ्ग में नहीं, पाठ विना अर्थशून्य । १६४।
 अन्य प्रति शीधां अन्न जे, पुण्य प्रकृति वंधेह ।
 वृत्ति विषै ए नवि कह्यो, अभय देव सूरेह । १६५।
 पात्रे अन्न देवा थकी, जे तीर्थकर नामादि ।
 पुण्य प्रकृति नों वंध ते, अन्न पुण्य सवाद ॥ १६६॥
 वृत्ती विषै इतरोज छे, पिण्य अन्य प्रति दीधा सोय ।
 वधै अनेरी पुण्य प्रकृति, एहवु कह्यो न कोय । १६७।
 पाठ विषै पिण्य ए नहीं, वृत्ति विषै पिण्य नाहि ।
 सूत्र थकी पिण्य नहिं मिलै, ए विरुद्ध अर्थ इणान्याय
 अन्न पुण्ये को अर्थ शुद्ध, वृत्ती विषै कर्णु सोय ।
 पात्रे दीयां पुण्य कह्यु, प्रत्यक्ष ही अवलोय । १६८।
 वृत्तिमानै तसु लेख पिण्य, पुण्य पात्रे ज दीयेह ।
 अर्थ न माने एह तिण्य, वृत्ति न मानी तेह । १७०।
 सूत्र भगवती सुगडाङ्ग, उत्तराध्ययन उजेस ।
 असजती प्रति दान दे, कल्या अशुभ फल तास । १७१।

इम जागी उत्तमा नरा, राखो सूत्र प्रतीत ।
 श्रीजिन आण उथाप नै, मती को करो अनीत १७२
 ठाया अङ्ग ठाये तुर्य वर, तुर्य उदेशा मॉय- ।
 च्यार मेह प्रभु आसिया, सामन ज्यो चित्त त्याय १७३
 इरु वेंपे जे खेत्र मँ, असेत वेंपे नाहि- ।
 अखेत वेंपे एक पिण खेत्र न वेंपे ताहि ॥ १७४ ॥
 इरु खेत्रे पिण वर्पा तो, अखेत्रे पिण वर्पाय ।
 इरु खेत्रे नाहि वर्पतो, अखेत वेंपे नाहि ॥ १७५ ॥
 इण दृष्टान्ते पुरुष नीं, व्याग जाति कडियाय ।
 देवे पात्र विपे जु इरु, दिवे, कृपात्रे नाहि ॥ १७६ ॥
 इह विन कला कृपात्र नै, उ खेत्र सु-वन् न्याय ।
 ज्ञानो जिहा ऊगे नहीं, ते कृपात्र राहियाय ॥ १७७ ॥
 ते माटे जु कृपात्र नै, दीधा घुम अरु ।
 ऊगे नाहि त्रिण कारणे, कल्या कृ खेत्रे भूर ॥ १७८ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ बाबीसन्तु श्रावक नै दीयां स्यू
 थाय, ते अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै श्रावक भणी, अशरीादिक आपेह- ।
 तेहनें स्यू फल मपज, हिय तसु उत्ता लेह ॥ १ ॥

द्वितीय सुगडाश्रद्धे कह्यो, द्वितीय अध्येन विपेह ।
 अथवा प्रथम उपङ्ग में, प्रश्न वीस में लेह ॥ २ ॥
 खाणो नै फुन पीवणो, श्रावक तणो सुं जोय ।
 अत्रत मांहे आखियो, वलि गहणो अवलोय ॥ ३ ॥
 त्याग त्याग सहु व्रत है, राख्यो जे आगार ।
 तेहनै अत्रत आखियै, वारू न्याय विचार ॥ ४ ॥
 दूजो आश्रव दाखियो, अत्रत नै जिनराय ।
 द्वाणांगद्वाणें पाच में, वलि समवायाङ्ग माहि ॥ ५ ॥
 भाव शस्त्र अत्रत भणी, भाष्यो श्री जग भाण ।
 शङ्का हुवे तो देखल्यो, द्वाणाङ्ग दर में ठाण ॥ ६ ॥
 तिण सू हियै विचारियै, श्रावक नै अवलोय ।
 अत्रत सेवायां छता, धर्म पुण्य किमहोय ॥ ७ ॥
 श्रावक ते विरतें करी, देव वैमानीक धाय ।
 कह्यु भगवती प्रथम शत, अष्टमोद्देशक माहि ॥ ८ ॥
 ग्रहस्थ नै देवो तज्यो, स्यूं जाणी मुनिराय ।
 ते ससार भ्रमण तणो, हेतु जाणी त्हाय ॥ ९ ॥
 सुयगडाग नवमै कह्यो, गाहा तेवीसम् ताहि ।
 तिण सुं श्रावक आवियो, प्रत्यक्ष ग्रहस्थ माहि ॥ १० ॥
 पनरमोद्देश निशीथ में, मुनि अन्य तीर्थी प्रतेह ।
 अथवा ग्रहस्थ प्रते वली, अशर्णादिक आपेह ॥ ११ ॥

वस्र पात्र फुन कम्बली, रजोहरण सुविचार ।
 ए आठ बोल देवै तसु, दह चौमासी धार ॥१२॥
 देतां प्रति अनुमोदिया, दह चौमासी आय ।
 ते माटे ग्रहस्थ विपे, आवक पिण इहा आय ॥१३॥
 तसु मुनि पोते दे नहीं, बलि जसु देवै कोय ।
 अनुमोदे नाहि तेह नै, ऋषि आचार सु जोय ॥१४॥
 तृतीय करण अनुमोदिया, दह चौमासी आय ।
 तो प्रथम करण देवै तसु, धर्म पुण्य किमथाय ॥१५॥
 पाडिमावारी पिण इहा, आयो ग्रहस्थ विपेह ।
 तसु अशुभादिक नाहि दिये, महा मुनी गुण गेह १६
 ते पाडिमावारी प्रते, ग्रहस्थ दिये को आहार ।
 तो मुनि अनुमोदे नहीं, देखो न्याय विचार ॥१७॥
 देता प्रति अनुमोदियां, मुनिवर नै दह आय ।
 तो देणवाला नै धर्म किम, तसु खाणो अन्नत माहि १८
 गौतम प्रति सथार में, आनन्द आरूपो एम ।
 हेभदन्त हू गृहस्थ छु, गृहि मज्जक वसू जतेम ॥१९॥
 ते गृही मज्जक वसता भणी, इतरो अवधि उप्पन्न ।
 पूर्व दिशि लवणो दधी, जोयण पंचसयजन्न ॥२०॥
 देखू ते हू क्षेत्र प्रति, दक्षिण पश्चिम एम ।
 बलि उत्तर दिशि नै विपे, चूल हेमवंत तेम ॥२१॥

ऊंचो सौधर्म कटप लग, अशे नरक धुर तास ।
 सहस्र चौराशी वर्ष स्थिति, लोलुच नरका वास ॥२२॥
 गौतम बोल्या एवडो, मांटे अवापि उदार ।
 ग्रहस्थ भणी नही ऊपजै, हे आनन्द विचार ॥२३॥
 ते मांटे तु एहनी, लै आलोवणुं सार ।
 जाव प्रायश्चित एहनो, पाडि वर्जाये वरप्यार ॥२४॥
 नव आनन्द पुरुच्यो भदन, जे वर सत्य वदेह ।
 अत्रि छे दड तेह नै, श्री जिन वयण विपेह ॥२५॥
 गौतम कहे नहिं दड तसु वलि आनन्द कहे वाय ।
 सत्य प्रवर पच कहे तसु, प्रायश्चित जो नॉय ॥२६॥
 तो तुम्ह हीज आनोपणा, जाव प्रायश्चित लह ।
 इत्यादिक इवकार छे, देसोजी निच देह ॥ २७ ॥
 इम सप्तम अज्ञे कथो, अणु गणुनें सुविशेष ।
 आनन्द आख्यु ग्रहस्थ छु तो पाडिमानो स्यु पेख २८
 व्यावन ग्रहस्थ तणा कही, दशमे कालिक गाहि ।
 अणाचार अट्ट गीसमो, तृतीय अ येनें ताहि ॥२९॥
 गृही व्यावच सुनि नहीं करै, नथी कराने जाया ।
 करतां अनुमोदे नहीं, त्रिविध २ पचस्वाण ॥ ३० ॥
 ग्रहस्थ प्रति पूछे सुनि, सुख साता छे तोय ।
 अणाचार ते सोलमो, दशमे कालिक जोय ॥३१॥

सुख पूछ्यां वळी तिणें, साता तयु अग्याचार ।
 तो गृही नें साता किया, भिग हुवे धर्म उदार ॥३२॥
 दशाश्रुत स्कंने ज्ञारमी, पाडेमा में संपेस ।
 पेज ववण तूये नही, ज्ञात तणों सुविशेल ॥३३॥
 ते माटे कलें तसू, ज्ञात तणों जे आहार ।
 इम पेज व वण साते कही, भित्ताचरी तसु धार ॥३४॥
 पेज ववण ना अशुभ फल, ते माटे अवलोय ।
 तसु गति भित्ताचरी, ते पिण सावज्ज्म जोय ॥३५॥
 भगती अष्टम् अत विपे, पचमुद्देशक जान ।
 गानम पृच्छयो गृही करी, सागायक मुनिस्थान ॥३६॥
 तसु भंड तस्कर अपहरण, सामायक चीतार ।
 भडनी करे गवेपणा, आवक तेह तिनार ॥ ३७ ॥
 हेप्रभु ते निज भंड तणी, करे गवेपण सोय ।
 के पा भडनी ते करे, गवेपण, अवलोय ॥ ३८ ॥
 प्रभु रुहे करे गवेपणा निज भंड तणीज तेह ।
 पिण जे परना वन तणी, गवेपणा न करेह ॥३९॥
 वलि गातम पृच्छयो प्रभु, सामायिकरें मांदि ।
 ते भंड नें बोसिसावीयां, भंड अंभंड कहाहि ॥४०॥
 जिन कहे हता गोयमा, भंड अंभंड कहाय ।
 वाले गातम पृच्छयो प्रभु, तसु भंड कहे किया न्याय ॥४१॥

प्रभु-कहै सामायक विषे, ते इसी भावना भाय ।
 हिरण्य नहीं ए माहरो, बलि मुक्त सुवर्ण नाहि । ४२।
 कासी नहीं ए माहरी, नहीं वस्त्र मुक्त एह ।
 नहीं माहरो विस्तीर्ण वन, कनक रत्न मणी जेह । ४३।
 मोती नै बलि शख शिल, प्रवाल, मृग कहाय ।
 पद्म रत्न आदिक छता, सार द्रव्य मुक्त नाहि ॥ ४४ ॥
 एरी चिन्तवना प्रवर, सामायक में जान ।
 पिण ममत्व भाव जे वन थकी, न क्रियो तिण पञ्चलाण
 तिण अर्थे इम आखीयो, निज भंड तणीज जेह ।
 गणेषणा पिण परतणा, भंड नी नहीं करेह ॥ ४६ ॥
 प्रगट, पाठ में इम, कह्यो, ते मटि अवलोय ।
 सामायक में धन थकी, ममत्व भाव तसु जोय । ४७।
 ममत्व भाव पञ्चख्यो नयो, गृही सामायक माहि ।
 तो पडिमा में धन तणी, ममत्व तजी, किम ताहि ४८।
 ममत्व, तजी नहीं ते भणी, वन तेहनो ज कहाय ।
 तिण सु सामायक मक्के, मुनि प्राति द्रव्य वहिणाय ४९।
 द्रव्य अनेरा नौ हुवे, ते मुनि- प्राति जो देह ।
 तो तेहनी आज्ञायकी, वहिसवि सुन, गेह ॥ ५० ॥
 पिण ममत्व भाव पञ्चख्यो नहीं, तिण सु तसु द्रव्य जोय
 वहिसयां आज्ञा तणी, कारण नाहि छे कोय । ५१।

तिण ज उदेशे पूछियो, गृही सामायक माहि ।
 कोई पुरुष सेवे तदा, तसु भार्या प्रति श्याय ॥५२॥
 हे प्रभु ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवेह ।
 तथा अभार्या प्रति तदा, सर्वे इम पूछेह ॥ ५३ ॥
 जिन कहै ते श्रावक तणी, भार्या प्रति सेवत ।
 अभार्या प्रति सेवे नहीं, वलि गौतम पूछंत ॥५४॥
 हे प्रभु सामायक विषे, भार्या अभार्या होय ।
 जिन कहै हता गोयमा, भार्या अभार्या जोय ॥५५॥
 किण अर्थ प्रभु इम कहु, भार्या प्रति सेवत ।
 अभार्या प्रति सेवे नहीं, तव भाषे भगवत ॥५६॥
 जिन कहै सामायक विषे, इसी भावना भाय ।
 माता नहिं छे माहरी, पिता न म्हारो ताहि ॥५७॥
 भ्राता ते म्हारो नहीं, भगिनी माहरी नाहि ।
 भार्या माहरी को नहीं, सुत म्हारो नहिं ताहि ॥५८॥
 नहिं छे म्हारी पुत्रिका, सुतनीं बहू विमास ।
 ते पिण माहरी को नहीं, करे इम चिन्तवणा तास ॥५९॥
 प्रेमरूप बंधन वलि, तसुं बोछिन्न न हुन्त ।
 तिण अर्थे नहिं तेहनी, भार्या प्रति सेवन्त ॥६०॥
 इह विव प्रभुजी आखियो, सामायकरे माहि ।
 प्रेम बंधन छेद्यो नयी, मात प्रसुख नू ताहि ॥६१॥

इम हिज पडिमा नै विपे, मात प्रमुख नूं सोय ।
 प्रेम वधन तूझे नयी, न्याय विचारी जोय ॥६२॥
 इज्ञारमी पडिमा मके, न्यातीला नों धार ।
 प्रेम वधन तूझे नयी, तिणसु ले तसु आहार ६३
 वल्लु दशाश्रुत स्केध इम, ते माटे अवलोय ।
 पेज्भक वंवन खाते तसु, आहार लेव पिण्णहोय ॥६४॥
 पूछ्यां जिन आज्ञा न दे, लेण वाला नै जोय ।
 देण वाला नै पिण्ण नहीं, जिन आज्ञा अवलोय ६५
 जिन आज्ञा वार नहीं, धर्म पुण्यगे अश ।
 वर्म रुहे आज्ञा विना, तसुं कहिये मति अश ॥६६॥
 सूत्र भगवती नै विपे, सप्तम् शतके भेय ।
 प्रथम उद्देशा नै विपे, दाख्यो श्री जिन देव ॥६७॥
 सामायक माहे कही, श्रावकनी संपेख ।
 आत्म ते अधिकरण इम, प्रगट पाठ में लेख ॥६८॥
 शस्त्र जे पट् काय नों, अधिकरण कहिवाय ।
 तसु तीखो कीधां छना, वर्म पुण्य किम वाय ॥६९॥
 इमहिज पडिमा नै विपे, श्रावक आत्म जाण ।
 अविक्रम्या न्याये कनी, वारु करी, विनाण ॥७०॥
 सामायक में आत्मा, तसुं अधिकरण आख्यात ।
 तो जे सामायक विना, तेह, तणी सी वात ॥७१॥

पट्ट पोसा इक मास में, अष्ट पोहरिया करेह ।
 थया वोहितर वर्ष में, सवत्सरि इक लेह ॥ ७२ ॥
 एह तीहोत्तर दिन तर्णों, व्याज तसु घर आय ।
 बलि तोटादि नफा तर्णों, तेहिज धणी कहाय ॥ ७३ ॥
 घर पुत्रादिक जन्मीया, हर्ष हिये तसु आय ।
 चित्त उदास हुये मृथा, पेज्क वधन इम थाय ॥ ७४ ॥
 तोटो सुग विलखो हुये, नफो सुणी विकसाय ।
 सामायक पोपहमज्के, ममत्त भाव इण न्याय ॥ ७५ ॥
 इमहिज पाडिमारे विषे, हर्ष सोग चित्त आय ।
 पेज्क ववण आरयो प्रभु, न्यातीला सू त्हाय ७६ ॥
 एरु लखपती शेठ जसु, मात पिता परिवार ।
 स्त्री पुत्रादिक को नहीं, एकलंडो अवधार ॥ ७७ ॥
 लाख रूपईया रोकडा, मित्र भणी ज भलाय ।
 श्राकन नी पाडिमा बह, एकादश लग ताहि ॥ ७८ ॥
 मित्र तर्णे व्रत पचमे, निज पोताना जाण ।
 सहस्र दाम उपरन्त सु, राखण से पञ्चवार्य ॥ ७९ ॥
 पाडिमा वारी ना जिने, लाख दाम राखत ।
 तेह तर्णी अव्रत तर्णों, अघ क्रिया नै लागत ॥ ८० ॥
 तथा रुपइया लाख जे, क्रियारा परिग्रह माहि ।
 पोतै रखवाली करै, पिण तसु परिग्रह नाहि ॥ ८१ ॥

पाडिगा धारीना प्रगट, परिग्रह मांहि पिछाय ।
 अविस्त नों लागे तसु पाप तिरन्तर जाण ॥८२॥
 सगत्त भाव पञ्चरयो नथी, पाडिगा में इग्न्याय ।
 सागायक जिण तेहनु, तहु अधिकरण कहाय ॥८३॥
 तथा लसपठी शेट इरु, पुत्रादिक नहि कोय ।
 गुमास्ता बहु तह नें, पिणज करै आलोय ॥८४॥
 दुकान वाणोत्त भगी, शेट भलावी सोय ।
 श्रावक नी पाडिगा वहे, एकादश लग जोय ॥८५॥
 व्याज आवै रुपइया तर्गो, ते किर्णरा घर माहि ।
 बलि तोटा रु नफा तर्गो, कॅवण रगी कहिवाय ॥८६॥
 पाडिमाधारी ना प्रगट, घर में आवै व्याज ।
 नफा श्रने तोटा तर्गो, एहिज वणी समाज ॥८७॥
 लाख तणा बे लाख थया, परिग्रह इणरो हीज ।
 सहस्र पचास रह्या छता, तोटो तास कहीज ॥८८॥
 पाडिगा में पिण पचमूं, देश व्रत गुण ठाय ।
 जे जे तसु आगार छे, ते ते अव्रत जाण ॥ ८९ ॥
 खाणों पीणों तेहनों, अविस्त माहीं जोय ।
 तसु अव्रत सेना वियां, र्म पुण्य किम होय ॥९०॥
 पाडिमा धारी आहार ल्ये, तेह नें तो कह पाप ।
 तो देवै तसु धर्म किम, देखो थिर चित्त थाप ॥९१॥

जो लेण वाला नै पाप छै, पाप लगायो जास ।
 वर्म पुण्य किण विवहुअ, जोवो हिय विमास ॥६२॥
 लेण वाला नै जे हुवै, देण वाला नै तेह ।
 जिन आज्ञा नहि विहु भगी, विहु नै अघ बधेह ॥६३॥
 जे पाहिगा धारी विना, अन्य तखो पिण देख ।
 खाणों पीणों पाहिणों, अनिरत मे सपेख ॥६४॥
 ते माटे मुनि दै न तसु, दीयां आवि दंड ।
 अनुगोद्या पिण दड हे, सूत्र निशीय सुमड ॥६५॥
 आनरु जिमावण तणी, जिन आज्ञा दे नाहि ।
 आज्ञा विन नहि वर्म पुण्य, देखोजी दिल गाहि ॥६६॥
 समदृष्टी श्रवै समों, जिन आज्ञा मे धर्म ।
 आज्ञा बारे वर्म नहीं, ए जिन शासन धर्म ॥६७॥
 कहि कहि नै कितरो कहु, वर्म न आज्ञा बार ।
 आज्ञा माहीं पाप नहीं, श्रध्या सम्यक्त्व सार ॥६८॥
 इम, सामल उत्तम नरा, राखो जिन सु प्रतीत ।
 आज्ञा बारे वर्म कही, करमी नहीं अनीत ॥६९॥

॥ इति ॥

॥ अथ तेवीसमों अनुकम्पा अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै असजती भगी, जेह बचवि जाण ।
 स्युं फल तास समुपजे, तसु उत्तर पाहिछाण ॥१॥

जीव छोडावे दाम दे, जिन मुनि नाहिं दे आंण ।
 अनुमोदै पिण नाहिं तिके, सावज्भरा पञ्चखाण ॥२॥
 मुनि दीक्षा लीधी तदा, सर्व सावद्य पञ्चखेय ।
 जीव छोडावे नाहिं तिके, निज वस्त्रादिक देय ॥३॥
 ग्रहस्य छोडावे दाम दे, जो मुनि अनुमोदेह ।
 तृतीय करण भागे तसु, पाप कर्म बंधेह ॥ ४ ॥
 तृतीय करण अनुमोदवै, लाग पाप जचून ।
 तो दाम दिये ते धुर करण, केम हुवै तसुं पुण्य ॥५॥
 सामायक पोषह विपै, सावद्य प्रति पञ्चखेह ।
 जीव छोडावे नाहिं तिके, निज वस्त्रादिक देह ॥६॥
 खोटो सावद्य जाण कै, जे त्यागो मुनिराय ।
 ग्रहस्य ते सावद्य किया, वर्म पुण्य किम याय ॥७॥
 अथव पाप सहित जे, सावद्य कहिये तास ।
 अतर आख उघाड ने, वारू न्याय विमांस ॥८॥
 निशीय उद्देशे वार में, मुनि अनुकम्पा आंण ।
 तृणादिके पाशे करी, जो बाधे त्रश प्राण ॥ ९ ॥
 अथवा बांधता प्रते, जो अनुमोदे ताय ।
 चौमासी तसुं प्रायाश्चित, प्रगट पाठ में वाय ॥१०॥
 इमहिम बध्या जीव नै, छोडे तो दंड पाय ।
 छोडता प्रति जे वली, अनुमोद्या दह आय-॥११॥

ए प्रत्यक्ष पाठ विपै कथ्यो, अनुकम्पा ए जान ।
 सावद्य छे तिण कार्णो, दण्ड कथ्यो भगवान् ।१२।
 छोडै तसुं अनुमोदियां, तृतीय करण दण्ड रूयात ।
 तो छोडै ते धुर करण, तास वर्म किम यात ।१३।
 असजतीरो जीवणो, बछे नहिं मुनिराय ।
 मरणो पिण नहिं बछ्खो, ए राग छेप कहिवाय ।१४।
 असजतीरो जीवणो, वक्खयां धर्म जु होय ।
 तो ए अनुकम्पा तणो, प्रायश्चित किम जोय ।१५।
 सावद्य ए अनुकम्प छे, तिण सु दंड छे तास ।
 निर्वद्य नो दड हुवे नही, जोवो हिय विमास ।१६।
 अनुकम्पा नें अर्थ ही, कृष्णे ईट उपाड ।
 मृकी वृद्ध तणै धौ, अतगडे अधिकार ॥ १७ ॥
 राणी धारणी गर्भ नीं, अनुकम्पा नें अर्थ ।
 पथ्य अनादिक भोगव्या, ज्ञाता माहि तदर्थ ।१८।
 सुलसानी अनुकम्प करि, देवकी ना सुत आणि ।
 मृक्या हरण गवेपी सुर, अतगड मे जाण ॥१९॥
 अभय कुमार तणी वली, अनुकम्पा चित्त आणि ।
 दोहलो पूरयो मित्र सुर, ज्ञाता मे जिन वाणि ।२०।
 रत्तन छीप देवी तणी, जिन ऋषि करुणा कांय ।
 ज्ञाता नवम् अध्येन कहु, सावद्य यह प्रसिद्ध ।२१।

इत्यादिक अनुकम्प नी, जिन आज्ञा दे नाहि ।
 ते मदि सावद्य तिके देखोजी दिल मांहि ॥ २२ ॥
 जीव हस्ये मुज कारण, चिन्तव नेम कुमार ।
 तोरण थी पांछा पिरया, ए अनुकम्पा सार ॥ २३ ॥
 जीव हणन्ता नेम ना, विराह निगत पिछाण ।
 तैटारयो पापपोता तणों, जिन आज्ञा तिहां जाण २४
 गज भव सुशलो नवि हणयो, कष्ट भोगण्यो आप ।
 निर्मद्य ए अनुकम्प छे, गजटाल्यो निजे पाप ॥ २५ ॥
 उत्तराञ्जयण इरु वीस में, चोर देख समुद्र पाल ।
 छोढायो आर्यु नथी, चरण लियो सुविशाल २६
 दूजो श्रुतस्कंध अङ्ग धुर, तृतीय अ येन विचार ।
 प्रथम उद्देश कह्यो मुनि, वेठो नाव मकार ॥ २७ ॥
 छेद्रकरी जल आवतो, देखी अहम्य प्रतेह ।
 वतावण्यो नहि जिन् कह्यो, प्रत्यक्ष पाठ विपेह २८
 उदक भगती नाव ए, देव तुरत वताव ।
 एह वु पिण नवि चिन्तवे, मन माहीं मुनिराय ॥ २९ ॥
 आप अने बहु अन्य जन, इहे उदक करेह ।
 सम भावे वेठो रहे, राग देप टालेह ॥ ३० ॥
 द्वितीय अङ्ग में आखियो, श्रुत स्वध द्वितीय विपेह ।
 पचम् अञ्जयण प्रगट, तीसमी गाथा जेह ॥ ३१ ॥

जीव सिंह व्याघ्रादि फुन, हिंसक देवी सत ।
यह मारवा जोग छे, इम न करे गुणात ॥ ३२ ॥
अथवा हिंसक देस न, यह दृग्वा जोग ज नाहि ।
गहनु पिण्ण-कादियु नई, निपुण विचारो न्याय ॥ ३३ ॥
अतिकार-एहयु वद्यु, वद्यवा-जोग ज नाहि ।
इम कहता तसुं कर्म नीं, अनुमोदनां जु थाय ३४
कथा सिंह वाघादि जे, आदि शब्दरे माहि ।
घातक जे पदकायना, ते सहु आव्या ताहि ॥ ३५ ॥
हगो कसाई अज भगो, तसु तारण अण गार ।
त्याग करणे वध तणा, दे उपदेश उदार ॥ ३६ ॥
पिण्ण वकरा नु जीवणो, वन्दे नहि मन गाहि ।
असजम जीवत वक्रणो, वन्द्यां त्रे जिनराय ॥ ३७ ॥
दश मं, अञ्जयण द्वितीय अङ्ग, चारवीसमी गाह ।
जीवित मरण न वक्रणो, असजम जीवित ताह ॥ ३८ ॥
तेरमे भयणे द्वितीय अङ्ग, तिन बीसमी गाह ।
जीवत मरण न वक्रणो, असजम जीवित ताह ३९
पनम, अञ्जयण द्वितीय अङ्ग, दशमी गाथा माहि ।
असजम जीवित प्रते, मुनि आदर न दिये ताहि ४०
तृतीय अञ्जयण द्वितीय अङ्ग, तुर्य उद्देश विपेह ।
जीवित मरण न वक्रणो, असजम जीवित तेह ॥ ४१ ॥

इत्यादिक बहु स्यान्कै, असंजम जीवित ताय ।
 बाल मरण नहिं वळणो, भाष्यो श्री जिनराय । १२।
 आप तणों नहिं वळणो, असंजम जीवित सोय ।
 तो पर नुं वळ्यां थकां, वर्म पुण्य किम होय १३।
 बाल मरण पिण आपरो, वळै नहिं मुनिराय ।
 परनु पिण वळै नहीं, वळ्यां धर्म न थाय ॥१४॥
 पण्डित मरण ज आपरो, वळै महा मुनिराय ।
 परनु पिण वळै तिको, विमल विचारो न्याय १५।
 कल्या सातमा अङ्ग में, पोपह विषै पिळण ।
 मात वचावण ऊठियो, चूलणी पिया जाण । १६।
 अमा तसु इम आखियो, भागो पोसह सोय ।
 वलि व्रत भागो कळो, भागो नियम सु जोय १७।
 मात वचावा ऊठियो, भागो पोसह ताहि ।
 तो साधु वचावै तेह नु, चारित्र भागै किम नांदि १८।
 जे कार्य कीवें छतें, पोपह चारित्र भागेह ।
 ते कार्य में धर्म किम, न्याय विचारी लेह । १९।
 द्वितीय सुगडा अङ्गे पवर छट्टा अध्येनै माहि ।
 अठारमी गाथा अमल, आद्र मुनी कहीवाय । २०।
 निज कर्म प्रतै, खपायना, वा अन्य तारण ताहि ।
 धर्म देशना प्रभु दियै, निमल विचारो न्याय । २१।

असजती जे जीव छै, तास वचावा हेत ।
 वीरि प्रभू उपदेश दे, इमनवि आग्यो तेथ ॥५२॥
 द्वितीय आचारङ्ग न विपै, द्वितीय अध्येने ताहि ।
 प्रथम उद्देशे प्रभु कल्या, ग्रहस्थलडे माहो माहि ॥५३॥
 देखी नवि चिन्ते, मुनी, मारो एह प्रतेह ॥
 अथवा इण न मतहणो, राग द्वेष वजह ॥ ५४ ॥
 द्वितीय आचारङ्ग न विपै, द्वितीय अध्येन विपेह ।
 प्रथम उद्देशे ग्रहस्थ वे, तेऊ आरभ करेह ॥ ५५ ॥
 देखीमन चिन्ते न मुनि, अग्नि उजालो एह ।
 अथवा अग्नि उजाल मति इम पिण नवि चिन्तेह ५६ ।
 तथा बुझावो अग्नि ए, अथवा मत बुझाव ।
 एहबु पिण नवि चिन्तवै, राखे मुनि समभाव ५७
 नवम् उत्तराञ्जयणे कहु, मिथला बलती देख ।
 साहसुं नवि जोयो नमी, टाल्यो राग विशेष ॥५८॥
 दशवे कालिक सातवे, पचासमी जे गाह ।
 माहो मांही सुगभिडे, इम मनु माहो मांही ॥५९॥
 तीर्थश्च माहो माहि लडे, एहनी यावो जीत ।
 इणरी जय थापो मती, मुनि न कह ए रीत ॥६०॥
 दशवे कालिक सातवे, इकावनमी गाह ।
 उपनि फुन वायरो, सीत उष्ण अत्रिकाह ॥६१॥

राज. विरोध रहित फुन, थावो देश सुगाल ।
 उपद्रव रहित, हुथो वली, इम न, कहै मुनिमाल ६२
 ए सातो होवो तथा, ए सातो मत होय ।
 ए विध पिण न कहै कदा, अमल न्याय अवलोय ६३
 दिशा मुठ जे ग्रहस्थ नै, मार्ग बताया दरुड ।
 निशीथ उद्देश तैरमें, चौमासीक प्रचड ॥ ६४ ॥
 ठाणा अङ्ग ठाणे तीसरे, तृतीय उद्देशक मॉय ।
 आत्म रक्तक तीन जे, आख्या श्री जिनराय ६५
 हिन्सादिक देखी करी, दीये धर्म उपदेश ।
 अथवा मौन रहे मुनी, समभावे सुविशेष ॥ ६६ ॥
 अथवा ऊँठी त्या थकी, एकन्त जागा जाय ।
 आत्म रक्तक एकह्या, पिण छोडावणो कह्यो नॉय ६७
 निशीथ उद्देशे ज्ञारमें, परनै भय उपजाय ।
 डारता प्रति अनुमोदै, दड चौमासी आय ॥ ६८ ॥
 ग्रहस्थ नी रक्षा करे, रक्षा कारि प्रतेह ।
 अनुमोद्या पिण दड कह्यो, निशीथ तैरमें लेह ६९
 दशवे कालिक तीसरे, ग्रहस्थ तणी मुनिराय ।
 साता पूछ्यां सोलमों, अणाचार कह्यो ताय ७० ।
 ग्रहस्थ नी व्यावच कियां, आठ त्रीसमू न्हाल ।
 अणाचार मुनिवर भगी, दाख्यो परम कृपाल ७१

करे करावे जे नथी, करता प्रते अवलोय ।
 मुनि अनुमोदे पिण नही, तो धर्म कहै किम सोय ७२
 अशणादिक ग्रहस्थी भगी, दीया मुनि ने दह ।
 अनुमोद्या पिण दह कह्युं, निशीय पनरमें मढ़ ७३
 शस्त्र है पटकाय नू, ग्रहस्थ तणो जे शरीर ।
 तसुं तीखो करवा तणी, किम आज्ञा दे बीर ७४
 घातिक जे पट कायना, तास वचावै कोय ।
 तसु प्रते आज्ञा किम दीयै, न्याय विचारी जोय ७५
 ॥ हिव साधुरी आज्ञा दाहरी ग्रहस्थ व्यावच करै
 तसुं उत्तर ॥

कोई कहै साधू तणी, व्यावच ग्रहस्थ करेह ।
 तेह विपै स्यू फल हुवै, तसु उत्तर हिवलेह ॥७६॥
 जे व्यावच मुनि नी करै, तसु आज्ञा प्रभु देह ।
 निरदोपण अशणादिकर, तेह विपै धर्म लेह ७७।
 जे व्यावच मुनि नी करै, प्रभु आज्ञा नहिं देह ।
 तेह विपै नहिं धर्म पुराय, न्याय विचारी लेह ७८
 ॥ साधुरी हरस छेद्या पुराय शुभ कृया कहै
 तेहनु उत्तर ॥

सोलम शतकै भगवती, तृतीय उद्देश विमास ।
 हरस छेदै जे मुनी तणी, कृया कही प्रभुतास ७९।

हम छेदू हू तुम्ह तणी, इम पूछया अगगार ।
 धाजा न दियै गृही भणी, तिण सु आज्ञा वार । ८०।
 कार्य कगवे नहि मुनी, ग्रहस्थ कने जे अश ।
 जवण मू जो को करे, तो न करे तास प्रथम । ८१।

॥ सौरठा ॥

ग्रहस्थ मुनी नी पेखरे, हम छेद्वे धर्म, पुण्य ।
 तो मुनि ना कार्य अनेकरे, तसुं लेखे कीया वर्म ८२
 मुनि पंग काठे जाणरे, बलि फाठे चत्तू थकी ।
 गृही काठे विण आंणरे, तसुं लेखे वर्म गृही भणी ८३
 दूखे पेट अपाररे, मुनि चित व्याकुल दुःख घणो ।
 गृही मशले कर साररे, तेह नै पिण पुण्य लेख तसु ८४
 पेटची अति दुःखे, दूठी भृती, समकही ।
 गृही मशले कर सुरुकरे, तेह नै पिण तसुं लेख पुण्य ८५
 अटवी विपै अचेतरे, हय खर सगट बैशाण नै ।
 आणै गृही पुर तेथरे, तेह नै पिण पुण्य तसु मते । ८६।
 मुनिथाको मग माहिरे, वोज घणो पोच्या तणी ।
 पगभर खीस्यो न जायरे, तो वोज उठाया पिण वर्म ८७
 अण्य बलि पुर माहिरे, संत तृणातुर चेत नहीं ।
 सचित उदक गृही पायरे, तेह नै लेखे धर्म तम्बु । ८८।

इत्यादिक अवलोचने, गृही मुनिना कार्य करे ।
हरस छेद्यां धर्म होयरे, तसु लेखे सहु में धर्म । ८८ ।
मुनि नी हरस छेदतरे, तेह नें अनुमोदै मुनी ।
दह चीमासी हुन्तरे, तृतीय उद्देश निशीथ में ॥ ८९ ॥
अनुमोद्या ही पापरे, तो गृही छेद्या पुण्य किम ।
जिन आज्ञा चित्त स्यापरे, आज्ञा विन नही वर्म पुण्य
सामायक पञ्चलागरे, निर्वद्य कार्य अन्य बलि ।
ग्रहस्थ करे को जाणरे, तो मुनि अनुमोदैतसु । ९० ।
निर्वद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधे वर्म पुण्य तसुं ।
अनुमोदै मुनि रायरे, तेह नें पिण्य धर्म पुण्य छे । ९१ ।
विण्यज अने व्यापारे, सावद्य कार्य अन्य बलि ।
ग्रहस्थ करे तिवारे, धर्म पुण्य तेहनै नथी ॥ ९२ ॥
सावद्य कार्य ताहिरे, गृही कीधे पिण्य पाप छे ।
अनुमोदै मुनिरायरे, प्रायश्चित्त आवै तसुं ॥ ९३ ॥
हरस छेदगरी ताहिरे, आज्ञा जिन मुनी न दिये ।
अनुमोदै पिण्य नांहिरे, तिण्य सु ते सावद्य अछे । ९४ ।
ग्रहस्थ पासै जाणरे, कार्य करावा मुनि तणे ।
जावज्जीव पञ्चलागरे, मर्यान्ते पिण्य नियम ए । ९५ ।
हरस गुम्बडा आदिरे, गृही पै छेदावण तणा ।
मुनि नें त्याग सवादरे, गृही छेदै जवरी यकी । ९६ ।

मुनि अनुमोदे नाहिरे, तो तसु त्याग भागै नही ।
 पिण कामी कहिवाये, त्याग भगावानौ गृही । १८६ ।
 तिण सु सावद्य एहरे, वलि अनुमोदे पिण नही ।
 आज्ञा पिण नहि देये, ते मटि नहि धर्म पुण्य । १०० ।
 जे कामी गृही थाये, त्याग भगावा मुनि तणी ।
 धर्म नहि तिण मांहिरे, न्याय दृष्ट अवलोकिये १०१ ।
 किण गृही अट्टम् कीवै, आहार च्यार त्यागन कीया ।
 व्याकूल तृपा प्रसिद्धे, यथा अचेतन अन्य गृही । १०२ ।
 उसनोदक तसु पाये, कियो सचेतन अधिक सुख ।
 नेम भङ्ग तसु नाये, पिण कामी त्याग भांगण तणी ।
 तेम इहा अवलोये, नेम भङ्ग मुनि नो नथी ।
 पिण कामी गृही होये, त्याग भगावा मुनि तणी १०३ ।
 किणही ग्रहस्य पञ्चखाणरे, हरस छेदावा ना किया ।
 जवरी सु पहिछाणरे, वैद्य हरस छेदे तसू ॥ १०५ ॥
 नेम भङ्ग तसु नाहिरे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणी ।
 कामी वैद्य कहिवाये, तिण सु धर्म न तेह नै ॥ १०६ ॥
 तिम मुनिरे पञ्चखाणरे, हरस छेदावा गृही कने ।
 जवरी सु पहिछाणरे, वैद्य हरस छेदे तसू ॥ १०७ ॥
 नियम भङ्ग तसु नाहिरे, पिण त्याग भङ्ग करवा तणी ।
 कामी वैद्य कहाये, तिण सु नहि तसु धर्म पुण्य १०८ ।

वैद्य हरस छेदेहरे, अनुमोदै नहिं जे मुनि ।
 किम तसु धर्म कहेहरे, न्याय विचारी देखल्यो । १०६।
 अनुमोद्या ही पापरे, तो छेदै तसुं पुण्य किम ।
 तृतीय करण अघ स्थापरे, प्रथम करण तो अधिक अघ
 पाप हुँ धुर करणरे, ते अघनी अनुमोदना ।
 तीजे करण उच्चरणरे, तिण लेख तसुं पाप है । १११।
 प्रथम करण पुण्य होयरे, ते पुण्य नी करणी प्रते ।
 अनुमोदै जे कोयरे, तास पाप किण विव हुवै । ११२।
 करण वाला नै पुण्यरे, ने अनुमोद्या पाप कहे ।
 प्रत्यक्ष वन्नन जघुन्यरे, न्याय दृष्ट कर देखीये । ११३।
 छेदे तिण नै पुण्यरे, ते पुण्यरी करणी प्रते ।
 अनुमोद्या जो पुण्यरे, तास पाप किण विवहुवै । ११४।
 वर्म पिता पुण्य नाहिरे, शुभ जोगा थीं निरयरा ।
 पुण्य वव पिण थायरे, ज्युं गहू लारै खाखलो । ११५।
 द्वितीय आचारङ्ग मॉयरे, तेरम अध्येन नै विपे ।
 पाठ कह्या जिन रायरे, ग्रहस्थ करे साधू तणा । ११६।
 मुनि तनु व्रणज थायरे, गृही छेदे शस्त्रे करी ।
 मुनि मनकर वान्छै नाँयरे, न करावै वचकाय करि । ११७।
 व्रण छेदी नै ताहिरे, रुधिर साधि काढे गृही ।
 मुनि मनकरि वरु नाहिरे, न करावै वचकाय करि । ११८।

गृही मुनि पगवलि कायरे, तेल चोपडे मर्दनै ।
 मुनि मन कर वळै नाँयरे, न करावे वच काय करि । १९
 गृही मुनि पगथी ताहिरे, खीलो कांठे काडियां ।
 मन करि वळै नाँहिरे, न करावे वचकाय करि । १२० ।
 मुनि मस्तक थी ताहिरे, गृही कांठे जू लीख प्रते ।
 मन करि वळै नाँहिरे, न करावे वचकाय करि । १२१ ।
 बोल इत्यादिक ताहिरे, ग्रहस्थ करे साधू तणां ।
 वळै नाँहि मुनि राये, द्वितीय आचारङ्ग तेर में । १२२ ।
 मुनि अनुमोदे नाँहिरे, तो ग्रहस्थ करे ए अति तणां ।
 धर्म पुण्य तिण माँहिरे, किण ही बोल विषे नथी । १२३ ।
 मुनि तनु व्रण छेदतरे, धर्म कहे इक बोल में ।
 तो तखु लेखे हुन्तरे, धर्म सर्व बोला मफे । १२४ ।
 धर्म पुण्य नाँहि होयरे, ते सधेला बोला मफे ।
 तो पाप गृही नै जोयरे, जिन आज्ञा नाँहि ते भणी । १२५ ।
 तिम तं हरस छेदतरे, अशुभ कृया ते वद्य नै ।
 मुनि नाँहि अनुमोदंतरे, धर्म पुण्य किण विष्य हुवे । १२६ ।
 हरस छेद्या शुभ कर्म रे, तो आचारङ्ग में कथा ।
 त्याँ सधेला में धर्म रे, कहवो तिणै लेख ए ॥ १२७ ॥ ।
 धर्म नाँहि अन्य माँहिरे, तो छेदे व्रणादि गृही ।
 तिण में पिण पुण्य नाँहिरे, एसा वद्य आज्ञा नथी । १२८ ।

हंस छेत्रा धर्म तुन्तरे, तो मुनि शिर सेती गृही ।
 जवा पिण्ण काहत्तरे, तिण्णम पिण्ण तसु लेखपुण्य १२६
 वलि मुनिवरनी सोयरे, पग चम्पी मईन करे, ।
 को जो आपध कोयरे, तसु लेख पुण्य सहु मक्के १२७
 वृत्ति विपे डम बायरे, वर्म बुद्धि छेद्या थका ।
 कृया दुश्च शुभ तायरे, अशुभ कृया लोभादि करि १२८
 विरुद्ध अर्थ छे एहरे, सूत्र थकी मिलतो, नथी ।
 मुनि नही अनुमोदेहरे, तास कृया शुभ किम हुवे १२९
 डम शुभ कृया जो होयरे, तो आपध तेलाडि करि ।
 मुनि तनु मई कोयरे, तास कृया पिण्ण शुभ हुवे १३०
 वलि मुनि पगथी तायरे, खीला काथे काडीया ।
 तसु लेख कहिवायरे, तेहने पिण्ण हुवे शुभ कृया । १३१
 वलि मुनि शिग्थी सोयरे, जवा लीखा काडीया ।
 तसु लेख अपलोयरे, तेहने पिण्ण हुवे शुभ कृया १३२
 मुनि अति नृपा अचेतरे, सचित अचित जल पाय करि
 कीयो ग्रहस्य सचेतरे, तसु लेख हुवे शुभ कृया । १३३
 याको मुनी उजाडरे, गाडे हय मर चाड करि ।
 आण आम मक्कारे, तसु लेख हुवे शुभ कृया । १३४
 इत्यादिक अपलोयरे, मुनि ने जे कल्पे नही ।
 ते करे कार्य गृही कोयरे, तसु लेख पिण्ण श

जो या बोला रै मांहिरे, नहुँव गृही नै शुभ कृया ।
 तो हरस केद्या पिण ताहिरे, किम शुभ कृया कहिजीए
 हरस केदगरी तांमरे, जिन मुनि आजा नहिं दिये ।
 जिन आजा विन कामरे, कीधा नहिं छे धर्म पुण्य १४०

॥ इति ॥

॥ अथ चौबीसमू सुभद्राधिकार ॥

॥ दोहा ॥

फांये काब्जो आखयो, सती सुभद्रा जेह ।
 किर्णा मूत्र में ए नही, कथा पिपे छे एह ॥ १ ॥
 जो सुभद्रा नै धर्म छे, तो मुनिना अवलोय ।
 अन्य कार्य बाई कीयां, तसु लेखे धर्म होय ॥ २ ॥
 दूग्य पेट मुनी तर्णी, मोत, घात अवलोय ।
 बाई मगलै उदरतो, तसु लेखे धर्म होय ॥ ३ ॥
 बालि किण ही साधु तर्णी, टली पेटची ताम ।
 बहु दुख फेरोपी घणो, अन्न नहिं भावे आम ॥ ४ ॥
 ते पेटची मुनि तर्णी, बाई मगलै कोय ।
 तो उगरे लेखे तदा, तिण में पिण धर्म होय ॥ ५ ॥
 किणही मुनि रो गोलो चढयो, बहु दुख बाई देख ।
 गोलो मगलै तेहनू, धर्म हुइ तसु लेख ॥ ६ ॥

अग्नि विपे पडता प्रते, बाई बाह पकडेह ।
 वारे काढ तेहनै, तो धर्म तसु लेखेह ॥ ७ ॥
 ऊंचा थी पडतो मुनी, बाई फेजे ताम ।
 तिण मांही पिण धर्म छे, तेहनै लेख विमास ॥ ८ ॥
 आखड पडता मुनि भणी, बाई फाल राखेह ।
 पडता नै वेठो करे, हुवे धर्म तसु लेखेह ॥ ९ ॥
 माथो दूखे मुनि तणो, बाई शिर दावेह ।
 मलम लगावे दूखणो, तसु पिण धर्म कहेह ॥ १० ॥
 पाठो वाधे दूखणो, मुच्छी फुन मुशलेह ।
 इत्यादिक बहु मुनि तणा, बाई कार्य करेह ॥ ११ ॥
 दुखी देख साधु भणी, मरतो देखी ताय ।
 पीडाणो देखी करे, साता करे सवाय ॥ १२ ॥
 फाठो काड्यो सुभद्रा, धर्म हुसी ज्यो ताम ।
 तो याने पिण धर्म छे, तिणरे लेख विमास ॥ १३ ॥
 माधुरा, कारज करे, बाई जे जिण रीत ।
 तिम कारज भाई करे, समणी ना वर प्रीत ॥ १४ ॥
 जो सुभद्रा नै धर्म छे, तो अमणी, नौ जोय ।
 भाई फांठो आख थी, काड्या पिण धर्म होय ॥ १५ ॥
 वलि काठो पग माहि थी, समणी तणोज सोय ।
 भाई काढ तेह में, तसु लेखे धर्म हाय ॥ १६ ॥

बलि गोलो श्रमणी तणो, पेट पेहची जोय ।
 भायो मगल तेह में, तसु लेखे वर्म होय ॥ १७ ॥
 शिर दावे श्रमणी तणा भायो तसु दुख देव ।
 डम मुच्छी मशल तसु, वर्महोसी तसु लव ॥ १८ ॥
 मलम लगावे दूखणो बलि अज्झा पडती जोय ।
 भायो भाने तेह नें, तसु लेखे वर्म होय ॥ १९ ॥
 पडती नें भेठी करे, इत्यादिक अवलोय ।
 समणी ना भायो करे तसु लेखे वर्म होय ॥ २० ॥
 साधुरा बाडे करे तास धर्म छे सोय ।
 तो श्रमणी ना भायो कीया, तिणामे अघ किम होय
 सुभद्रा फाटो काडियो, जो तिणामें धर्म होय ।
 तो सागं में धर्म छे, न्याय सरियो जोय ॥ २२ ॥
 जो या सहु बोला मफे, जिन आज्ञा दे नाहि ।
 तो वर्म पुण्य पिण को नहीं, वर्म जिन आज्ञा नाहि
 जे मुनीवर ने त्याग छे, ते कार्ग्य अवलोय ।
 ग्रहस्थ करे को मुनि तणा, तास वर्म नहीं होय ॥ २४ ॥
 जिण रीते जिणवर कह्यो, तिण रीते अवलोय ।
 अज्झा ने मुनिवर भर्षो, वचाविया वर्म होय २५
 जे प्रभु सीखावे नहीं, न करे तास प्रशस ।
 आज्ञा पिण देवे नहीं, तिहा वर्म तणों नहीं अस २६

॥ अथ पञ्चासि मू गोशालाधिकार ॥

॥ दाहा ॥

कोई कहै छद्मस्य प्रभु, चौनाणी या जेह ।
 किम चृका कहो वीर नै, तसु उत्तर द्विव लेह ॥ १ ॥
 बलि तुम्ह कहो गोशाल नै दीक्षा दीवी स्वाम ।
 ते किण सूत्र विपै कह्यु, तसु उत्तर पिण तांम ॥ २ ॥
 बलि अनुकम्पा करि प्रभु, राग्यो जे गोशाल ।
 तेह विपै पिण स्युं घयु, तसु उत्तर पिण न्हाल ॥ ३ ॥
 शतक पनरमें भगवती, आया सावत्यी स्वाम ।
 उत्पति गोशाला तणी, गांताम पूछी ताम ॥ ४ ॥
 वीर कहै सुण गोयमा, गौ नी शाला माँय ।
 ए जन्म्यो तिण कारणो, नाम गोशाल कहाय ॥ ५ ॥
 हू तीस वर्ष घर में रही, ग्रह्यु चरण सुख राशि ।
 प्रथम वर्ष पख पख सुतप, अट्टी ग्राम चौमास ॥ ६ ॥
 तप मास मास द्ज वर्ष, नगर राजग्रह वार ।
 नालदा पाढा मर्क, चौमासो सुविचार ॥ ७ ॥
 ततुवाय शाला विपै, हू तपकरत विशेष ।
 आयरह्यो गोशाल पिण, ते शाला इक दश ॥ ८ ॥
 प्रथम मास नृ पारणो, विजय तणी घर किछ ।
 प्रगट हुआ जे पच द्रव्य, महिमा देख प्रसिद्ध ॥ ९ ॥

गोशालो कह्यो मुक्त भणी, ये धर्मा चार्य-सोय ।
 धर्मान्तेवासी प्रभु, हू तुम्हनी अवलोय ॥ १० ॥
 तव में तेहना वचन नै, आदर न दियो कोय ।
 मनमें भलो न जाणियो, धारी मान-सु जोय ॥ ११ ॥
 द्वितीय मास नों पारणो, आणंद नै घर कीध ।
 तिमहिज गोशालै कह्यो, में आदर नहीं दीध ॥ १२ ॥
 तृतीय मास नू पारणो, कियो सुदर्शन गेह ।
 तिमहिज गोशालै कह्यो, में आदर नहीं देह ॥ १३ ॥
 तुर्य मास नू पारणो, कोलाक सनिवेश ।
 ब्राह्मण बहुल तगै घरे, करि चार्यो सुविशेष ॥ १४ ॥
 तंतु वाय शाला विषै, गोशालो तिहवार ।
 मुज प्रति तिग देख्यो नहीं, जोयोभ्यन्तर बार ॥ १५ ॥
 मुज अग्र देख्ये, निज उपाधि, ब्राह्मण नै देहाय ।
 मूढी दाडी मूछ प्रति, मिल्यो ज मुज सू आय ॥ १६ ॥
 तीन प्रदक्षण दे करी, जावनमी कहे मुज्ज ।
 ये धर्मा चार्य माहरा, हू वर्म अते यासी तुज्ज ॥ १७ ॥
 तव में गोशालक तणा, एह अर्थ प्रति सोय ।
 अङ्गीकार कीधो तदा, पाठ विषै इम जोय ॥ १८ ॥
 वृत्तिकार कह्यो एहवा, अजोरा नै पिण वेह ।
 अङ्गीकार कीधो प्रभु, ते अक्षीण राग पणेह ॥ १९ ॥

बलि तेहना परिचय यकी, ईपत् घोड़ी जाण ।
 स्नेह गर्भ अतु कम्पनां, सद्भावे पाहिछाण ॥ २० ॥
 प्रभु छद्मस्य पणै करि, जेह अनागत काल ।
 तेह त्रिपै जे दोपना, अजाणवाथी न्हाल ॥ २१ ॥
 अत्रय दोग्गहार भाव थी, कीथो प्रभु अङ्गीकार ।
 अभय देव सुरे कह्यो, वृत्ति त्रिपै ए सार ॥ २२ ॥

॥ ते टीका कहे छै ॥

अभ्युप गच्छाम यथेतस्य अयोगस्याप्यभ्युपगतं भगवत
 छदत्रोद्योगगतवा परिचये तप स्नेह गर्भानुसवा सद्भावात् छद्मस्य
 तथाऽनागत दोषानवगमात् ऽत्रय भांषीत्याद्ये तस्याप्येति
 भावनीय ।

॥ दोहा ॥

तदन्तर हूं गोयमा, गोशालारै साग ।
 भोगत्रिया पट् वर्षलग, लाभ अलाभ संजात ॥ २३ ॥
 सुख दुख नै सत्कार फुन, असत्कार फुन सोय ।
 अनित्य जागरणा जाग तो, हू विचरयो अधलोपे २४
 मृगशिमामे एरुदा, हूं गोशाला साथ ।
 नै सिद्धार्थ ग्राम थी, कुर्म ग्राम प्राति जात ॥ २५ ॥
 नल बूटो इक देख नै, मुज प्राति तव गोशाल ।
 पातिल नीपजसेर नहीं, इम पुर्योतिह काल ॥ २६ ॥

सप्तजीव, तिल पुष्प ना, मरी २ नें ताय ।
 किहा उपजसे हेप्रभु, तव हू बोल्यो बाय ॥ २७ ॥
 नीपजसे तिल थंभ ए, फूल जीव जे सात ।
 मरी मरी ए एह नें, तिलथभ विषे विख्यात ॥ २८ ॥
 एक फली जे, तिल तरणी, तेह विषे श्रवलोय ।
 ए तिल सप्त हुस्ये सही, इम में भाष्यो सोय ॥ २९ ॥
 तव गोशाले मुज वचन, श्रद्धयो नहिं मन माहि ।
 प्रतीतीयो पिण नहिं तिणें, रोचावियो पिण नहिं ३०
 मुज नें भूयो घालवा, वीरे वीरे तास ।
 पाछोवल नें आवीयो, ते तिल बूटा पास ॥ ३१ ॥
 माटी मूल सहीत तिण, तुरत उपाडी जेह ।
 एकन्ते न्हारयो तदा, ते तिल थभ प्रतेह ॥ ३२ ॥
 तत्तिण योडी वृष्टि करि, थव्यो तिल थभ स्थान ।
 थया सप्त तिल फूल चवि, एक फली में आण ॥ ३३ ॥
 गोशाला साथै तदा, हू आयो कुर्म ग्राम ।
 तेहि नगरर बाहिरें, बाल तपथी ताम ॥ ३४ ॥
 नाम वैसियापिण तिको, तप छट्ट छट्ट करेह ।
 रवि सन्मुख आतापना, तिहा लेतो विचरेह ॥ ३५ ॥
 तसुं शिर थी रवि ताप करि, युका भूमि पडंत ।
 तासं दया अर्थे तिको, बलि २ शिर धंरंत ॥ ३६ ॥

तव गोशालो मुजं पास्योः, वालं तपस्वी पाहि ।
 धीरे २ आय ने, बोल्यो एहवी वाय ॥ ३७ ॥
 स्युं तृ मुनि तपस्वी अछे, तया तत्र नृ जाण ।
 यती तथा तं कदा ग्रही, के जृ सिज्यातर माण । ३८ ॥
 गोशालाना वचन नै, तिण आदर नहि दिछ ।
 मनमै भलो न जाणियो, सावी मान प्रसिछ । ३९ ॥
 वे त्रण वार गोशाल तव, बोल्यो तिमहिज वाण ।
 स्युं तृ मुनि तपस्वी अछे, जाव जृआ रो स्यान ॥ ४० ॥
 दाल तपस्वी, सीघ्र तवे, कोप चढयो असराल ।
 जे आतापन भूमि थी, प्राळो बालियो न्हाल । ४१ ॥
 समुद्रघात तेजस प्रति, करे करी अवलोय ।
 सात आठ पग ते तदा, पाओ उसरी सोय ॥ ४२ ॥
 मखलि पुत्र गोशाल - नै, हणवा काजे जाण ।
 कटि तेज शरीर थी, ए तेज उष्ण पित्राण ॥ ४३ ॥
 तिण अरसर हूं गोयगा, गोशालरु नी जेह ।
 तेह मखली पुत्र ना, अनुकम्पा अर्येह ॥ ४४ ॥
 बेसियायण नामे तिको, वान तपस्वी जेह ।
 तेह तणी जे तेज प्रति, दूर हरण अर्येह ॥ ४५ ॥
 तापस नै गोशाल रे, इहा विचाने न्हाल ।
 शीतल तेज लेश्य प्रति, गे मृकी तिण काल ॥ ४६ ॥

॥ चोपाई ॥

जा मुज शीतल तेजुलेश, तिण लेश्या करि नें
 सुविशेष । बेसियायण तापस नी जाणी, उन्ही
 तेजुलेश ह्याणी ॥ ४७ ॥ बेमियायण तपेशी तिह
 अर्बशर, मुज शीतल तेजु लेश्या करि । पोता
 नी जे उष्ण पिछाणी, तेजु लेश्यह्याणी जाणी
 ॥ ४८ ॥ गोशाला ना तनु नें ताह्यो, जाण्यो
 किञ्चित पीड न पायो । देखुं आवि छेद अण करतो
 ते उष्ण तेजु लेश्य मेहरतो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

उष्ण तेजु प्रति संहरी, मुजे प्रति बोल्पो नाय ।
 जाण्यो भगवन् आपने, जाण्यो २ ताहि ॥ ५० ॥
 आपतणा जे प्रशोद थी, दग्ग हुवो नहि एह ।
 संभ्रमे थी गत अवद नें, वार २ उचरेह ॥ ५१ ॥

॥ गीतिक छन्द ॥

कहु वृत्ति में गोशाल नों भगवत सरत्तण कीयो ।
 सराग भावे करि प्रभु इरु दर्यास थी राखीयो ॥
 जे उभय मुनि नवि रासस्ये ते बीत राग-पणै

वृत्ती । फुन लवित्र अण, फोडण थकी । वलि
अवश्य भावी भाव थी ॥ ५२ ॥

॥ अत्र टिका ॥

इह च यद्गतास्तामकस्य मेरुवण भगवता शृतेतरागलेन
द्वैकरमत्वाद्भगवतः यत्र मुनस्रप्रसवाण्युमान् मुनिपुङ्गवयोर्न
करिष्यन्ति तद्गीतरागलेन साविधेनुपप्रविकत्वात् भवश्यं यावि
त्वादे रयवमेव ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

गोशाला तिगा अवर्था मुज प्रति बोत्यो वाय ।
जु सिध्यातरिया किन्नु तुज प्रति भापताहि ॥ ५३ ॥
जागया भगवत तो भणी, जागया जागया सोय ।
तव हू गोशाला प्रने, इम बोत्यो अउलोय ॥ ५४ ॥
हे गोशाला तू इहा, बेमियायगा नागेह ।
वाल तपश्ची प्रति तदा, देवी नेत्र करेह ॥ ५५ ॥
धीरे र ऊमरी, मुज पासा थी ताहि ।
जिहां बेमियायगा तिहा, जई बोत्यो इम वाय ॥ ५६ ॥

॥ चोपाई ॥

स्पृ तू मुनी तपश्ची के कोई, तथा तत्व नों जाण
सु होई । स्पृ तू यती कदाग्रही कहियो, के तू जू

नृ सिन्ध्यात्तरीयो ॥ ५७ ॥ वेशिमायण तपश्ची
 तिहवार, तुज वच् आदर न दिये लिगार ।
 मनमें पिण भलो न जाणो, रह्यो मृन धरी तिह
 टास्ये ॥ ५८ ॥ अहो गोशाला तं तव हेरु तिण
 बाल तपश्ची, प्रतेज फे । तृ मुनी के जाव जू सेय्या
 तरियो, इम वे प्रण वां उच्चरियो ॥ ५९ ॥ तं
 बाल तपश्ची सोध कोप्यो, जाव पाछो ऊक्षर चित्त
 रोप्यो । तुम्ह हणवा, तेज मूकेह, तव दू तुम्ह
 अनुकम्पा अर्थेह ॥ ६० ॥ तिगारी उषण तेज
 हणवा न्हाल, मृकी शीतल तेज अतराल । तव
 बाल तपश्ची चित्त ठाणी, उषण तेज हणाणी
 जाणी ॥ ६१ ॥ पीडे तुम्ह तनु नवि देखेह ।
 उषण तेजु लेश्या सहरेह । तव मुज प्राति वोत्यो
 बाय, जाणिया र हे भगवन् ताहि ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवशर गोशाल तं, सांभल बच मुम्ह पास ।
 धीहनो यावत पामियो, अतही भय मन त्रास । ६३ ।
 मुज प्राति वन्धी नमण करि, इम वोत्यो अवलोय ।
 संचित्त विस्तीर्ण, प्रभु, तेज लेश किम होय । ६४ ।

तिण अवशर हूँ गोयमा, गोशाला प्रति ताहि ।
 तेह मंखली पुत्र प्रति, बोल्यो इह विध बाय । ६५ ।
 इक मूठी उडदै करी, फुन जे उष्ण - जलेह, ।
 इक पुशली तप छट छटै, अतर रहित करेह ॥ ६६ ॥
 ऊंची बाह आतापना, सूर्य सनमुख लेह ।
 तसु छेहदै पट् मासी, तेजु लेश छै तेह ॥ ६७ ॥
 गोशालक तिण अवशरै, ए मुज अर्थ प्रतेह ।
 सम्यक् प्रकारे विनय करि, अङ्गीकृत करेह ॥ ६८ ॥
 तिण अवशर हूँ गोयमा, गोशालक सघात ।
 अन्य दिवश कुर्म ग्रामजे, नगर थकी विख्यात । ६९ ।
 सिद्धार्थ फुन ग्रामजे, नगरे आवत तांम ।
 जे तिल धम मुज पूछियो, भट आव्यो ते ठाम । ७० ।
 तब गोशालो मुज प्रते, बोल्यो एहवी - बाय ।
 मुज नें प्रभुतुम्ह जद कह्युं, तिल निपजसी ताहि ७१ ।
 तिमज सप्त पुष्प जीव चवि, एक सङ्गली माँय ।
 हुस्ये सप्ततिल तेह वच, मित्थ्या प्रत्यक्ष दिखाय । ७२ ।
 ते तिलस्थंभ न - नापनी, सप्त पुष्पना जीव ।
 चवी सप्त तिल नवि थया, इक सुगर्णी में अतीव ७३ ।
 तिण अवशर हूँ गोयमा, गोशालक प्रति बाय ।
 बोल्यो तें मुज जद वचन, श्रद्धयो नहिं मन माँय ७४ ।

प्रतीतियो नहि रोच्यो, यह अर्थ अंवल्लोय ।
 मनमें अश्रद्ध तो छतो, मूटो घालण मोय ॥७५॥
 ए मिथ्या वादी हवो, इम मन करी विचार ॥
 मुज थी पाछो ऊशरी, धीरे धीरे धारे ॥ ७६ ॥
 जिहां तिलथभ तिहां आयने, यावत एकान्त ठाम ।
 न्हां रूयो ते उपाड ने, हे गोशालक ताम ॥ ७७ ॥
 तत्खिण्ण वादल अभ् दिव्य, प्रगट थयो तिहवार ।
 अभ् बदल ते सिध् ही, तिमहि भ यावत वार ॥७८॥
 तेह तिलना स्थभ नी, एक संगली माहि ॥
 तदा उपना सप्त तिल, जेम कस्यु तिम ताहि ॥७९॥
 हे गोशाला तेह ए, तिल नृ स्थभ निष्पन्न ।
 नथी तेह अण नापनूं, निश्चय करी सुजन्न ॥८०॥
 तेह सप्त पुष्प जीव चवि, ए तिलस्थम्भनी जाण ।
 एक संगली नै निपे, थया सप्त तिल आण ॥८१॥
 इम निश्चय गोशालका, वनस्पतिरे माहि ।
 पउट्टपरिहार करै तिके, मरी मरि तखुतन आय ॥८२॥

॥ टीका ॥

पारिदल २ मूला २ यस्तस्यैव वनस्पति शरीरस्य परिहार
 परिमोग स्तत्र, बोलावो सो पारिदल परिहारस्त ।

॥ वार्तिका ॥

वणस्पति कहता वनस्पति ना जोष जे पारिवृत्य २, क०
परी मरी नै एदिम वनस्पती ना शरीर नौ पारिवार क० परिभोग
ते तिहाइन वपनयु ते पारिवृत्य पारिवार कहिनेम, ते पारिवारति
कहता करे, ॥

॥ दोहा ॥

तिगा अवशर गोशाल ते, मुज इम कह्ये छतेह ।
एह अर्थ श्रद्धे नहीं, नाहि प्रतीत न छेहेह ॥ ८३ ॥

यह अर्थ अण श्रद्धतो, जिदा तिल स्यम्ब, त्यां आय ।
ते तिल यमयी तिल तणी, सङ्गली ताडे ताहि ॥ ८४ ॥

ते तिल संगली तोड नै, करतल गिपे ज सोय ।
सप्त तिल पाडे तदा, प्रगट पण्ये सु जोय ॥ ८५ ॥

तिगा अवशर गोशाल नै, गिण्यता ते तिल सात ।
एहबुं मन में चितव्यु, जाव समुत्पन्न जात ॥ ८६ ॥

इम निश्चय सहू जीव पिण, पउट पारिवार करेह ।
हे गोतम गोशाल नू, पउट वाद, कह्ये एह ॥ ८७ ॥

हे गोतम गोशाल नू, मुक्क पाशाणी जेह ।
आत्मइ करिके तसु, पडिबु जुशे कहेह ॥ ८८ ॥

॥ वार्तिका ॥

आयाए पाठ नौ अथ, वृत्तीकार आयाए पाठ मां वे अर्थ
कीपा, - भगवत कहै भेदारा 'पाशाणी आयाए कहता' आ-वहै

करी अपक्रम ते जुदो पदयो नीसरयो भयवा भापाए कहता
भादाय तेजु लेश्या नू उपवेश ग्रहण करी नै जुदो पदयो ।

॥ इति भायाए पाठ नृभर्य ॥
तिण अवशर गोशाल ते, इक मृठि उडदेह ।

इक पुसली उष्णोदके, छद् यावत विहरेह ॥८६॥

तिण अवशर गोशाल ते, शद्मासे अवलोय ।

सक्षिप्त विस्तीर्ण तिका, तेजु लेश्यवत होय ॥८७॥

तिण अवशर गोशालपै, पार्श्वनाथ ना जोय ।

पद् साधु भागल हुंता, आवी मिलया सोय ॥८८॥

गोशाला नै गुरु पिण, पाडिवज्जक रहिता जेह ॥

तेसाणे तिमहिज सहु, पूर्व कहा तिम लेह ॥८९॥

यावत् ए अजिन छती, पिण जिन शब्द उच्चार ।

प्रकाशमान छती ज ए, विचरै छै इहवार ॥९०॥

मीटी भयव नै विषे, वीर कही ए बात ।

गोशाला सुण कोपीयो, निज संघ प्रतिले साथ ९१

वीर-समीपे आयनै, बोल्यो एहवी बाय ।

भलो कहै रे काशवा, आछो कहैरे ताहि ॥९२॥

रे काशवातुं इम कहै, मखली सुत गोशाल ।

धर्मान्ते वासी माहरो, पिण हू नहिं ते न्हाल ९३

मखली सुत गोशाल ते, धर्मान्ते वासी तोय ।

ते तो काल करी गयो, सुरलोके अवलोय ॥९४॥

महाकल्प चौरासी लक्ष, सप्त देव भव सार ।
 सप्त सयूया सन्नि गर्भ, सप्त पंडट परिहार ॥६८॥
 इत्यादिके निज शास्त्रे नी, वक्तिका कही वर्णाय ।
 जीव उदाई नाम हू, पिण गोशालो नोय ॥६९॥
 गोशालारि तनु विपै, अग्ने कीधुं प्रवेश ।
 सप्तम् पोट परिहार ए, इत्यादिक जे अंश ॥१००॥
 और तणो दृष्टान्त प्रभु, गोशाला नै दीव ।
 तव गोशालो बोलियो, अगल डगल बहु विधि १०१
 अवानु भूति । मुनि तदा, गोशालापे आय ।
 भगवन्त नै अनुसंग करि, बोल्यो एवी माय १०२
 समग माहण पै एक पिण, आर्य्य बच धारेह ।
 तो पिण तसु वन्दे नमै, यावत सेव करेह ॥१०३॥
 तो स्यु कहियो गोशाल तुम्ह, भगवत प्रवर्षा दीध ।
 निश्चय भगवन्त मूढियो, शिष्य पणै सुप्रसिद्ध १०४
 वृत्ति पणै करिनै वली, सेव्यो भगवन्त तोय ।
 सीखावी भगवत तुम्ह, तेजु लेश अवलोय ॥१०५॥
 बलि भगवत बहु श्रुत कियो, भगवन्त धकी ज सोयो
 भाव अनार्य पाडिबड्ढियो, ते माटे अवलोय ॥१०६॥
 मति इम हे गोशाल तुम्ह, करण योग्य नहि एह ।
 तेहिजे छाया ताहरी, नहि अनेरी जेह ॥१०७॥

सुग गोशालो कोपियो, तेजु लेश करि तांम ।
 श्रवानु भृति मुनि प्रते, भस्म कीयो तिणठाम १०८
 द्वितीयवार गोशाल फुन, कठिनवचन अधिकाय ।
 नष्ट विणष्टादिक कह्या, तव सु नत्तत्र मुनिराय १०९
 जिम श्रवानुभृति कह्यो, तिमहिज कह्यो विचार ।
 गोशालो तव तेज करि, परितापे तिहवार ११०
 प्रभुपै आवी वंदि नम, महावत प्रति आरोप ।
 संत सत्यां नें खाम नें, कीधो काल श्रकोप १११
 तृतीयवार गोशाल फुन, प्रभु प्रति निठुर वदेह ।
 तव प्रभु गोशाला प्रते, मुनि कह्यो तिमज कहेह ११२
 हे गोशाला तो भणी, में प्रवर्ज्या दीध ।
 यावत में बहु श्रुति कियो, म्लेच्छ भाव ते कीध ११३
 गोशालो सुग कोपीयो, तनु यी काढे तेज ।
 प्रभु तनु परितापे तदा, पिण तनु नाहिं पेसेज ११४
 गोशालारा तनु विपे, पाळी, पठी आय ।
 लागी दाह शरीर में, बोल्यो प्रभु प्रति वाय ११५
 छद्मस्थ एको छ मास में, काशव काल करेह ।
 प्रभु कहै छूं वर्ष सोल लग, गंध गज जिम विचरेह ११६
 ते मूकी-तेजू तिका, पठी तुम्ह तनु न्हाल ।
 तेह यी सातम् निशि मभै, तू करसी छद्मस्थ काल ११७

पुरमें जन कहै उभयं जिन, लखे माहो मांहि वाय ।
 कुण साचो मूटो कवण, आस्चर्य ए अविर्काय ११८
 गोशालो निज स्थान जई, सप्तमनिशि सु विचार ।
 मय्यक्तपामी आत्मनिन्द, काल कीयो तेहवार ११९
 प्रभु वेदन पद माससही, पछे विजोग पाक ।
 लीधेंतनु प्राक्रम वध्यो, प्रभुजी होगया चाक १२०
 गोयम तव वे मुनी तणी, पूछी कुन प्रछेह ।
 अतेवासी आपरो, कु शिष्य गोशालक जेह १२१
 काल करी नें किहा गयो, प्रभु भाष्यो सुविशाल ।
 अतेवासी माहरो, कु शिष्य गोशालक न्हाल १२२
 श्रमण घातक छद्मस्थगको, काल करी सुजगीस ।
 अच्युत् कल्पे ऊपनों, स्थिति सागर बावीस १२३
 भगवती पनरमें शतक में, छे बहुलो विस्तार ।
 इहा सत्तेप थकी कह्यो, गोशालक अधिकार १२४
 कही सूत्र में तिमज कह्यु, हिंव तसुं कहिये न्याय ।
 प्रभु शिष्य कियो गोशाल नें, बलि वचायो ताय १२५
 गोशाला नीं वारता, प्रभुजी धुर सू ख्यात ।
 मास २ तप द्वितीय वर्ष, म्हे कीधो सुविख्यात १२६
 प्रथम मास नें पारणै, विजय तण घर किद्ध ।
 गोशालो कह्यो आप गुरु, हुं तुम्ह शिष्य प्रसिद्ध १२७

तसु, अङ्गीकार मे नवि कीयो, द्वितीय मास नै जणि ।
 पारण गोशालै कहु, तिणाहिज रीत पिछाण ॥१२८॥
 अङ्गीकार न कियो तदा, तृतीय मासै जेह ।
 पारण फुन गोशाल कहु, पिण म्हे अंगीकृत न करेह
 जो शिष्य करवा नी रीत हुवै, तो प्रथम वार ही पेख ।
 अंगीकार करता प्रभु, न्याय विचारी देख ॥१३०॥
 तुर्य मास नै पारणे, निमज, कहु गोशाल ।
 मुक्त धर्मा चार्य तुम्हे, हू धर्म अन्तेवासी न्हाल १३१
 मे अङ्गीकार कीयो तसु, इम कयो सूत्र विपेह ।
 वृत्तिकार एहवो कहु, सामल जो चित्त देह ॥१३२॥

॥ गीतकण्ठन्द ॥

अक्षीण राग पणा थकी, परिचय करी, नै जानीय ।
 ईषत् स्नेह अनुकम्पनां सद्भाव, थी पहिछानीय,
 अद्धा-अनागत दोषना, अजाणवार्थी आद्रत, फुन
 अवश्य भारी भाव थीज, अजोग प्राति अङ्गीकृत १३३

॥ दोहा ॥

अक्षीण राग, पणै करी, अङ्गीकार प्रातिरूपात ।
 ते राग भाव मे वर्म किम, समभो सुगण सुजात १३४

वलि परिचय करी नै कह्यो, ईपत् स्नेह अनुकम्प ।
 एह कार्य आछो हुवै, तो इह विधकेम पर्यम्प । १३५।
 अक्षीणराग पणा विषै, परिचा विषय सु जोय ।
 स्नेह अनुकम्पानै विषै, भलो कार्य किम होय । १३६।
 वलि अनागत दोपना, अजाणवा थी जोय ।
 अङ्गीकार कीधो कह्यो, ते दोष किसो अवलोय १३७।
 ए तिल नीपजसे कह्यो, तिण दीधो तुरत उपाड ।
 हिन्सा जीवारी हुई, ए अवगुण अवधार ॥ १३८ ॥
 वलि लब्धि फोड गोशाल नौ, रत्तण कीधो त्राय ।
 तिण बहु मिथ्यात वधावियो, ए पिण अवगुण धाय ।
 वलि तेजु लेश्या प्रतै, सीखावी भगवान ।
 तिण लेश्याइ मुनी हश्या, ए पिण अवगुण जान १४०।
 वलि प्रतापना प्रभु नै करी, तेजु लेश्य करेह न ।
 वेदन अतिषट् मास सही, प्रत्यक्ष अवगुण एह १४१।
 वलि तिल धुंयो नीपनो, एम कह्यो, भगवान ।
 तत्तिण तिणो उपाडियो, ए पिण अवगुण जान १४२।
 एम अनागत दोपना, अजाणवाथी न्हाल ।
 प्रभु छद्मस्य पण कीयो, अङ्गीकृत गोशाल । १४३।
 जो ए अवगुण जाणता, तो केमकरै अङ्गीकार ।
 पिण उपयोग दीयो नही, चारून्याय विचार । १४४।

जो अपर अनागत दोष हुवे, तो कहिये तसुं नाम ।
 प्रगट वृत्ती में आखियो, दोष अनागत ताम १४५
 कोई कहै गोशाला नै, अङ्गीकार कृत ख्यात ।
 पिण्य दिक्षा दीधी इसो, किहां पाठ अवदात १४६
 श्रवानुभूति मुनि कह्यो, हे गोशाला तोय ।
 प्रवर्ज्या दीवी प्रभु, बलि प्रभु मूढयो सोय १४७
 वृत्ति पण्य सेव्यो प्रभु, सीखायो भगवान ।
 बलि बहु श्रुति प्रभु कियो, प्रगट पाठै पहिछान १४८
 इमज सु नत्तत्र मुनि कह्यो, इम प्रभुकह्यो प्रसिद्ध ।
 हे गोशाला तोभर्षी, म्हे ज प्रवर्ज्या दिद्ध १४९
 यावत म्हे बहु श्रुत कियो, मुक्त सेती इहवार ।
 भाव अनार्य्य पाडिवर्ज्यो, इम आख्यो जगतार १५०
 तव गोशाले जिन ऊपर, मुकी तेज लेश ।
 प्रभु षट् मास लगे सही, वेदन अधिक विशेष १५१
 जे षट्मास थयां पछे, प्रभु तनु थयो निराम ।
 गौतम पूछ्यो कु शिष्य तुम्ह, मर उपनो किण्य अंम
 प्रभुकह्यो अतेवार्सा मुज, कु शिष्य गोशाल जगीस ।
 अच्युत्कल्पै उपनो, स्थित सागर वावीस ॥१५३॥
 नव में शतके भगवती, तेतीसम् उद्देश ॥
 गौतम पूछ्यो वीर प्राति, सांभल जो सु विशेष ॥१५४॥

अतेवासी कु शिष्य तुम्ह, जमाली अण्णगार ।
 काल करी किहां उपनी, प्रभु भापै तिहवार ॥१५५॥
 अतेवासी कु शिष्य मुज, जमाली अण्णगार ।
 लतक कल्पे उपनी, किल्विष पणो विचार ॥१५६॥
 जमालीने कु शिष्य कस्य, तिमाहिज कु शिष्य गोशाला ।
 ते माटे विहुं शिष्य हुता, देखो नपण निहाल ॥१५७॥
 अतेवासी विहुं भणी, आख्या श्रीजगनाथ ।
 वलि कु शिष्य विहुं ने कक्षा; देखो तज पखपात १५८
 कु शूत कहिवे शूत धुर, तिगाहिज रीत पिछाण ।
 कु शिष्य कहिवे शिष्य धुर, समको चतुरसुजाण १५९
 अङ्गीकृत आरूपो प्रथम, श्रवानु भृनि स्यात् १
 कस्यो सुनक्षत्र मुनि वलि, फुन प्रभु कस्यो विख्यात्
 तास कु शिष्य कस्यो वलि, ए पचठाम पाहिच्छान ।
 दीक्षा गोशाला तणी, देखोजी बुद्धिवान ॥१६१॥
 नरमें ठाणी वृत्ति में, जिन छद्मस्थ सु जोय ।
 दिक्षान दिये इमकस्यो, शिष्य वर्गने सोय ॥१६२॥
 ॥ अथ ठाणाङ्ग नवमें ठाणी टीका मै
 कस्यो छे तीर्थकर छद्मस्थ थका दिक्षान
 दिये ते गाथा लिखिए छे ॥

न परीवण सिया नय कउमत्या परीवण ।
 संपि दिक्षिनय सीस वग्गों दिरकंति जिगा जहासव्वे

केवल उपाजिया विना, दिक्षा-दीधी आप ।
 अक्षीण राग पणै करी, पारिव्य स्नेह प्रताप ॥१६३॥
 बलि अजाण पणा थकी, जेह अनागत दोष ।
 वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तो सुजयी क्यू अपसोस
 अयोग नै अङ्गीकार कृत, एम कह्यु वृत्तिकार ।
 जे दिक्षा देवा जोग्य नहीं, तेह अयोग विचार १६५
 अक्षीण रागपणै कह्यो, ते राग भावरे माहि ।
 आयाँ केवली नी अछे, अथवा आज्ञा नाहि ॥१६६॥
 बलि पारिव्य करि नै कह्यो, ते पारिव्य पहिछान ।
 प्राज्ञो छे अथवा बुरो, न्याय विचार सुजान १६७
 ईवर स्नेह गर्मानु कम्प, सभावथी अवलोक्य ।
 अङ्गीकृत कह्यु वृत्ति में, तास न्याय हिव जोय ॥१६८॥
 जे अनुकम्पा नै विपै, स्नेह रह्यो छे ताय ।
 स्नेह गर्भ अनुकम्पते, मोह अनुकम्प कहाय ॥१६९॥
 भावे स्नेह अनुकम्प कहो, भावे मोह अनुकम्प ।
 श्री जिन आज्ञा वार है, सावद्य तेह प्रपच ॥१७०॥
 मोह कर्म नां उदय थी, स्नेह राग ए होय ।
 तिण सु स्नेह अनुकम्पते, मोह अनुकम्पा जोय ॥१७१॥
 स्नेह किण सु करिवो नाहि, भाष्यो श्री जिनराय ।
 उत्तराध्ययनै आठ में, दूजी माथा माँय ॥१७२॥

ईपत् स्नेह अनुकम्प कही, 'ते अनुकम्पा सोय ।
 सावद्य पाप सहित छे, अथवा निर्वद्य जोय । १७३।
 जो निर्वद्य अनुकम्प ए, तो ईपत् क्यु ख्यात ।
 प्ररण कृपा करि प्रभु, 'इमकहता अयदात । १७४।
 ईपत् स्नेह अनुकम्प ए; जो सावद्य छे सोय' ।
 तो सावद्य मे वर्म नहीं, हिये विमासी जोय १७५।
 ईपत् लोभ भलो नहीं, ईपत् भलो न मान ।
 ईपत् माया नहिं भली, 'तिम ईपत् स्नेह जान १७६।
 ईपत् झूट भलो नहीं, ईपत् भलो न झुठ ।
 ईपत् अदत्त भलो नहीं, 'तिम ईपत् स्नेह अशुठ १७७।
 गोतिम ने जिन स्नेह थी; अटम्यो केवल ज्ञान' ।
 तो गोशालारा स्नेह थी; वर्म पुण्य किमजान १७८।
 काल अनागत दोष पिण, वृत्तिकार आख्यात ।
 तो प्रशसवा योग्य ए, कार्य केम कहात । १७९।
 होणहार निश्चय तिको, टारयो नहिं टलत ।
 तिण कारण गोशाल ने दिक्षा दी भगवत-१८०।
 वृत्तिकार पिण इम कह्यो, तुम्ह न पिण तिण रीत ।
 कहिबु तेहिज उचित छे, वारुवचन वदीत । १८१।
 कोई कहै ए वृत्ति नै, 'तुम्हे न मानो' कार्य ।
 तो वात वृत्ति नी किम कहो, हिय उत्तर अवलोय १८२।

भगवती शतक अठार में प्रभुजी भणी प्रत्यक्ष ।
 सोमिल प्रथम ज प्रकिया, शरसव भक्त अभक्त ॥१८३॥
 जिन कह्यो जे ब्राह्मण तणा, शास्त्र विषे आख्यात ।
 शरसव नां वे भेद है, इत्यादिक अवदात ॥१८४॥
 तो ब्राह्मण नां शास्त्र प्रते, स्यु मान्यु जगनाथ ।
 पिण तेह नै समझायवा, तसुं मतनी कही बात ॥१८५॥
 तिम मिलती ए वार्ता, वृत्ति तणी आख्यात ।
 जे वृत्ति माने तेहने, समझावा कही बात ॥१८६॥
 वलि प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित्तल्याय ।
 शीतल तेज फोडवी, रक्षण कीधो ताय ॥१८७॥
 वृत्तिकार इग आखियो, तेह सराग पण्येह ।
 एक दया नै रस थकी, रक्षण कीधो एह ॥१८८॥
 वे सुनी नै न बचावसी, तव बात-सग भावेह ।
 लब्धि अण फोडवा थकी, अवश्य भावी एह ॥१८९॥
 इहा सराग पण्ये कह्यो, ते सराग पण्यारे माँय ।
 धर्म पुराय किण विव हुवै, देख विचारो न्याय ॥१९०॥
 सराग पण्यो कहिनै पछै, दया एक रस ख्यात ।
 जिसो सराग पण्यो हुवै, तिसी दया एयात ॥१९१॥
 सराग भाव निर्वद्य नहीं, तिम दया न निर्वध एह ।
 दोनू सावग जाणवा, न्याय विचारी लेह ॥१९२॥

वे साधु नविराखीया, ते बीत राग भावेह ।
 दयावत पिण जद हुता, पिण सावध दया न तेह १८३
 बीत राग थयां पछै, भाव साग न होय ।
 तिम बीत राग थया पछै, सावद्य दया न कोय १८४
 कोई कहै सावद्य दया, किहा कही छै ताम ।
 न्याय कहु छु तेह नौ, सुण राखो चित्त ठाम १८५
 हेमि नाम माला विषै, आठ दया रा नाम ।
 दया शूक कारुण्य फुन, करुणा घृणा जु ताम १८६
 कृपा अने अनुकम्प फुन, बलि अनुक्रोश कहाय ।
 नाम एकार्थ आठ ए, तृतीय काण्डरे मॉय १८७
 ॥ अथ हेमिनाम माला मे आठदयारा
 नाम कह्या ते लिखीये छै ॥

सुरतोष दयाशुक कारुण्य करुणा घृणा कृपानु कम्पानु
 क्रोशो ॥ इति ॥

जिन ऋष सामों जोवीयो, रत्तन दीप नौ जेण ।
 देवी नी करुणा करी, ज्ञाता नवम् अज्भेण १८८
 करुणा नाम दया तर्णी, ते माटे सुदिचार ।
 एह दया सावद्य छै, श्रीजिन आज्ञा वार ॥१८९॥
 उत्तराध्येन बावीस मै, नेम नाथ भगवान ।
 जीव देख अनुक्रोश मनै, पाठ विषै पहिछान ॥२००॥

अनुक्रोश ते करुणा कही, अविचरि में अर्थ ।
 ते माटे करुणा दया-निवेद्य एह तदर्थ ॥ २०१ ॥
 तिण सु भाव सराग नी, दया ज सावद्य सोय ।
 अष्टादश में देखलो दशमू, राग सु जाय । २०२ ।
 लब्धि अण फोडववा थकी, वीत राग आवेह ।
 वे साधु नवि राखस्ये, ए पिण वृत्ति विपेह । २०३ ।
 तिण सु सराग भाव करि, सीतल तेजु लेश ।
 लब्धि फोडवी राखीयो, गोशालक सुविशेष २०४ ।
 गोशालक हणवा भणी, वाल तपथी जेह ।
 उष्ण तेजु लेश्या प्रते, मूकी पाठ विपेह ॥ २०५ ॥
 भगवंत अनुकम्पा करी, लेश्या सीतल तेह ।
 मूकी गोशालक भणी, रक्षण करण कहेह । २०६ ।
 उष्ण तेजु लेश्या कही, सीतल तेजही लेश ।
 तेजु लेश ए विहु कही, पाठ विपे सु विशेष २०७ ।
 उष्ण तेज लेश्या प्रते, तापस मूकी सोय ।
 लेश्या सीतल तेज प्रति, प्रभु मूकी अवलोय २०८ ।
 तिण सु तेजु लब्धि-प्रति, फोडी नें भगवान ।
 गोशाला नें राखीयो, छद्मस्थ थकां पिछान । २०९ ।
 फेवल ज्ञान थयां पछे, लब्धि फोडवणी नाहिं ।
 वहु ठामें वर्जी प्रभु, देखो सूत्रे-माहिं ॥ २१० ॥

पद छत्तीसम् पन्नवणा, वैक्रिय लब्धिज ताय ।
 फोड्याकृया जघन्य त्रण, उत्कृष्ट पत्रही पाय ॥२११॥
 इमहिज आहारिक लब्धि प्रति, फोड्यायी पहिछान ।
 जघन्य तीन कृया रही, उत्कृष्ट पत्र सुजान ॥२१२॥
 इमहिज तेजु लब्धि प्रति, फोडै तेहने जोय ।
 जघन्य तीन कृया कही, उत्कृष्ट पत्र ज होय ॥२१३॥
 तेजु लब्धि जे फोडवी, प्रभु छद्मस्य पणोह ।
 केवल लह्या कृया कही, वैक्रिय नीपरै एह ॥२१४॥
 सराग भाव करि कार्य कृत, तास स्थाप स्यु होय ।
 केवल लह्यां पछै रह्यो, तास स्थाप छै साय ॥२१५॥
 कोई कहै अनुकम्प करि, प्रभु राख्यो गोशाल ।
 ते माटे इहा धर्म छै, उत्तर तास निहाल ॥२१६॥
 वृद्ध तणी अनुकम्प करि, कृणो, ईट उपाड ।
 तासघरे मेली कही, अतगडे अधिकार ॥ २१७ ॥
 सुलसां नी अनुकम्प करि, पुत्र देवकी नांज ।
 मन्था हरण गवेपि सुर, मृत्र अतगड साज २१८,
 पथ्य धारणी भोगव्यो, गर्भ अनुकम्पा आंग ॥
 अभय अनुकम्पा सुरकरी, दोहलोपूरखो जांग २१९,
 हरकेशी सुनिवर, तणी, - अनुकम्पा-करि यत्त - ।
 रुधिर वमता छात्र कृत, उत्तगध्ययन प्रतत्त ॥२२०॥

बालि मुनि नीं व्यावच अर्थ, छात्रां नें दु ख देह ।
 ए पिण सावद्य जागवो, तिम अनुकम्प कहेह । २२१।
 अनुकम्पा त्रश जीवनी, आणी नें मुनिराय ।
 वांधै वांवतां प्रति, अनुमोद्या दंड आय ॥२२२॥
 इमहिज छोडे छोडतां प्रति, मुनि जे अनुमोदेह ।
 निशीय उद्देशे चारमें, दड चौमासी कहेह ॥२२३॥
 अनुकम्पा ए सहु कही, पाठ त्रिपै पाहिकाण ।
 जिन आज्ञा नाहिं तेह में, तिण सुं सावद्य जाण २२४
 तिम प्रभु गोशाला तणी, अनुकम्पा चित आण ।
 तेजु लब्धिज फोडवी, तिण सु सावद्य जाण २२५
 आहारिक लब्धि फोडवै, अधि करण कह्यो तास ।
 शतक सोलमें भगवती, प्रथम उद्देश विमास । २२६।
 वैक्रिय लब्धि फोडवै, कह्यो विराधक ताहि ।
 भगवती तीजे शतक में, तुर्य उद्देशा मांहि । २२७।
 जघा विद्या चारणा, लब्धि फोडवी जाय ।
 ते यानक विन पाठिकम्यां, कह्यो विराधक ताया । २२८।
 भगवती गौतम गुण मर्के, तेजु लेश्या प्रति ताहि ।
 सकोचै ते गुण कह्यो, फोडयां गुण कह्यो नाहिं २२९।
 इत्यादिक बहु सूत्र में, तेजु वैक्रिय आदि ।
 मुनि नें लब्धि न फोडणी, देखो धर अहलादि । २३०।

जो लब्धि फोड गोशाल नै, राख्या धर्मज होय ।
तो वे मुनि प्रति राख्या न कयूं न्याय विचारी जोय ॥
जब कहै वे मुनिवर तर्गों, मृत्यु जांग भगवान ।
तिण कागण राख्या नहीं, हिव तसु उत्तर जाण । २३२ ।
शुचिकार तो इम कह्यो, वीत राग भावह ।
लब्धि अण फोडयां थकी, बलि अवश्य भावी छै एह
सीतल तेजु लब्धि प्रति, अण फोडयायी ख्यात ।
तिण सु सीतल तेजु पिण, किम फोडे जगनाय २३४
ज्यो प्रभु वे मुनिवर तर्गों, जाण्यो मृत्यु जिवाग ।
तो मुनि गौतम आदि त्या, क्यु नहीं कीयी सार २३५
गौतम आदि विपे हुती, सीतल तेजु लेश ।
त्यां लब्धि फोड राख्या न क्यु, वे मुनि प्रति सुविशेष
जब कहै गौतम आदि प्रते, वर्ज्या प्रभुजी ताय ।
तिण सु मुनि राख्या न वे, निसुणो तेहनों न्याय २३७
प्रभुतो आनन्द नै कह्यो, तू मुनि प्रते कहैह ।
धर्म प्रति चोयण मत करो, गोशालक गी जेह । २३८ ।
पिण मुनि प्रते न च्चावणा, इग तो आख्यो नाँय ।
तिण सु गौतम आदि जे, मुनि नहीं राख्या काँय २३९
पिण जे लब्धि फोडण तणी, श्रीजिन आज्ञा नाँय ।
तिण सु सीतल तेजु प्राँ किम फोडे मुनिसय । २४० ।

लब्धि फोड गोशाला नै, राख्यो श्री भगवान ॥
 जद छद्मस्थ पणै हुंता, मोह स्नेह वस जानै ॥२४१॥
 जलयी नाव भरीजती, देखी नै मुनिराय ॥
 गृही प्रते बतायणो नही, द्वितीय आचारङ्ग माँय २४२ ॥
 डूबै आप अने बलि, जे डूबै बहु जीव ॥
 तसु अनुकम्प करे नही, रहे सम भाव अतीव ॥२४३॥
 मात बचावा ऊठियो, धूलणि पिया पिछाण ॥
 तसु पोशह भागो कह्यो, तसम् अङ्गे जाण ॥२४४॥
 मियला चलती देख नमि, सहामो जोयो नाहि ॥
 देखो उत्तसाध्यन मे, नवमे अध्येने ताहि ॥२४५॥
 दशवे कालिक सातेमे, देव मनुप तिर्यञ्च ॥
 विग्रह लडता परस्पर, देखी नै मुनि संच ॥२४६॥
 एहनी होवे जीत फुन, एहनी होवे हार ॥
 एहवुन कहै महामुनी, हिय तसु न्याय विचार २४७ ॥
 हार जीत भवि षड्वी, तो तास विचे पड संत ॥
 केम करावे हार जय, देखोजी मदि मत ॥२४८॥
 छेदे हरश मुनि तरणी, कृया वैद्य नै ख्यात ॥
 शतक सोलमे भगवती, तृतीय उद्देश सजात ॥२४९॥
 आज्ञा श्री जिनवर तरणी, जेह कार्य मे नाँय ॥
 तेह कार्य कीधां छता, धर्म पुराय किम नाय ॥२५०॥

तिमजलेविव फोडण तरणी, श्रीजिन आण न देह ।
 धर्म सुगय क्रिम, तेह में, व्याये विचारो एह । २५१
 कोई कहे छद्मस्थ प्रभु, फोडी लब्धि जिवा ।
 दण्ड लियो स्यु तेह नों, हिय तसु उत्तर सार । २५२
 राजमती नें कोलियो, विषय बचन रहने ।
 प्रायश्चित, चाट्यो न तसु, पिण लियो हुस्ये, धर पेन
 जल विन पात्री नाव जिम, आद्रमुते ऋषिनिद्र ।
 प्रायश्चित चाट्यो न तसु, पिण लीधो हुस्ये प्रविउ
 मोह बस सीहो मुनी, रोयो मोटे साह ।
 प्रायश्चित चाट्यो न तसु, पिण लीधो हुस्ये सन, २५३
 धर्म घोपना, सत जे, आवी चोहटा गति ।
 नाग श्री देवी निन्दी तसु दण्ड चाट्यो नाहि २५४
 हणसे हय नृप, सारथी, नाम सुमङ्गल ।
 प्रायश्चित चाट्यो न तसु, अतक पंनरमु उहत । २५५
 कोई कहे आलोयणा, पडिकमणा, कही ता ।
 तिण सु ए दंड तेहनुं, हिय उत्तर सुविमास । २५६
 चर्म समय नूं, पाठ, ए, सधक, धनो, आदि ।
 बहु मुनि नों समुच्चय कंधो, तिम ए पिण संवाद । २५७
 जंघा पिद्या चारणा, तस्त टाणस सोध ।
 आलोइय पाडिक गिय, एहवो पाठ सु जो । २५८

लब्धि फोड़ गोशाला नै, राख्यो श्री भगवान' ।
 जद छद्मस्थ पण्य हुता, मोह स्नेह वस जानै ॥२४१॥
 जलथी नाव भरीजती, देखी नै मुनिराय ।
 गृही प्रते बतावयो नही, द्वितीय आचारङ्ग माँय ॥२४२॥
 हूवै आप अने धलि, जे हूवै बहु जीव ।
 तसु अनुकम्प करे नही, रहे सम भाव अतीव ॥२४३॥
 मात बचावां ऊठियो, धूलणि पिया पिच्छाण ।
 तसु पोशह भागौ कह्यो, समम् अङ्ग जाण ॥२४४॥
 मियलां बलती देख नमि, स्तामो जियो नाहि ।
 देखो उत्तमध्ययन मे, नवमे अध्येने ताहि ॥२४५॥
 दशवै कालिक सातमे, देव मनुप तिर्यक् ।
 मिग्रह लडता परस्पर, देखी नै मुनि सच ॥२४६॥
 एहनी होवै जीत फुन, एहनी होवै हार ।
 एहवु न कहै महामुनी, हिव तसु न्याय विचार ॥२४७॥
 हार जीत नवि धरवी, तो तास विचे पड सत ।
 केम करावै हार जय, देखोजी मदि मर्त ॥२४८॥
 छेदे हरश मुनि तयो, कृया वैद्य नै ख्यात ।
 शतक सोलमे भगवती, तृतीय उद्देश संजात ॥२४९॥
 आज्ञा श्री जिनवर तयो, जेह कार्य मे, नाँय ।
 तेह कार्य कीयां छतां, धर्म पुराय किम वाय ॥२५०॥

तिमज लखि फोडण तणी, श्रीजिन आणु न तेह ।
 धर्म युग्य किम तेह भे, न्यार्य विचारो एह । १०५१
 कोई कहे छद्मस्थ प्रभु, फोडी लखि जिपा ।
 दण्ड लियो 'स्यु तेह नो, हिम तसु उत्तर सार । १०५२
 राजमनी ने बोलियो विषय वचन रहनेगो ।
 प्रायश्चित चाल्यो न तसु, पिण लियो हुस्ये धर्म पेन
 जल विन पात्री नाय जिम, आद्रमुते ऋषिदिद्र ।
 प्रायश्चित चारयो न तसु, पिण लीधो हुस्ये शक्ति
 मोह-वस-मीहो मुनी, रोयो मोटे साद ।
 प्रायश्चित चाल्यो न तसु, पिण लीधो हुस्ये सदाद । १०५५
 धर्म घोपना, सत जे, आरी चोहटा गति ।
 नाग श्री हेली निन्दी तसु दण्ड चारयो नादि १०५६
 हणसे हय नृप सारथी, नाम सुमङ्गल न न
 प्रायश्चित चारयो न तसु, जतक पनरमु उदत । १०५७
 कोई कहे आलोचना, पडिकमणा कही तामन
 तिण सु'ए दड तेहनु, हिम उत्तर सुविमास । १०५८
 चर्म समय नुं पाठ ए, सधक धनो आदि ।
 बहु मुनि नो समुच्चय कह्यो, तिम ए पिण सवाद । १०५९
 जेधा विद्या चारणा, तस्स ठाणस सोध ।
 आलोइय पडिक गिय, एहवो पाठ सु भोग । १०६०

लवि फोडी ते स्थान प्रति, आलोवी गुणवन्त ।
 वलि पाडिकमें ते मुनी, पद आराधक हुन्त ॥२६१॥
 मुनी सुमङ्गल स्थानके, तस्त ठाणस्त नाहि ।
 तिण सु लवि फोडण तणो, दण्ड कह्यो नाहि ताहि ।
 पिण नृप हय अरु सारथी, हणसे दण्डज तास ।
 तेह मुनी लेस्ये सही, कहु सव्वठ सिद्ध वास, २६२
 इत्यादिकु बहु ठामही, प्रायश्चित चाल्या नाहि ।
 पिण लिया हुस्ये महामुनी, गुणी देखोजी दिल माहि ।
 तेजु लवि जे फोडये, तास कया ज्ञण पच ।
 केवल लह्यां कह्यो प्रभु, तिण सु दण्ड सुसत्र ॥२६५॥
 कल्पातीत हुता प्रभु, छे ए सांची वाण ।
 पिण किण गुणठाणो तिके, कहिये चतुरसुजाण २६६
 प्रभुजी चरित्त लियां पछी, श्रेणि चढ्या पहलाज ।
 समम गुण छट्टे वली, वे गुणठाण समाज ॥२६७॥
 समम् गुणठाणा तणी, उत्कृष्टी अवलोय ।
 अत्तर महरत स्थिति छे, छट्टे बहु स्थित जीय ॥२६८॥
 छट्टा गुणठाणा विपै, आखी ज्यार कषाय ।
 पद लेश्या सजा चिहु, अशुभ जोग पिण आय २६९
 परिचय स्नेह अनुकम्प करि, अक्षीण राग पणोह ।
 सराग भाव फुन लवि नू, फोडवु पिण लेह २७०

प्रथम कृदा गुणोठाण नीं, प्रगट भाव ए पेल ।
 निर्वघ किम कहिये तसुं, न्याय विचारी देखे ॥२७१॥
 जेह कार्य नीं केवली, आज्ञा न दिये कोय ।
 धर्म पुण्य नहिं तेह में, हिये विमासी जोय ॥२७२॥
 जेह कार्य नीं केवलीं, आज्ञा देवे आप ।
 धर्म पुण्य छे तेह में, तिहां नहिं किञ्चित पाप ॥२७३॥
 केई जिन आज्ञा में पाप कह, धर्मजिन आज्ञा चारं ।
 विहु विध अशुद्ध प्ररूपवे, किम पामें भव पार ॥२७४॥
 जिन धर्म जिन आज्ञा दिये, जिन वर्म सिखावे आप ।
 जे धर्म कहै आज्ञा विना, ते कँवण प्ररूप्यो थाप ॥२७५॥
 आज्ञा वारे धर्म रो, कँवण धर्मी अवलोय ।
 हाते जोडि पूछ्या थकां, कृण आज्ञा दे भोय ॥२७६॥
 देव गुरु तो मौन रहे, नहिं अनुमोदे अंश मार्त ।
 तो आज्ञा वाहिर धर्म री, उत्पतिरो कुंण नाथे ॥२७७॥
 संवर नें बलि निरयरा, दोय प्रकारे धर्म ।
 जिन आज्ञा में ए विहु, ते थी शिवसुख परम ॥२७८॥
 दोय प्रकारे धर्म बलि, श्रुत फुन चरित पिछारो ।
 जिन आज्ञा ए विहु विपे, समझो सुगण सुजाण ॥२७९॥
 पंच महाव्रत साधुंरा, श्रावक नीं व्रत वारं ।
 जिन आज्ञा में ए विहु, आज्ञा वार असार ॥ २८० ॥

तिगासुं जिन आज्ञा तगी, रागो सुगण प्रतीत ।
धर्म जिन आज्ञा वारियो, ते गया जमारो जीत २८१

॥ अथ हितसिद्धा ॥

दु ख बहु नरक निगोदनां, सहा अनन्ती वार ।
धर्म जिन आज्ञा शिर धेरु, हुवे तास निस्तार २८२
मनुष्य जन्म दोहिलो लखो, लही सामग्री सार ।
पंच महावत आदरी, प्याराध्यां भव पार ॥२८३॥

जो चरित धर्म ग्रही नहिं सके, तो श्रावक ना व्रत वार ।
निर अतिचारे पालिया, पामें भव दधि पार २८४
जो वार व्रत ग्रही नहिं सके, तो न समदृष्ट उदार ।

देव गुरु धर्म उलख्या, सुख पामें श्रीकार ॥२८५॥

जो पूरी समस्त पडे नहीं, तो गुणवन्त रागुण गाय ।
कोइक रशायण आवियां, पातिक दूर पुलाय २८६

पोते व्रत पाली नहीं, पाली ज्यासुं देप ।

दोय मूर्ख तिण नै कह्यो, प्रथम आचारङ्ग देस २८७

गुणवनरी निन्दा कियां, कर्म तगुं वच होय ।

तेह कर्म थी दु ख लहे, नरक निगोदे सोय ॥२८८॥

तिण सुं हित सिद्धा भली, वारै सुगण सुजाण ।

राग देप छाडी करी, आरावे जिन आण ॥२८९॥

॥ कलश ॥

॥ चाल गीतक छन्दः ॥

जिन वयण गुण मणी स्यण सार उदार देखी
सग्रहा, अर्ध तद्य पथ्य सु अर्थजे मुक्तभ्यासना,
मै जिम कह्या। अति श्रिष्ट मिष्ट गरिष्ट प्रवर विशिष्ट।
जिन वच आद्यतावच विरुद्ध को आयो हुँव मुक्तासः
मित्त्या हुःकृत ॥ १ ॥ उगणीसै तेतीस वर्ष विद
द्वादशी फागुण वही, वर शहर बीदाशर, विषे हृद
श्रमण एकावन सही। फुन अर्जका इक शय तिहां
गणी आंग सप्रति सोभती। वर समय सार उदार
निर्णय कीध जय जश गणपती ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भिक्षु भारीमाल फुन, तृतीय पाठ ऋषि शय
तास पसाए सुगण वृद्धि, जय जश हर्ष सनाय ॥ १ ॥
तिण काले भिक्षु-गणे, मुनिवर चित्तः दीय।
इक सह त्राणु अर्जका, गणी आणा अवलौय ॥ २ ॥
उत्तर तुम्हे मगाविया, हमे लिखाव्या नाय।
ते गट ए प्रश्न नां, उत्तर दोहा वणाय ॥ ३ ॥
दोहा ग्रहस्थ कठ करी, निज मति थकी लिसेह।
तिके खोट ज्यो को लिखी, तो मुक्त दोषण मत देह ॥

॥ इति ॥

॥ ३ ॥

॥ अथ छव्वीस श्लोक प्रतिमा वैराग्य नौ
हेतु कहै तेह नु उत्तर ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै वैराग्य नौ, हेतु प्रतिमा एह ।
जिन प्रतिमा देखी करी, पर वैराग्य लहेह ॥ १ ॥
ते माटे वन्दनी कहै, जिन प्रतिमा जग माँय ।
दिव तेह नु उत्तर कहें, सांभल जो चित्तल्याय ॥ २ ॥
भूपति देख प्रति बृक्तियो, कर कहै नरराय ।
दु सुह इन्द्रध्वज स्थम्भ प्रति, देखे सम्वेग सुपाय ॥ ३ ॥
चूडि सु प्रति बृक्तियो, नमि नृपति तिह कात ।
अम्ब देख प्रति बृक्तियो, नगई नाम भूपाल ॥ ४ ॥
उत्तराज्जयण इक बीसमें, समुद्रपाल सम्वेग ।
पायो तस्कर देख नै, देखो राज उद्वेग ॥ ५ ॥
सम्बेग पाठ तणी, अर्थ, अविचूरि में ख्यात ।
सम्बेग ना हेतु भणी, सम्बेग चोर कहात ॥ ६ ॥

॥ सूत्र-गाथा ॥

संपाति उद्य सम्वेग, समुद्रपालो इय मग्नी, अहो
समुद्राय कर्माय, तिष्ठाया भाविते इमे ॥ उत्तराज्जयण २
वै गाथा ६ मी ॥

॥ अत्रः प्रविचूरी ॥

तामिति तथा विष द्रव्य इत्यासौरेण समार विमुक्तपतो मुक्तय
 ऽभिनापस्तद्वेतुत्यास्तोपि मवेगस्त समुद्रपास इदं वल्लपोण भवतीत
 यथा अशुभानां पापकानां कर्मणां मनुष्यानां निषान अह
 सान पापक अशुभ इव मत्पत्त असौवराकां वढार्थ मित्वा गीपू
 ते इति भावः ।

॥ वार्त्तिको ॥

इहा कर्त्ता तं कहता ते, तथा विष द्रव्य देखी नें सम्बेग ते
 समार विमुक्तपतो मुक्तिनी अभिनापा ते सम्बेग नो हेतु पणा
 यको, सोपि कहता तिको चोर पिणमस्त्रेण, जिम पापकागी
 कर्म ते अनुष्ठान जा छेहहे अशुभ व मत्पत्त राक वध नें अर्थ,
 इह विष लेजाय छे, एतने सम्बेग नो हेतु चोर त देखी नें
 समुद्रपास बोधपो अशुभ कर्मना फल ए भोगय छे ।

॥ दोहा ॥

सम्बेग नो हेतु कर्त्ता, तथकर ने अवलोक्य ।
 पिण गुण नाहि छे ते भर्त्ता, वन्दन योग न कोय । ७।
 वृषभादिक देखी को, कर्कराहू आदिह ।
 ब्रूक्तया पिण वृषभादि ते, वन्दन क न कहह ॥ ८ ॥
 मुनि वसे जे पासत्यो, तसु देखी नें सोय ।
 बेराग पावे पिण तिको, वन्दन योग न कोय । ९।
 तिम जिन् प्रतिमा देख नें, पावे जे बेराग ।
 पिण ते वन्दन योग नही, देखो मत पत्त त्याग । १०।

ज्ञान दर्शन चास्ति तस्याः गुणानि हि हि जे माँय ।
 ते सम्भोग नो हेतु हुवै, पिण्य निन्दनीक नहिं थाये ।११।
 मुनिवर प्रति देखी करी, द्वेष धरे मन कोय ।
 द्वेष तया हेतु मुनी, पिण्य निन्दनीक नहिं होय ।१२।
 श्रवानु भूति मुनि तया, वचन सुणी गोशाल ।
 कोप्यो सिघ्र उताबलो, भस्म कियो तेह काल ।१३।
 कोप तयो हेतु मुनी, पिण्य गुण सहित सु गत ।
 ते माटे निन्दनीक नहीं, देखोजी बुद्धिवत ॥१४॥
 सुनत्तत्र नां वचन सुणि, धन्यु गोशाले द्वेष ।
 द्वेष तया हेतु तिको, पिण्य निन्दनीक नहिं पेख ।१५।
 वीर प्रभुना वचन सुणि, कोप्यो सिघ्र गोशाल ।
 कोप तया हेतु प्रभु, पिण्य निन्दनीक मत न्हालो ।१६।
 छद्मवीर प्रति देखि नै, जन बहु द्वेष धरेह ।
 दुःख दीधा अति आकरा, आरुयो धुर अङ्गह ॥१७॥
 द्वेष तया हेतु प्रभु, पिण्य ते गुण सहित ।
 तिण्यसु ते निन्दनीक नहिं, देखोजी धर प्रीत ।१८।
 वस्तु जे गुण सहित प्रति, देखी द्वेष लहेह ।
 द्वेष तया हेतु तिका, पिण्य निन्दनीक नहिं जेह ।१९।
 वस्तु जे गुण हीण प्रति, देखि सम्भोग लहेह ।
 सम्भोग नो हेतु तिका, पिण्य निन्दनीक नहिं तेह ।२०।

॥ अथ सत्तावीसम ब्राह्मी लिपि अधिकार ॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै अङ्ग पंच में, ब्राह्मी नीं लिपिसार ।
नमस्कार तेह नै कन्धु, हिव तसु उत्तर धार ॥ १ ॥

नमो वंभीए लिपी ए, लिपि कत्ता नामेय ।
चरण सहित जिन धुलिपिक, अर्थ धर्मसी एह ॥ २ ॥

पाया नां कर्ता भर्णी, पायो कहिए ताहि ।
एवं भूत नयने मते, अनुयोग द्वारे मांहि ॥ ३ ॥

अथवा लिपि जे भाव लिपि, जे मुनिने आवारे ।
नमस्कार छै तेह नै, एदबुं दीसे सार ॥ ४ ॥

तीर्थ नाम जिम सूत्र नु, ते सघ नै आधार ।
तिण सु सङ्घ नै तीर्थ कह्युं, तिम भावे लिपि सार ॥ ५ ॥

वृत्तिकार द्रव्य लिपि कही, तेह लिपि गुण सुन्य ।
नमस्कार तेह नै करैइ, ते तो बात जवुन्य ॥ ६ ॥

द्रव्य निक्षेपो गुण रहित, बदन जोग्य न तांम ।
समवायङ्गे देसल्यो, द्रव्य भाव जिन नाम ॥ ७ ॥

भरत एरत खेत्र नां, अनागते जिन नाम ।
समचै चौबीस नाम जिन, वन्दे पाठ न तांम ॥ ८ ॥

वंले एरवत खेत्र नीं चउवीसी वर्त्तमान ।
 ठाम ठाम वन्दे कह्यु, ए-गुन सहित सुजान ॥६॥
 वर्त्तमान चउ वीस ए भर्त्त खेत्र नी ताहि ।
 ठाम ठामे वंदे कह्यो, जोवो लौगस्त माहि ॥१०॥
 ते लेखे द्रव्य लिपि भणी, द्रव्य सूत्र न सोय ।
 नमस्कार किम किजीए, हिये विमासी जोय ॥११॥
 वृत्तिकार द्रव्य लिपि भणी, थाप्यो छे नमस्कार ।
 सूत्र थकी मिलतो नथी, एह अर्थ अवधार ॥१२॥
 तथा पत्र में जे लिख्या, अक्षर ना आकार ।
 वन्दनीक जो ते हुवै, तो लिपि अष्टादश धार ॥१३॥
 अष्टादश लिपि नै विपे, वेद पुराण सपेख ।
 कुरान जोतिप पिण हुवै, वदनीक तुम्ह लेख ॥१४॥
 अष्टादश लिपि नै विपे, वर्ण संज्ञा सपेख ।
 सहु पुस्तक में जे लिख्या, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥१५॥
 वेदकनिकथा वारता, मन्त्र जन्त्र कुन तन्त्र ।
 कोक सामुद्रिक शास्त्र ए लिपि में सहु आवंत ॥१६॥
 पाप शास्त्र-गुन तीश कुन, वर्ण स्थापना गेल ।
 ए अक्षर लिपि विपे, वन्दनीक तुम्ह लेख ॥१७॥
 बीतराग तो तेह नै पाप शास्त्र आख्यात ।
 द्रव्य लिपिकाहिए तेह नै, वन्दनीक किम यात ॥१८॥

जो बन्दनीक द्रव्य लिपि हुवै, द्रव्यलिपि कहीं अठारा
 तेह विषे सहु आविया, किम बन्दे अणगार।१६।
 ते माटे ते भाय लिपि, वा करता नाभेय ।
 ऋपभ चर्ण गुण युक्तने, नमस्कारसु युगोह ।३०।

॥ वाचिका ॥

कोई कहै भगवतीरै आदिमें एमोवभीए लिपिए । ए शब्द
 कही पछे कछो एमो सुगस्म ते लिपि नै नमस्कार करी । सूत्र
 नै नमस्कार कयु ते भाव श्रुत नै नमस्कार कयै छवै ते भाव
 सूत्र नै विषे भावलिपि पियण भायगइ तो पूर्वे भाव लिपि नै
 नमस्कार कीघो तेहनु स्तु कर्ण नमोवभीए लिपिए अने
 नमो सुगस्म ए वेपद किमकथा तेहनु उत्तरादशवे कालिक मध्येन
 आठमें गाथा ४ र्भी में कछो कुम्भुव आछिय पाछिय गुप्तो,
 काछवा नीपरै अछीण ते इपत गुप्त पाछिलण । ते मकृष्ट सीन घणो
 गुप्त इहां वेपद कथा तथा दशवे कालिक मध्ययन चौथै कछो
 पृथिवी काय उपर न सिहउक्ता कहिता थोदो सो अथवा एक
 वार लिखि नही, न विसिहउक्ता कहता बहुवार लिखि नही इहां
 पियण वेपद कथा, तथा उत्तराध्ययन पहलै आसवते सवते वा
 न सिपउक्त कयाइवे गुरुई, आसव ते कहता एकवार सोसाव्यो
 वा ते अथवा सवते कहता बार बार सोसाव्यो - न० शिष्य
 बेटो छै नही कथाचित पियण इहां पियण वेपद कथा, तथा अत्त
 राध्ययन इजारमें नासीने कहिता सर्वथा चारिअ नी विराधना
 नथी, विसीसे कहता देशयकी चारिअनी विराधना नथी इहां पियण
 देश अने सर्व ए वेपद कथा, तथा एहकल्प उदेशी सीसरे अतर घरने
 विषे साधु नै न कल्पे निहा इत्तएवा कहिता थोडी नीव सेवी

पयसा इत्तएवा, कहितां त्रिगेष ऊषवो इहां पिण्य वेपद कथा,
इत्यादिक अनेकठामे वेपद कथा तिम इहा पिण्य वेपद जाणवा
सिापि शब्दे भाव सिापि ते देगयकी श्रुत ज्ञान अने
नमो सुपस्त ते सर्व श्रुत ज्ञान कथो तथा सिपिना कस्ता अणुपम
देवने सिपिक काइए त चारित्र युक्त मयम जिनने नमस्कार ।

॥ श्रत्र टीका ॥

अथ च माग् वाएपाता नमस्कारादिकाग्रप्य धृत्तिकृत्ता न
व्याख्यातो कृतोपे कारणादिभि, ए भगवती नी वृत्ति मे
अभय देव सुरे कथो ।

॥ सोरठा ॥

नस्मकारादिक ताहिरे रचना पूर्व कही जिना ।
मूल वृत्तिगे माहिरे, न कही किय कारणा तिका ॥१॥
इम कथो वृत्तिकारे, ते माटे हिव तेहनुं ।
प्रवर न्याय जे साररे, बुद्धिवन्त हिये विचार ज्यो ॥२॥
॥३॥ श्रीमद्भगवाचार्य कृत दित शिवाइसी मशोचर तत्त्वबोध ॥



